Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कक्षा 12

सरयू

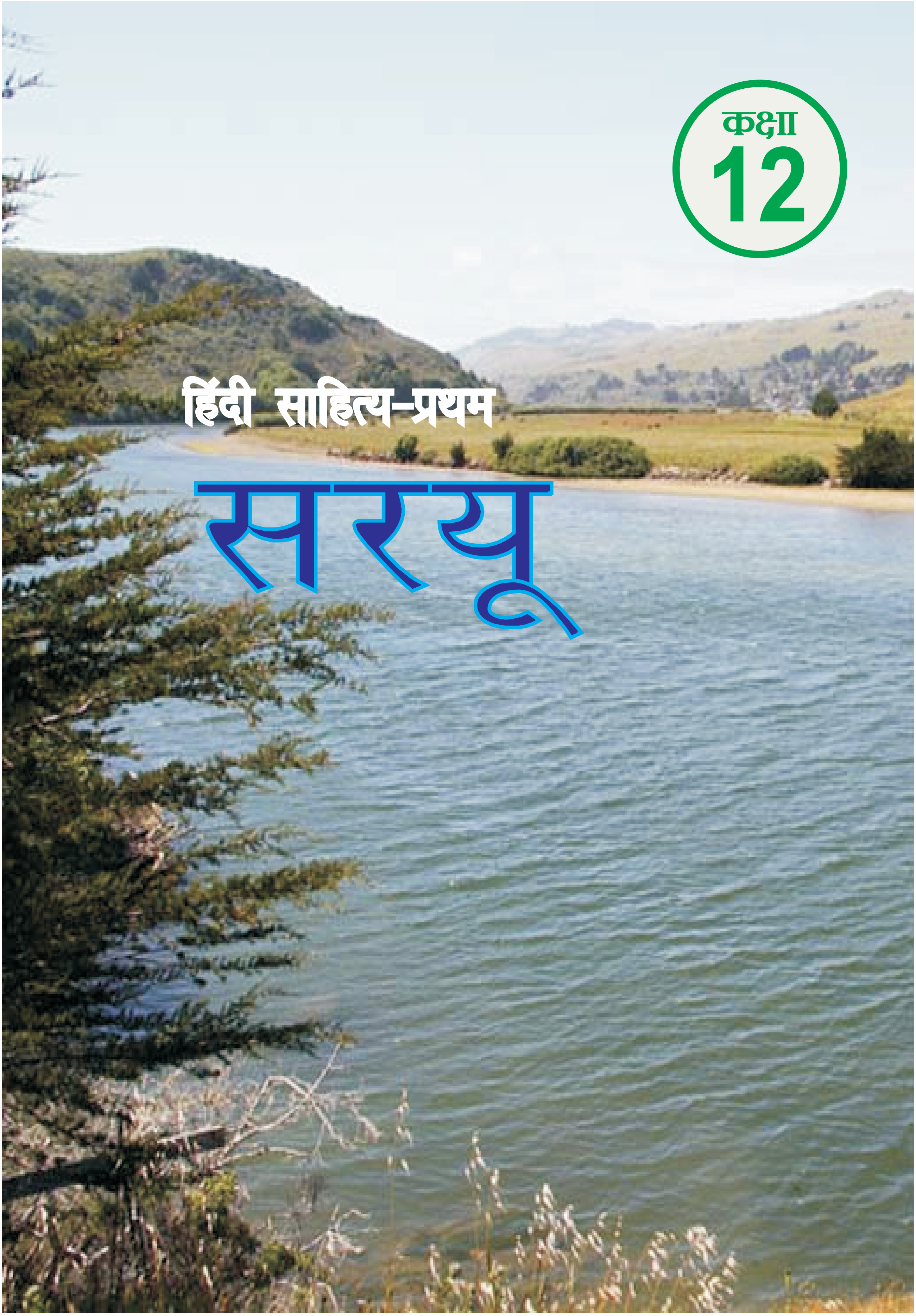

हिंदी साहित्य-प्रथम

सरयू

कक्षा 12

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सरयू

कक्षा 12 हिंदी साहित्य के लिए स्वीकृत पाठ्यपुस्तक

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

पुस्तक : सरयू हिंदी साहित्य

कक्षा – 12

संयोजक :– डॉ० आशीष सिसोदिया, सहायक आचार्य
हिंदी विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

लेखकगण :–

1. डॉ० आदित्य कुमार गुप्त, वरिष्ठ प्राध्यापक, हिंदी
राजकीय महाविद्यालय, कोटा

2. राजकुमार लाटा, वरिष्ठ प्राध्यापक, हिंदी
राजकीय लोहिया महाविद्यालय, चुरू

3. डॉ० रवीन्द्र कुमार उपाध्याय
प्रधानाचार्य, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
बडोलिघाटा, निम्बाहेड़ा, जिला–चित्तौड़गढ़

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ्यक्रम समिति

पुस्तक – सरयू
कक्षा–12 हिंदी साहित्य

संयोजक – डॉ. आशीष सिसोदिया, सहायक आचार्य
हिंदी विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

सदस्य –

1. डॉ. दीपिका विजयवर्गीय, व्याख्याता
   राजकीय स्नातकोत्तर महिला कॉलेज, चौमूं जिला–जयपुर

2. डॉ. नवीन नन्दवाना, सहायक आचार्य हिन्दी विभाग
   मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

3. श्री संजय कुमार शर्मा
   डाइट , हनुमानगढ़

4. श्री रमाशंकर शर्मा, व्याख्याता
   राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, धौलपुर

5. श्री अशोक कुमार शर्मा, वरिष्ठ अध्यापक
   राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, रलावता, अजमेर

6. श्री रमाशंकर शर्मा, वरिष्ठ अध्यापक
   राजकीय वरिष्ठ उपाध्याय संस्कृत विद्यालय, कुण्डगेट, सावर, अजमेर

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

दो शब्द

विद्यार्थी के लिए पाठ्यपुस्तक क्रमबद्ध अध्ययन, पुष्टीकरण, समीक्षा और आगामी अध्ययन का आधार होती है। विषय-वस्तु और शिक्षण-विधि की दृष्टि से विद्यालयी पाठ्यपुस्तक का स्तर अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हो जाता है। पाठ्यपुस्तकों को कभी जड़ या महिमामण्डित करने वाली नहीं बनने दी जानी चाहिए। पाठ्यपुस्तक आज भी शिक्षण-अधिगम-प्रक्रिया का एक अनिवार्य उपकरण बनी हुई है, जिसकी हम उपेक्षा नहीं कर सकते।

पिछले कुछ वर्षों में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के पाठ्यक्रम में राजस्थान की भाषागत एवं सांस्कृतिक स्थितियों के प्रतिनिधित्व का अभाव महसूस किया जा रहा था, इसे दृष्टिगत रखते हुए राज्य सरकार द्वारा कक्षा-9 से 12 के विद्यार्थियों के लिए माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान द्वारा अपना पाठ्यक्रम लागू करने का निर्णय लिया गया है। इसी के अनुरूप बोर्ड द्वारा शिक्षण सत्र 2016-17 से कक्षा-9 व 11 तथा सत्र 2017-18 से कक्षा-10 व 12 की पाठ्यपुस्तकें बोर्ड के निर्धारित पाठ्यक्रम के आधार पर ही तैयार कराई गई हैं। आशा है कि ये पुस्तकें विद्यार्थियों में मौलिक सोच, चिंतन एवं अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करेंगी।

प्रो. बी.एल. चौधरी
अध्यक्ष
माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हिन्दी साहित्य
पाठ्यक्रम–कक्षा–12

समय–3:15 | विषय कोड–21
पूर्णांक–80

अधिगम क्षेत्र	अंक
हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास	16
काव्यांग परिचय	16
पाठ्यपुस्तक –सरयू (प्रथम पुस्तक)	32
पाठ्यपुस्तक –मंदाकिनी (द्वितीय पुस्तक)	16

खण्ड–1

हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास–16 अंक
आधुनिक काल का सामान्य परिचय – (4 प्रश्न) 4X4=16 अंक

खण्ड–2

काव्यांग परिचय – 16 अंक
(क) काव्य गुण, काव्य दोष – (2 प्रश्न) 2X1=2 अंक
(ख) छंद – (गीतिका, हरिगीतिका, छप्पय, कुण्डलिया, द्रुतविलम्बित, वंशस्थ, कवित्त, सवैया)
कोई दो प्रश्न 2X3=6 अंक
(ग) अंलकार – (अन्योक्ति, समासोक्ति, विभावना, विशेषोक्ति, दृष्टांत, प्रतीप, मानवीकरण, व्यतिरेक)
कोई दो प्रश्न 2X4=8 अंक

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

खण्ड–3

पाठ्य पुस्तक–प्रथम पुस्तक (सरयू) – 32 अंक
(क) 1 व्याख्या गद्य से (विकल्प सहित) – 1X3=03 अंक
(ख) 1 व्याख्या पद्य से (विकल्प सहित) – 1X3=03 अंक
(ग) 2 निबंधात्मक प्रश्न (1 प्रश्न गद्य से एवं 1 प्रश्न पद्य भाग से विकल्प सहित) – 2X4=8 अंक
(घ) 4 लघूत्तरात्मक प्रश्न (2 गद्य एवं 2 पद्य भाग से) – 4X3=12 अंक
(ड.) किसी एक कवि या लेखक का परिचय – 1X2=02 अंक
(च) 2 अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न (1 गद्य एवं 1 पद्य भाग से) – 2X2=04 अंक

खण्ड–4

पाठ्य पुस्तक–द्वितीय पुस्तक (मंदाकिनी) – 16 अंक
(क) 1 निबंधात्मक प्रश्न (विकल्प सहित) – 1X4=04 अंक
(ख) 4 लघूत्तरात्मक प्रश्न – 4X3=12 अंक

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

भूमिका

बारहवीं कक्षा के हिंदी साहित्य विषय की पाठ्य–पुस्तक के रूप में संकलित–संपादित इस पाठ्य पुस्तक में संबद्ध कक्षा के विद्यार्थियों के सामाजिक, नैतिक, बौद्धिक स्तर के अनुरूप साहित्य रचनाओं के माध्यम से उनके हिंदी भाषा ज्ञान, अर्थ ग्रहण एवं अभिव्यक्ति क्षमता के उत्कर्ष के सार्थक उद्देश्य को मुख्यतः ध्यान में रखा गया है।

भाषा, ज्ञान एवं अभिव्यक्ति–सामर्थ्य के विकास का सर्वाधिक सशक्त माध्यम है – स्तरीय साहित्य एवं उसकी रचनात्मक भाषिक भंगिमाएँ। इस संग्रह के गद्य खण्ड में विभिन्न कालखंडों के हिंदी के प्रतिनिधि एवं स्तरीय गद्यकारों की सुबोध, रुचिकर एवं प्रेरणास्पद रचनाएँ संकलित हैं। पद्य खंड में हिंदी काव्य के कथ्यगत एवं अनुभूतिपरक परिप्रेक्ष्य में प्रतिनिधि कवियों की सरस, सुबोध, प्रेरक एवं जीवन के विविध पहलुओं की अर्थ गंभीर अभिव्यंजना करने वाली विशिष्ट कविताओं को संगृहीत किया गया है।

विद्यार्थियों के लिए अपेक्षित शिक्षण लक्ष्यों की सार्थक, समग्र एवं वैविध्यपूर्ण पूर्ति हेतु रचनाओं के विकासक्रम, मूल्यपरक कथ्य एवं विविध कथन–भंगिमाओं का इस संकलन में विशेष ध्यान रखा गया है।

आशा है संकलन अपने उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक सिद्ध हो सकेगा। पर्याप्त सजगता एवं सम्पूर्ण प्रयत्नों के उपरान्त भी न्यूनताएँ निश्चित ही रही होंगी। हमारा निवेदन है कि उन न्यूनताओं की ओर इंगित करें जिससे इसमें यथोचित संशोधन परिवर्धन संभव हो सके। इसके लिए हम आपके बहुत आभारी रहेंगे।

अंत में हम उन सभी साहित्यकारों, लेखकों, कवियों के आभारी हैं जिनके पाठ, लेख, कविताएँ आदि इस संकलन में संगृहीत हैं।

लेखक मंडल

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अनुक्रमणिका

पद्य भाग

पाठ	लेखक	पृष्ठ संख्या
1. दोहे, पद	कबीर	1—4
2. मंदोदरी की रावण को सीख	तुलसीदास	5—9
3. दोहे	रहीम	10—13
4. प्रेम—पीर—वर्णन	घनानंद	14—17
5. ऋतु वर्णन	सेनापति	18—20
6. गंगा स्तुति	पद्माकर	21—23
7. यशोधरा(संकलित), भारत की श्रेष्ठता	मैथिली शरण गुप्त	24—27
8. राम की शक्तिपूजा (संकलित)	सूर्यकांत त्रिपाठी निराला	28—32
9. पेशोला की प्रतिध्वनि	जयशंकर प्रसाद	33—36
10. कुरुक्षेत्र (तृतीय सर्ग—संकलित)	रामधारी सिंह दिनकर	37—45
11. भारत माता, धरती कितना देती है	सुमित्रानंदन पंत	46—52
12. किरण धेनुएँ, विडम्बना, एक बोध	नरेश मेहता	53—57
गद्य खंड		
13. गुल्ली—डंडा (कहानी)	प्रेमचंद	58—66
14. मिठाई वाला (कहानी)	भगवती प्रसाद वाजपेयी	67—73
15. भारतीय संस्कृति (निबंध)	बाबू गुलाबराय	74—80
16. शिरीष के फूल (निबंध)	आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी	81—86
17. पाजेब (कहानी)	जैनेन्द्र कुमार	87—101
18. अलोपी (संस्मरण)	महादेवी वर्मा	102—110
19. सेव और देव (कहानी)	स०ही०वा० अज्ञेय	111—119
20. भक्ति आंदोलन और तुलसीदास	राम विलास शर्मा	120—126
21. संस्कारों और शास्त्रों की लड़ाई (व्यंग्य निबंध)	हरिशंकर परसाई	127—131
22. भारत भी महाशक्ति बन सकता है	श्रीधर पराड़कर	132—136

•••

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

1. कबीर

कवि परिचय –

भक्तिकाल की निर्गुण ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि कवि एवं संतकाव्य धारा के प्रवर्तक के रूप में विख्यात कबीर एक महान संत, सच्चे समाज-सुधारक कवि थे। इनका जन्म विक्रम सं. 1455 (कबीर-चरित्रबोध में उल्लिखित अनुसार) अर्थात् 1398 ई. में काशी में हुआ। इनका लालन-पालन नीरू-नीमा नामक जुलाहा दम्पत्ति ने किया। कबीर अशिक्षित थे; परन्तु बहुश्रुत थे। वे ज्ञान और अनुभव से समृद्ध थे। वे स्वामी रामानन्द के शिष्य थे। वे एक युग पुरुष थे, उनकी प्रतिभा बहुमुखी थी।

अपनी अनुभूतियों को सहज एवं प्रभावशाली ढंग से जनमानस के हृदय तक पहुँचाने में सिद्धहस्त कबीर ने अपनी वाणी द्वारा धार्मिक संकीर्णता एवं बाह्याडम्बरों, कुरीतियों आदि का विरोध कर राम-रहीम की एकता के माध्यम से मत-मतान्तरों से ऊपर उठकर मानवता की स्थापना का शंखनाद किया। वे आत्मिक साधना एवं मन की पूजा पर विश्वास करते थे। मध्यकाल के क्रांति पुरुष होने के कारण कबीर ने समाज के भीतरी और बाहरी दोनों पक्षों पर तीखे व्यंग्य किए। रूढ़ियों से मुक्त सामाजिक समरसता की स्थापना का संदेश इनके काव्य में प्रमुख रूप से मिलता है। कबीर का शिल्प सरल, सहजग्राह्य है। उनका प्रतीक-विधान दैनिक जीवन से संबंधित है। भाषा पंचमेल खिचड़ी, सधुक्कड़ी है, जिसमें राजस्थानी, पंजाबी, पूर्वी हिन्दी, ब्रज आदि भाषा के शब्दों का प्रयोग हुआ है। इनकी रचनाएँ 'बीजक' में संकलित हैं। इनका देहावसान सं. 1575 (1518 ई.) को मगहर में हुआ। इस संबंध में एक दोहा प्रचलित है–

संवत् पन्द्रह सौ पिचत्तर, किया मगहर कूँ गौन। माघ सुदी एकादशी रलो पौन में पौन।

पाठ-परिचय –

प्रस्तुत संकलन में साखियों और पदों के माध्यम से कबीरदास ने गुरु महिमा का महत्व बताया है। उनकी दृष्टि में सद्गुरु और परमात्मा में कोई अन्तर नहीं है। गुरु ज्ञान रूपी दीपक शिष्य के हृदय में प्रज्वलित कर संसार-सागर से पार होने का मार्ग सुझाता है। जब भगवान की कृपा होती है तभी सद्गुरु की प्राप्ति होती है। इसलिए मनुष्य को सदैव ईश्वर का चिन्तन करना चाहिए। यह संसार सेंमल के पुष्प की तरह क्षण भंगुर है, इसकी चमक-दमक में नहीं फँसना चाहिए। चंचल मन को संसार के आकर्षण से खींचकर परमात्मा के स्मरण में लगाने से ही कल्याण सम्भव है। यह जीवात्मा परमात्मा से कमलिनी नाल और जल की तरह जुड़ा हुआ है। कबीर के अनुसार जब ज्ञान रूपी आँधी का आगमन होता है तब हृदयगत समस्त विकार-माया, मोह, तृष्णा आदि नष्ट हो जाते हैं और मानव का हृदय प्रभु की प्रेम रूपी बरसात से निर्मल, पवित्र हो जाता है तथा जीवात्मा परमब्रह्म परमेश्वर से मिलने के लिए आतुर होने लगती है। कबीर ने साधना पथ पर चलने के लिए मूर्खों का साथ त्यागने पर भी जोर दिया है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मूल पाठ –

दोहे

1. गुरु गोविन्द तौ एक है, दूजा यहु आकार।
आपा मेट जीवित मरै, तो पावै करतार।।
2. ज्ञान प्रकासा गुरु मिला, सों जिनि बीसरिं जाइ।
जब गोविंद क्रिपा करी, तब गुरु मिलिया आइ।।
3. पीछैं लागा जाइ था, लोक वेद के साथि।
आगै थैं सतगुरु मिल्या, दीपक दीया हाथि।।
4. बूढ़ा था पै ऊबरा, गुरु की लहरि चमंकि।
भेरा देख्या जरजरा,(तब) उतरि पड़े फरंकि।।
5. कबीर चित्त चमंकिया, चहुँ दिस लागी लाइ।
हरि सुमरिन हाथौं घड़ा, बेगे लेहु बुझाइ।।
6. पारब्रह्म के तेज का, कैसा है उनमान।
कहिबे कूँ सोभा नहीं, देख्या ही परमान।।
7. चिंता तौ हरि नाँव की, और न चितवै दास।
जे कछु चितवैं राम बिन, सोइ काल की पास।।
8. नैनां अंतरि आव तू, नैन झाँपि तोहि लेउँ।
ना हौ देखौं और कूँ, ना तुझ देखन देउँ।।
9. बहुत दिनन की जोवती, बाट तुम्हारी राम।
जिव तरसै तुझ मिलन कूँ, मन नाहीं विश्राम।।
10. मूरिष संग न कीजिए, लोहा जल न तिराइ।
कदली सीप भुवंग मुख, एक बूँद तिहूँ भाइ।।
11. यहु ऐसा संसार है, जैसा सेंवल फूल।
दिन दस के व्यौहार कौं, झूठे रंग न भूलि।।
12. माषी गुड़ मैं गड़ि रही, पंष रही लपटाइ ।
ताली पीटै सिरि धुनैं, मीठै बोई माइ।।

पद

(1) काहे री नलिनी तूँ कुम्हलानी।
तेरे ही नालि सरोवर पानी।।
जल में उतपत्ति जल में बास, जल में नलिनी तोर निवास।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ना तलि तपति न उपरि आग, तोर हेत कहु कासनि लागि।।
कहै कबीर जे उदकि समान, ते नंहि मुए हमारे जान।

(2) संतौ भाई आई ग्यान की आँधी रे!
भ्रम की टाटी सबै उड़ाणीं, माया रहै न बाँधी रे।।टेक।।
हितचित्त की दोउ थूँनी गिरानी, मोह बलींडा टूटा।
त्रिस्नां छांनि परी घर ऊपरि, कुबधि का भांडा फूटा।।
जोग जुगति कर संतौ बांधी, निरचू चुवै न पांणीं।
कूड़–कपट काया का निकस्या, हरि की गति जब जांणी ।।
आँधी पीछै जो जल बूठा, प्रेम हरी जन भींनां।
कहै कबीर भांन के प्रगटें, उदित भया तम षीनां।।

शब्दार्थ–

आकार – शरीर, उपाधि / आपा – अहंकार, खुदी / करतार – ईश्वर /प्रकासा – प्रकाशित हुआ / जिनि – नहीं / बीसरि – भूलना / पाछै – पीछे / लोक वेद – लौकिक और वैदिक मान्यताएँ / थैं – से / दीपक – ज्ञान रूपी दीपक / पै – किन्तु / लहरि – कृपा, ज्ञान की तरंग / चमंकि – चमकी प्रकाशित हुई / भेरा – भेला एक तरह की नाव / जरजरा – जीर्ण / फरंकि – अलग होकर, फड़ककर / चमंकिया – चमक गया अर्थात् तप्त हो गया / चहुँ – चारों ओर / लाइ – आग / बेगे – शीघ्र /पारब्रह्म – ईश्वर, परमात्मा / तेज – प्रकाश / उनमान – अनुमान कैसा है / परमान – प्रमाण / कहिवे – कहने / कूँ – के लिए / चिंता – चिन्तन / चितवै – चिन्तन करना / पास – पाश बन्धन / नैनाँ – नेत्र / अंतरि – भीतर / आव – आ / झँपेउँ – बन्द कर लूँ / नाँ – नहीं / हौं – मैं / कूँ – को / जोवती – प्रतीक्षा करती हूँ / बाट – राह, मार्ग / जिव – जी, हृदय, जीव / मनि – मन में / मूरषि–मूर्ख /कदली – केला / भुवंग – सर्प / नलिनी – कमलिनी, जीव (आध्यात्मिक अर्थ) / नालि – कमल नाल जड़, सम्पर्क (आ.अर्थ) / सरोवर – तालाब, आत्मिक चेतना का प्रसार (आ. अर्थ) उतपति – उत्पत्ति / हेतु – प्रेम, आसक्ति / उदकि – जल / कासनि – कहाँ से, किससे / टाटी – टटिया या पर्दा / दुचिते – चित्त की दो अवस्थाएँ, विषयासक्ति और बाह्याचार / थूनि – खम्भा, स्तम्भ / बलींडा – छाजन में बीच का बेड़ा या बल्ली / छानि – छप्पर / धर – धरा, पृथ्वी / दुरमति – कुबुद्धि / भांडा – बर्तन / भीना – भीग गया, रससिक्त / भान – सूर्य / तम – अंधकार, अज्ञान / षीनां – नष्ट।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. कबीर के अनुसार सद्गुरु ने हाथ में क्या दिया ?
   (क) ज्ञान का दीपक (ख) वेद शास्त्र का दीपक
   (ग) लोक मान्यताओं का दीपक (घ) मिट्टी का दीपक ( )
2. कबीर के अनुसार सत्गुरु कैसे प्राप्त होता है ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(क) ज्ञान प्रकाशित होने पर (ख) भगवान की कृपा होने पर
(ग) शास्त्रों का अध्ययन करने पर (घ) तीर्थ भ्रमण करने पर ( )

3. कबीर दास ने किस प्रकार की आँधी आने की बात कही है ?
(क) धूल भरी आँधी (ख) ज्ञान की आँधी
(ग) तेज आँधी पानी (घ) कूड़ा-कर्कट उड़ाने वाली आँधी( )

4. कबीर भक्ति काल की किस भक्तिधारा के प्रतिनिधि भक्त कवि माने जाते हैं –
(क) राम-भक्ति धारा (ख) कृष्ण भक्ति धारा
(ग) ज्ञानश्रयी निर्गुण धारा (घ) प्रेमाश्रयी (सूफी) ( )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. कबीर ने किसका चिन्तन करने को कहा है ?
2. कबीर ने इस संसार को किसके फूल के समान बताया है ?
3. 'संतौ आई ज्ञान की आँधी रे!' में कौनसा अलंकार है ?लिखिए।
4. कवि नेत्रों के भीतर किसके आने पर नेत्र बन्द करना चाहता है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. कबीर के अनुसार मूर्ख का साथ क्यों नहीं करना चाहिए ?
2. जीवात्मा किससे मिलने के लिए रात–दिन तड़फता है ?
3. कबीर की दृष्टि में कौन से लोग कभी नहीं मरते ?

निबंधात्मक प्रश्न–

1. पठित दोहों के आधार पर गुरु के महत्त्व का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
2. 'जल में उतपति जल में बास, जल में नलिनी तोर निवास' का मूलभाव लिखिए।
3. 'माषी गुड़ में गड़ि रही, पंख रही लपटाय। ताली पीटै सिरि धुनै मीठे बोई माय'।।
दोहे में निहित काव्य–सौन्दर्य उद्घाटित कीजिए।
4. "पारब्रह्म के तेज का कैसा है उनमान।" दोहे में कबीर ने पारब्रह्म के तेज के सम्बन्ध में क्या कहा है ?
5. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –
(क) 'गुरु गोविन्द .... पावै करतार'।।
(ख) 'बूढ़ा था पै .... पडे फरंकि'।।
(ग) 'संतौ भाई .... कुबधि का भांडा फूटा'।।
(घ) 'ना तल तपति .... हमारे जान'।।

•••

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2. गोस्वामी तुलसीदास

कवि परिचय –

हिंदी साहित्य के श्रेष्ठ कवि गोस्वामी तुलसीदास का जन्म विक्रम संवत् 1589 में उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले में स्थित गाँव राजापुर में हुआ था, ऐसा माना जाता है। तुलसी के पिता का नाम आत्माराम दुबे और माता का नाम हुलसी था। कहते हैं कि अशुभ एवं अभुक्त नक्षत्र में पैदा हुए तुलसी को उनके माता-पिता ने अनिष्ट की आशंका से त्याग दिया था। बाद में स्वामी नरहरिदास ने तुलसी को दीक्षा और रामभक्ति के संस्कार दिए। तुलसी का विवाह विदुषी महिला रत्नावली से हुआ, जिसकी मधुर झिड़की से तुलसी वैराग्य को प्राप्त हुए और रामभक्ति में तीर्थ स्थानों का भ्रमण करते हुए संवत् 1680 में काशी के गंगाघाट पर श्रावण शुक्ल सप्तमी को तुलसी का निधन हुआ।

विद्वानों ने गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित छोटे-बड़े बारह ग्रंथों को प्रामाणिक माना है – 'दोहावली', 'कवितावली', 'गीतावली', 'रामचरितमानस', 'रामाज्ञा प्रश्नावली', और 'विनयपत्रिका' ये बड़े ग्रंथ हैं तथा 'रामललानहछू', 'पार्वतीमंगल', 'जानकीमंगल', 'बरवै रामायण', 'वैराग्य संदीपनी' और 'श्रीकृष्णगीतावली' छोटे ग्रंथ हैं। इन सभी रचनाओं में भाव-वैविध्य गोस्वामी जी की सबसे बड़ी विशेषता है। समन्वयवाद तुलसी की भक्ति भावना का सबसे बड़ा गुण है। उनका सारा काव्य समन्वय की विराट् चेष्टा है। उसमें केवल लोक और शास्त्र का ही समन्वय नहीं है - गार्हस्थ्य और वैराग्य का, भक्ति और ज्ञान का, भाषा और संस्कृति का, निर्गुण और सगुण का, पुराण और काव्य का, भावावेग और अनासक्त चिंतन का समन्वय 'रामचरितमानस' के आदि से अंत तक दो छोरों पर जाने वाली पराकोटियों को मिलाने का प्रयत्न है।

पाठ परिचय –

'श्रीरामचरितमानस' को भारतीय जीवन-मूल्यों का समाज-शास्त्र कहा जाता है, जिसमें पारिवारिक प्रेम और मर्यादा के साथ-साथ राष्ट्र-समाज के प्रति मानवीय दायित्वों का वर्णन है।

प्रस्तुत कविता 'श्रीरामचरितमानस' का अंश है, जिसमें मंदोदरी द्वारा समय–समय पर अपने पति रावण को दी गई सीख का वर्णन है। मंदोदरी ने रावण को कई बार समझाया कि राम साक्षात् परमब्रह्म है तथा मर्यादा की पुनःप्रतिष्ठा के लिए धरती पर अवतरित हुए हैं। सीता अपहरण द्वारा श्रीराम का अकारण विरोध करने से निशिचर वंश का नाश होगा, अतः सीता को पुनः श्रीराम को लौटा देना चाहिए। मयतनया मंदोदरी राजमहिषी होकर भी नीति विषारद, बहुश्रुता, दूरदर्शी, विवेकशील, वेद–विद्या विदुषी और क्रांतिकारी पतिव्रता है जो अपने पति के कदाचरण, हिंसा और युद्धोन्माद का समय-समय पर विरोध करती है।

रूपवती साम्राज्ञी और अप्रतिम सौंदर्य की प्रतीक मंदोदरी भक्ति की प्रखर चेतना है; जो मोहमाया के मध्य भी परम सत्ता के वैशिष्ट्य का निरंतर निरूपण करती रहती है। तुलसी की दृष्टि में स्त्रियाँ समाज में निरीह, अबला और पददलित नहीं हैं, अपितु वह रावण और बालि जैसे भटके हुए पुरुषों के लिए प्रकाश स्तंभ

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हैं।

मंदोदरी जैसी पतिव्रता, सत्यनिष्ठ और सुशील नारियाँ हर देश, काल, परिस्थिति और समाज में विद्‌यमान रही हैं, किंतु पुरुष अपने अहंकार और पौरुषत्व के दंभ में एक स्त्री और अपनी पत्नी के प्रबोधन को ही तिरस्कृत कर देता है और अंत में रावण जैसा विराट पुरुष भी विनाश को प्राप्त होता है।

मंदोदरी की रावण को सीख

सुंदरकाण्ड

कंत करश हरि सन परिहरहू। मोर कहा अति हित हियँ धरहू।।
समुझत जासु दूत कइ करनी। स्रवहिं गर्भ रजनीचर घरनी।।
तासु नारि निज सचिव बोलाई। पठवहु कंत जो चहहु भलाई।।
तव कुल कमल बिपिन दुखदाई। सीता सीत निसा सम आई।।
सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हें। हित न तुम्हार संभु अज कीन्हें।।
दोहा– राम बान अहि गन सरिस निकर निसाचर भेक।
जब लगि ग्रसत न तब लगि जतनु करहु तजि टेक।।

लंका काण्ड

मंदोदरीं सुन्यो प्रभु आयो। कौतुकहीं पाथोधि बँधायो।।
कर गहि पतिहि भवन निज आनी। बोली परम मनोहर बानी।।
चरन नाइ सिरु अंचलु रोपा। सुनहु बचन पिय परिहरि कोपा।।
नाथ बयरु कीजे ताही सों। बुधि बल सकिअ जीति जाही सों।।
तुम्हहिं रघुपति अंतर कैसा। खलु खद्योत दिनकरहि जैसा।।
अतिबल मधु कैटभ जेहिं मारे। महाबीर दितिसुत संघारे।।
जेहिं बलि बाँधि सहसभुज मारा। सोइ अवतरेउ हरन महि भारा।।
तासु बिरोध न कीजिअ नाथा। काल करम जिव जाकें हाथा।।
दोहा – रामहि सौपि जानकी नाइ कमल पद माथ।
सुत कहुँ राज समर्पि बन, जाइ भजिअ रघुनाथ।।
नाथ दीनदयाल रघुराई। बाघउ सनमुख गएँ न खाई।।
चाहिअ करन सो सब करि बीते। तुम्ह सुर असुर चराचर जीते।।
संत कहहि असि नीति दसानन। चौथेंपन जाइहि नृप कानन।।
तासु भजन कीजिअ तहँ भर्ता। जो कर्ता पालक संहर्ता।।
सोइ रघुबीर प्रनत अनुरागी। भजहु नाथ ममता सब त्यागी।।
मुनिबर जतनु करहिं जेहि लागी। भूप राजु तजि होहिं बिरागी।।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सोइ कोसलाधीस रघुराया। आयउ करन तोहि पर दाया।।
जौं पिय मानहु मोर सिखावन। सुजसु होइ तिहुँ पुर अति पावन।।
दोहा – अस कहि नयन नीर भरि गहि पद कंपित गात।
नाथ भजहु रघुनाथहि अचल होइ अहिवात।।

•••

सजल नयन कह जुग कर जोरी। सुनहु प्रानपति बिनती मोरी।।
कंतन राम बिरोध परिहरहू। जानि मनुज जनि हठ मन धरहू।।
दोहा – बिस्वरूप रघुबंस मनि करहु बचन बिस्वासु।
लोक कल्पना बेद कर अंग अंग प्रति जासु।।
पद पाताल सीस अज धामा। अपर लोक अँग अँग बिश्रामा।।
भृकुटि बिलास भयंकर काला। नयन दिवाकर कच घन माला।।
जासु घ्रान अस्विनीकुमारा। निसि अरु दिवस निमेश अपारा।।
श्रवन दिसा दस बेद बखानी। मारुत स्वास निगम निज बानी।।
अधर लोभ जम दसन कराला। माया हास बाहु दिगपाला।।
आनन अनल अंबुपति जीहा। उतपति पालन प्रलय समीहा।।
रोम राजि अष्टादस भारा। अस्थि सैल सरिता नस जारा।।
उदर उदधि अधगो जातना। जगमय प्रभु का बहु कलपना।।
दोहा – अहंकार सिव बुद्धि अज मन ससि चित्त महान।
मनुज बास सचराचर रूप राम भगवान।।
अस बिचारि सुनु प्रानपति प्रभु सन बयरु बिहाइ।
प्रीति करहु रघुबीर पद मम अहिवात न जाइ।।

•••

साँझ जानि दसकंधर भवन गयउ बिलखाइ।
मंदोदरीं रावनहि बहुरि कहा समुझाइ।।
कंत समुझि मन तजहु कुमति ही। सोह न समर तुम्हहिं रघुपति ही।।
रामानुज लघु रेख खचाई। सोउ नहिं नाघेहु असि मनुसाई।।
प्रिय तुम्ह ताहि जितब संग्रामा। जाके दूत केर यह कामा।।
कौतुक सिंधु नाघि तव लंका। आयउ कपि केहरी असंका।।
रखवारे हति बिपिन उजारा। देखत तोहि अच्छ तेहिं मारा।।
जारि सकल पुर कीन्हेसि छारा। कहाँ रहा बल गर्ब तुम्हारा।।
अब पति मृशा गाल जनि मारहु। मोर कहा कछु हृदयँ बिचारहु।।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पति रघुपतिहि नृपति जनि मानहु। अग जग नाथ अतुल बल जानहु।।
बान प्रताप जान मारीचा। तासु कहा नहिं मानेहि नीचा।।
जनक सभाँ अगनित भूपाला। रहे तुम्हउ बल अतुल बिसाला।।
भंजि धनुश जानकी बिआही। तब संग्राम जितेहु किन ताही।।
सुरपति सुत जानइ बल थोरा। राखा जिअत आँखि गहि फोरा।।
सूपनखा कै गति तुम्ह देखी। तदपि ह्रदयँ नहिं लाज बिसेषी।।
दोहा – बधि बिराध खर दूषनहिं लीलाँ हत्यो कबंध।
बालि एक सर मारयो तेहि जानहु दसकंध।।
जेहिं जलनाथ बँधायउ हेला। उतरे प्रभु दल सहित सुबेला।
कारुनीक दिनकर कुल केतू। दूत पठायउ तव हित हेतू।।
सभा माझ जेहिं तव बल मथा। करि बरूथ महुँ मृगपति जथा।।
अंगद हनुमत अनुचर जाके। रन बाँकुरे बीर अति बाँके।।
तेहि कहँ पिय पुनि पुनि नर कहहू। मुधा मान ममता मद बहहू।।
अहह कंत कृत राम बिरोधा। काल बिबस मन उपज न बोधा।।
काल दंड गहि काहु न मारा। हरइ धर्म बल बुद्धि बिचारा।।
निकट काल जेहि आवत साईं। तेहि भ्रम होइ तुम्हारिहि नाईं।।
दोहा – दुइ सुत मरे दहेउ पुर अजहुँ पूर पिय देहु।
कृपासिंधु रघुनाथ भजि नाथ बिमल जसु लेहु।।

•••

तव बल नाथ डोल नित धरनी। तेज हीन पावक ससि तरनी।।
सेश कमठ सहि सकहिं न भारा। सो तनु भूमि परेउ भरि छारा।।
बरुन कुबेर सुरेस समीरा। रन सन्मुख धरि काहुँ न धीरा।।
भुजबल जितेहु काल जम साईं। आजु परेहु अनाथ की नाईं।।
जगत बिदित तुम्हारि प्रभुताई। सुत परिजन बल बरनि न जाई।।
राम बिमुख उस हाल तुम्हारा। रहा न कोउ कुल रोवनिहारा।।
तव बस बिधि प्रपंच सब नाथा। सभय दिसिप नित नावहिं माथा।।
अब तव सिर भुज जंबुक खाहीं। राम बिमुख यह अनुचित नाहीं।।
काल बिबस पति कहा न माना। अब जग नाथु मनुज करि जाना।।
दोहा – जान्यो मनुज करि दनुज कानन दहन पावक हरि स्वयं।
जेहि नमत सिव ब्रह्मादि सुर पिय भजेहु नहिं करुनामयं।।
आजन्म ते परद्रोह रत पापौघमय तव तनु अयं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तुम्हहू दियो निज धाम राम नमामि ब्रह्म निरामयं।।
दोहा – अहह नाथ रघुनाथ सम कृपासिंधु नहिं आन।
जोगि बृंद दुर्लभ गति तोहि दीन्हि भगवान।।

शब्दार्थ –

कर – हाथ/ जोरि – जोड़कर/ कंत – प्रियतम, स्वामी/ परिहरहू – छोड़ना/ धरहू – धारण करना/ स्रवहिं – गिर जाना/ बिपिन – वन/ अज – ब्रह्मा/ पाथोधि – समुद्र/ बयरु – बैर–दुश्मनी/ खद्योत – जुगनूं/ कानन – वन/ अहिवात – सुहाग/ जोधा – योद्धा/ कच – केश, बाल/ घ्रान – नासिका/ निमेश – पलक/ रामानुज – लक्ष्मण/ जनि – मत/ रोवनिहारा – रोने वाला।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. 'श्रीरामचरितमानस' के रचयिता कौन हैं ?
   (क) कबीरदास (ख) तुलसीदास
   (ग) रैदास (घ) सूरदास ( )
2. मन्दोदरी किसकी पत्नी थी ?
   (क) रावण (ख) कुम्भकर्ण
   (ग) मेघनाद (घ) राम ( )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. रावण को लंकेश क्यों कहते हैं ?
2. मंदोदरी ने रावण को किससे बैर न लेने की सलाह दी ?
3. रावण किसका अपहरण करके लाया था ?
4. कवि ने श्रीराम और रावण में किस प्रकार का अंतर बताया है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. रावण ने सीताहरण क्यों किया ?
2. मंदोदरी राम को क्या समझती थी ?
3. मंदोदरी ने रावण से क्या कहा ?
4. निम्नलिखित पंक्ति का भावार्थ लिखिए –
   ''निकट काल जेहि आवत साईं। तेहि भ्रम होइ तुम्हारिहि नाईं।।''

निबंधात्मक प्रश्न –

1. मंदोदरी द्वारा रावण को दी गई शिक्षा का विस्तार से वर्णन कीजिए।
2. रावण और मंदोदरी के चरित्र का तुलनात्मक विवेचन कीजिए।
3. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –
   (क) ''कंत समुझि मन तजहु ....कहाँ रहा बल गर्ब तुम्हारा।।''
   (ख) तुम्हहि रघुपति अंतर कैसा।.........काल करम जिव जाकें हाथा।।

•••

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3. रहीम

कवि परिचय —

हिन्दी साहित्य की समृद्धि में मुस्लिम कवियों का विशेष योगदान रहा है। इन कवियों में रहीम नाम से विख्यात 'अब्दुल रहीम खानखाना' का प्रमुख स्थान है। इनका जन्म सन् 1556 ई० में सम्राट् अकबर के संरक्षक एवं परम विश्वासपात्र बैरम खाँ के घर लाहौर में हुआ। माता का नाम सुल्ताना बेगम था। रहीम को वीरता, राजनीति, राज्य संचालन, दान आदि गुण अपने माता-पिता से विरासत में प्राप्त हुए थे। सन् 1562 ई० में बैरम खान की मृत्यु के पश्चात् रहीम की शिक्षा-दीक्षा का प्रबंध अकबर ने स्वयं किया। रहीम तुर्की, अरबी, फारसी, उर्दू, हिंदी, संस्कृत आदि अनेक भाषाओं के जानकार थे। अकबर इनकी बुद्धिमत्ता, वीरता आदि से इतना प्रभावित हुआ कि उसने शहजादों को दी जाने वाली उपाधि मिर्जा खान से सम्मानित किया। रहीम का देहावसान सन् 1626 ई० में हुआ।

रहीम बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उनके व्यक्तित्व में विविध गुणों का विलक्षण योग था। वे मुसलमान होकर भी कृष्ण भक्त थे। वे एक ही साथ सेनापति, प्रशासक, आश्रयदाता, दानवीर, बहुभाषाविद्, कला पारखी और राजनीतिज्ञ तथा प्रत्युत्पन्नमति थे। उनके 'दोहे' ब्रजभाषा में, 'बरवै' अवधी में तथा 'मदनाष्टक' खड़ी बोली में हैं। रहीम की रचनाएँ जीवन रस से परिपूर्ण हैं। मानसिक औदार्य, सांस्कृतिक विशालता और धार्मिक सहिष्णुता, मानवीयता इनकी रचनाओं के केन्द्र में है। इन्होंने ब्रज, अवधी, खड़ी बोली की सहज सरल एवं बोधगम्य भाषा का प्रयोग किया है। इनके काव्य में नीति, भक्ति, प्रेम और श्रृंगार का सुन्दर समावेश है। शैली सरल, सुबोध और सहज ग्राह्य है। रहीम की रचनाओं में 'रहीम दोहावली' या 'सतसई' 'बरवै नायिका भेद', 'मदनाष्टक', 'रासपंचाध्यायी', श्रृंगारसोरठा', 'खेटकौतुक', 'नगर शोभा', संस्कृत काव्य, फुटकर काव्य विशेष उल्लेखनीय हैं।

पाठ परिचय —

प्रस्तुत संकलित दोहों में रहीम ने अपने जीवनानुभवों को सहजरूप में अभिव्यक्ति दी है। वे मानते हैं मनुष्य को अपना स्वाभिमान बराबर बनाए रखना चाहिए। संगति जीवन को पर्याप्त प्रभावित करती है। मनुष्य जैसै आचरण वाले लोगों के साथ रहता है, वैसा ही बन जाता है; परंतु जो उत्तम प्रकृति के होते हैं, उन पर बुरे लोगों का प्रभाव वैसे ही नहीं पड़ता है; जैसे चंदन के वृक्ष पर साँप लिपटे रहने पर भी चंदन अपनी सुगंधि नहीं छोड़ता है। रहीम ने यह भी बताया कि विपरीत स्वभाव के लोग एक साथ परस्पर सद्भाव से नहीं रह सकते। रहीम इस बात पर जोर देते हैं कि मनुष्य को प्रेम भाव बनाए रखना चाहिए तथा पेड़-पौधों की तरह दानशील प्रवृत्ति रखनी चाहिए। मनुष्य को दुष्ट प्रकृति के लोगों से मित्रता और शत्रुता दोनों प्रकार के संबंध नहीं रखने चाहिए। वस्तुतः रहीम के दोहे जीवन की पाठशाला हैं; जिनमें धर्म, नीति, व्यवहार, राजनीति आदि जीवनोपयोगी विषय अभिव्यक्त हुए हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मूल पाठ –

दोहे

अच्युत चरन-तरंगिनी, सिव-सिर-मालति-माल।
हरि न बनाओ सुरसुरी! कीजौ इन्दव-भाल।।1।।
अमी पियावत मान बिनु, रहिमन मोहि न सुहाय।
मान सहित मरिबो भलो, जो बिस देय बुलाय।।2।।
कदली सीप भुजंग-मुख, स्वाति एक गुन तीन।
जैसी संगति बैठिए, तैसोई फल दीन।।3।।
कहि रहीम सम्पति सगे, बनत बहुत बहु रीति।
विपति-कसौटी जे कसे, ते ही साँचे मीत।।4
काज परै कछु और है, काज सरै कछु और।
रहिमन भंवरी के भए, नदी सिरावत मौर।।5
खैर-खून-खाँसी खुसी, बैर-प्रीति मद–पान।
रहिमन दाबे ना दबैं, जानत सकल जहान।।6
जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चन्दन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग।।7
जो रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय।
बारे उजियारो करे, बढ़े अँधेरो होय।।8।।
रहिमन ओछे नरन सों, बैर भलो ना प्रीत।
काटे चाटे स्वान के, दोऊ भाँति बिपरीत।।9
रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।
टूटे से फिर ना जुड़े, जुड़े गाँठि परि जाय।।10
रहिमन पानी राखिए, बिनु पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती मानुष चून।।11
प्रीतम छवि नैंनन बसी, पर छबि कहाँ समाय।
भरी सराय रहीम लखि, पथिक आप फिर जाय।।12
यों रहीम जस होत है, उपकारी के संग।
बाँटन वारे के लगै, ज्यों मेंहदी को रंग।।13
बिगरी बात बनै नहीं, लाख करै किन कोय।
रहिमन फाटे दूध को, मथे न माखन होय।।14

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मथत-मथत माखन रहै, दही मही बिलगाय।
रहिमन सोई मीत है, भीर परे ठहराय।।15।।

•••

शब्दार्थ –

अच्युत–भगवान विष्णु/ चरन–तरंगिनी – चरणों से निकलने वाली नदी/ सिव–सिर–मालति–माल – शिवजी के सिर पर मालती की माला के समान सुशोभित होने वाली/ सुरसरी – गंगा/ इन्दव–भाल – चन्द्रमा है मस्तक पर जिसके, अर्थात् शिवजी/ अमी – अमृत/ न सुहाय – अच्छा नहीं लगता है/ बिस – विष/ कदली – केला/ भुजंग – साँप/ स्वाति – स्वाति नक्षत्र में बादलों से गिरने वाली बूँद/ सगे – निजी सम्बन्धी/ विपत्ति कसौटी – विपत्ति रूपी कसौटी पर/ कसे – खरा उतरना/ काज परै – काम पड़ जाने पर/ काज सरै – काम निकल जाने पर/ भंवरी – विवाह के फेरे/ सिरावत – बहा दिया जाता है/ मौर – मौड़/ खैर – कुशलता/ मद–पान – शराब को पीना/ दाबे – छिपाने से/ सकल – सम्पूर्ण/ जहान – संसार/ प्रकृति – स्वभाव/ कुसंग – बुरी संगति। भुजंग – साँप/ गति – दशा/ दीप – दीपक/ बारे – जलाने पर, / उजियारो करे – प्रकाश करता है,सुनहरी आशाओं को जन्म देता है/ बढ़ै – बुझने पर, बड़ा होने पर/ अंधेरो – अन्धकार, गहन निराशा/ओछे – दुष्ट/ स्वान – कुत्ता/ विपरीत – कष्टकारक/ चटकाय – चटकाकर/ गाँठि – मनोमालिन्य/ पानी – चमक, प्रतिष्ठा, जल/ सून – शून्य, व्यर्थ/ न ऊबरै – किसी काम के न रहना/ चून – आटा/पर–उपकारी – परोपकार करने वाले/ बाँटन वारे – पीसने वाले/ मही – मठा/ बिलगाय – अलग हो जाता है/ मीत – मित्र/ भीर परे – संकट पड़ने पर/ ठहराय – ठहरता है, सहायक होता है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. अकबर ने प्रभावित होकर रहीम को कौन–सी उपाधि दी थी ?
   (क) सूबेदार (ख) मीर
   (ग) खान खाना (घ)मिर्जा खान ( )
2. रहीम ने किस धागे को चटकाकर न तोड़ने की बात कही है ?
   (क) प्रेम का धागा (ख) सूत का धागा
   (ग) रेशम का धागा (घ) रिश्तों का धागा ( )
3. रहीम ने किसकी भक्ति में पदों की रचना की ?
   (क) भगवान शिव (ख) श्रीकृष्ण
   (ग) माता दुर्गा (घ) श्रीराम ( )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. विपत्ति–कसौटी में कौन-सा अलंकार प्रयुक्त हुआ है ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2. 'अच्युत- चरन तरंगिनी' में अच्युत किसे कहा है ?
3. रहीम ने किन लोगों को धन्य कहा है ?
4. 'रहिमन भंवरी के भए' में भंवरी का क्या अर्थ है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. 'काज परै कुछ और है, काज सरै कछु और' का आशय लिखिए।
2. रहीम सच्चा मित्र किसे मानते हैं ?
3. रहीम ने दीपक तथा कपूत की समता का वर्णन क्यों किया है ?
4. 'रहिमन पानी राखिए'में पानी में कौन-सा अलंकार प्रयुक्त हुआ है ?

निबन्धात्मक प्रश्न –

1. रहीम के काव्य की भाषागत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।
2. 'कदली, सीप, भुजंग, मुख, स्वाति एक गुन तीन' को विस्तारपूर्वक समझाइए।
3. रहीम के व्यक्तित्व और कृतित्व पर संक्षेप में विचार प्रस्तुत कीजिए।
4. रहीम दुष्ट लोगों से मित्रता और शत्रुता क्यों नहीं रखना चाहते हैं ?स्पष्ट कीजिए।
5. पाठ में आए निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –
   (क) 'अमी पियावत..विष दे बुलाय'।
   (ख) 'खैर-खून–खाँसी...सकल जहान'।
   (ग) 'प्रीतम छवि..फिर जाय'।
   (घ) 'जो रहीम उत्तम प्रकृति...रहत भुजंग'।

•••

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

4. घनानंद

कवि परिचय –

घनानंद रीतिकाल की रीतिमुक्त स्वच्छंद काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं। इनका जीवन और काव्य दोनों अभिन्न हैं। इनका जन्म सन् 1746 में हुआ। इनका संबंध राजदरबार से था। ये मुहम्मदशाह 'रंगीले' के दरबार में प्रतिष्ठित मीर मुंशी पद पर थे। ये कवि तो थे ही , साथ ही साथ गायन विद्या में भी निपुण थे। ये 'रंगीले' के कृपा पात्र थे। दरबार में सुजान नाम की एक वेश्या भी थी, जिससे घनानंद प्रेम करते थे। सभी दरबारी घनानंद से ईर्ष्या करते थे। एक दिन बादशाह ने घनानंद से गाने के लिए कहा। घनानंद ने असमर्थता प्रकट की, तब दरबारियों ने कहा कि सुजानबाई को बुलाया जाए तब घनानंद गाएँगे। घनानंद ने गायन प्रस्तुत किया; किंतु सुजानबाई की ओर उन्मुख होकर। गायन से बादशाह मंत्रमुग्ध हो गए किंतु अपना अपमान समझकर उन्होंने घनानंद को देश-निकाला दे दिया। घनानंद ने सुजान से साथ चलने के लिए कहा किंतु सुजान ने मना कर दिया। इस घटना से व्यथित होकर घनानंद वृंदावन चले गए और निम्बार्क संप्रदाय में दीक्षित हो गए। कहा जाता है कि अंत में नादिरशाह के आक्रमण के समय ये मथुरा में मारे गए थे, परंतु बाद के शोधों से यह सिद्ध हुआ कि अहमदशाह के द्वितीय आक्रमण के समय ये मथुरा में मारे गए थे।

रायकृष्णदास ने अपनी ग्रंथावली में लिखा है कि ''घनानंद का महाराज नागरीदास से निकटतम संबंध था। किंवदंती है कि घनानंद जयपुर से मथुरा आ गए और वहीं उन्होंने कत्लेआम देखा और कत्लेआम करने वालों से कहा कि मुझे तलवार के घाव बहुत थोड़े-थोड़े बहुत देर तक दो। इनको ज्यों-ज्यों तलवार के घाव लगाए गए त्यों-त्यों वह ब्रजरज में लौटते रहे। ऐसे देह त्याग किया।''

घनानंद की रचनाओं में - 'सुजानसागर', 'विरह लीला', 'कोक सार', 'रसकेलि वल्ली', 'कृपाकंद निबंध', 'घनआनन्द कवित्त', 'सुजान हित', 'सुजान हित प्रबंध', 'वियोग बेलि', 'इश्कलता', 'जमुना जस', 'आनन्दघन जू की पदावली', 'प्रीति पावस' एवं 'सुजान विनोद' प्रसिद्ध हैं।

घनानंद प्रेम की पीर के कवि थे। इनके काव्य में वियोग श्रृंगार की ही प्रधानता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने लिखा है कि ''प्रेम मार्ग का ऐसा प्रवीण और धीर पथिक तथा जवाँदानी का ऐसा दावा रखने वाला ब्रज भाषा का दूसरा कवि नहीं हुआ।'' भाषा पर घनानंद का पूरा अधिकार था। ब्रजभाषा की लाक्षणिकता और व्यंजकता की शक्ति को घनानंद में देखा जा सकता है। ब्रजभाषा का शुद्ध मानक और व्यंजक रूप जैसा इनकी कविता में मिलता है, वैसा अन्यत्र कहीं नहीं है।

पाठ परिचय –

प्रस्तुत पाठ में घनानंद के पाँच छंद संकलित हैं। इन पदों में इनकी पीड़ा की अभिव्यक्ति हुई है। विरह की स्थिति अत्यंत पीड़ाकारक होती है और जब प्रिय के दर्शन किसी कारण से दुर्लभ हो जाते हैं, तो स्थिति और भी कारुणिक हो उठती है। प्रेयसी सहानुभूति भी नहीं दिखाती और प्रेमी तड़पता रहता है। प्रेमी प्रेयसी को उपालंभ देकर सचेत भी करता है कि जो दूसरों को कष्ट देता है वह स्वयं भी कष्ट पाता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रेयसी प्रेमी को दर्शन नहीं देती, किंतु प्रेमी इस आशा से कि कभी तो उसका दिल पसीजेगा, उसकी निष्ठुरता को भी स्वीकार करता है। प्रेम का मार्ग सरल नहीं है। वह समर्पण चाहता है। मन ले लेना और देना छटाँक भर भी नहीं, यह तो निरा स्वार्थ है।

प्रेम–पीर–वर्णन

भोर तैं साँझ लौं कानन-ओर निहारति बावरी नैकु न हारति।
साँझ तै भोर लौं तारनि ताकिबो तारनि सों इकतार न टारति।।
जौ कहूँ भावतो दीठि परै घनआनन्द आँसुनि औसर गारति।
मोहन-सोंहन जोहन की लगियै रहै आँखिन के उर आरति।।1।।

गरल गुमान की गरावनि दसा को पान,
करि करि, द्यौस-रैनि प्रान घट घोटिबो।
हेत-खेत-धूरि चूरि-चूरि साँस पाँव राखि,
विष-समुदेग-बान आगें उर ओटिबो।
जान प्यारे जौ न मन आनैं तौ आनंदघन,
भूलि तू न सुमिरि परेखै चख चोटिबो।
तिन्हैं ये सिराति छाती तोहि वै लगति ताती,
तेरे बाँटें आयौ है अँगारनि पै लोटिबो।।2।।

भए अति निठुर, मिटाय पहिचानि डारी,
याही दुख हमैं जक लागी हाय हाय है।
तुम तौ निपट निरदई, गई भूलि सुधि,
हमैं सूल–सेलनि सो क्यौं हूँ न भुलाय है।
मीठे-मीठे बोल बोलि, ठगी पहिलें तौ तब,
अब जिय जारत, कहौ धौं कौन न्याय है।
सुनी है कै नाहीं, यह प्रगट कहावति जू,
काहू कलपाय है, सु कैसे कल पाय है।।3।।

मीत सुजान अनीत करौ जिन, हा हा न हूजियै मोहि अमोही।
दीठि कौं और कहूँ नहिं, ठौर, फिरी दृग रावरै रूप की दोही।।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

एक विसास की टेक गहें लगि, आस रहे बसि प्रान-बटोही।
हौ घनआनंद जीवन मूल दई! कित प्यासनि मारत मोही।।4।।

अति सूधो सनेह को मारग है, जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं।
तहाँ साँचे चलैं तजि आपनपौ, झिझकैं कपटी जे निसाँक नहीं।।
घनआनंद प्यारे सुजान सुनौ, यहाँ एक ते दूसरो आँक नहीं।
तुम कौन धौं पाटी पढ़े हो कहौ, मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं।।5।।

शब्दार्थ –

न हारति–हार नहीं मानती/ तारनि सों–पुतलियों से/इकतार–एकटक/न टारति–नहीं टालती/ भावतो–मन भावन, प्रियतम/ दीठि परै–दृष्टि में आ जाए, दिखाई पड़े/ गारति–गला देती है/ सोंहन–सामने/ जोहन–देखना/ आरति–करुणा, इच्छा, लालसा/ जक–रट/ सूल–सेलनि–काँटों की पीड़ा/कहौ धौं–कहो तो/कलपाय है–कष्ट प्रदान करेगा/कल–चैन/जिन–मत/ मोहि–मोहित करके/ अमोही–निर्मोही/रावरे–तुम्हारे/ दोही–दुहाई/ विसास–विश्वास/ जीवन–मूरि–जल के भण्डार, प्राण के तत्त्व/गुमान–अभिमान/ गरावन–गला देने वाली/ हेत–खेत–धूरि – प्रेम रूपी रण/विष–समुदेग–बान – व्याकुलता का विषैला बाण/ ओटिबो–अड़ाना, सामने करना/ परेखै–पछतावे को/ बाँटें आयौ–हिस्से में आया है/ तहाँ–उस प्रेम–मार्ग में/आपनपौ–अहंकार/ पाटी–पढ़े हो – सीख पाए हो।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. 'कित प्यासनि मारत मोही' पंक्ति का भाव है –
   (क) क्यों प्यासा मारते हो (ख) क्यों मुझसे दूर रहते हो
   (ग) क्यों निर्मोही बने हो (घ) दर्शनों से वंचित क्यों किए हो ( )
2. प्रेम-मार्ग किनके लिए कठिन है –
   (क) कपटियों के लिए (ख) सरल व्यक्तियों के लिए
   (ग) भक्तों के लिए (घ) संन्यासियों के लिए ( )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. घनानंद किस बादशाह के मीरमुंशी थे ?
2. प्रेम-मार्ग पर कौन सुगमता से चल सकता है ?
3. घनानंद की कोई दो रचनाओं के नाम लिखिए।
4. प्रेम की पीर के सिद्धहस्त कवि कौन थे ?
5. 'भोर तैं साँझ कानन-ओर निहारति।'

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

विरही के वन की ओर निहारने का क्या कारण है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. मन भावन प्रियतम के सम्मुख होने पर भी विरही को उसका दर्शन-लाभ नहीं मिलता, कारण बताइए।
2. 'मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं' उक्त पंक्ति के आधार पर विरही की पीड़ा स्पष्ट कीजिए।
3. 'मीत सुजान अनीत करौ जिन' छंद में कवि ने सुजान को उपालम्भ क्यों दिया है ?
4. 'विरह की स्थिति अत्यंत करुणाजनक होती है' प्रथम छंद के आधार पर प्रमाणित कीजिए।
5. 'काहू कलपाय है, सु कैसे कल पाय है' पंक्ति का भावार्थ लिखिए।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. घनानंद के काव्य में विरह की प्रधानता है, स्पष्ट कीजिए।
2. पठित छंदों के आधार पर घनानंद की काव्य कला का वर्णन कीजिए।
3. घनानंद के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर एक टिप्पणी लिखिए।
4. पाठ में आए निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

   (क) भए अति निठुर, ...सु कैसे कल पाय है।।

   (ख) अति सूधो सनेह को मारग है,..................मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं।।

•••

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

5. सेनापति

कवि परिचय –

रीतिकाव्य–परंपरा में सेनापति का विशेष स्थान है। इनके पितामह का नाम परशुराम दीक्षित तथा पिता का नाम गंगाधर दीक्षित था। इनके जन्म स्थान को लेकर विद्वानों की एक राय नहीं है। इनके पिता गंगा के किनारे अनूप बस्ती में रहते थे। जनश्रुति के अनुसार सेनापति अनूपशहर (जिला बुलन्दशहर) के निवासी थे। सेनापति संस्कृत के प्रकांड पंडित थे। सेनापति की दो रचनाएँ मानी जाती हैं – 'कवित्त रत्नाकर' और 'काव्यकल्पद्रुम'। विद्वानों का मानना है कि ये दोनों एक ही ग्रंथ हैं। 'कवित्त रत्नाकर' में पाँच तरंगें तथा 394 छंद हैं। श्लेष इनका सर्वाधिक प्रिय अलंकार है।

सेनापति अपने ऋतुवर्णन के लिए विशेष प्रसिद्ध हैं। इनके पदों में प्रकृति का सूक्ष्म निरीक्षण मिलता है। इन्होंने शरद्, ग्रीष्म और वर्षा ऋतु के मनमोहक चित्र प्रस्तुत किए हैं। ग्रीष्म और वर्षा ऋतु का तो इन्होंने अद्‌भुत वर्णन किया है। ये रामभक्त कवि हैं।

सेनापति ब्रजभाषा के सिद्धहस्त कवि हैं। प्रवाहयुक्त, भावानुकूल भाषा-प्रयोग इनके काव्य की उल्लेखनीय विशेषता है। इनकी भाषा में ओज, प्रसाद एवं माधुर्य गुणों का अद्‌भुत संयोग है। इनके काव्य में सहजता है तथा संस्कृतनिष्ठ शब्दावली होते हुए भी कहीं भी क्लिष्टता नहीं आती।

पाठ परिचय –

इस पाठ में क्रमशः दो पद बसंत ऋतु एवं दो पद ग्रीष्म ऋतु से संबंधित हैं। ऋतु वर्णन के पद सेनापति के प्रकृति-विषयक सूक्ष्म निरीक्षण और उनकी सौंदर्यानुभूति को उद्‌घाटित करने वाले हैं। प्रथम दो पदों में ऋतुराज बसंत के आगमन और उसके प्रभाव का वर्णन कवि ने बड़ी भावुकता के साथ किया है। ऋतुराज बसंत एक राजा की तरह पूरे दल-बल के साथ आता है। शेष दो पदों में ग्रीष्म ऋतु के प्रभाव को व्यक्त किया है। ग्रीष्म ऋतु के आगमन से पूर्व ही तलघरों को सुधारा जाता है। जलयंत्रों का रख-रखाव कर इत्र, गुलाबजल आदि की व्यवस्था पहले ही कर ली जाती है। भाव के अनुसार भाषा का प्रयोग यहाँ द्रष्टव्य है।

ऋतु वर्णन

बरन बरन तरु फूले उपवन बन,
        सोई चतुरंग संग दल लहियत है।
बंदी जिमि बोलत बिरद बीर कोकिल हैं,
        गुंजत मधुप गान गुन गहियत हैं।।
आवै आस-पास पुहुपन की सुबास सोई,
        सोंधे के सुगंध माँझ सने रहियत हैं।।
सोभा कौं समाज, सेनापति सुख-साज, आज,
        आवत बसंत रितुराज कहियत हैं।।1।।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मलय समीर सुभ सौरभ धरन धीर,
सरबर नीर जन मज्जन के काज के।
मधुकर पुंज पुनि मंजुल करत गूँज,
सुधरत कुंज सम सदन समाज के।।
व्याकुल वियोगी, जोग कै सकै न जोगी, तहाँ,
बिहरत भोगी सेनापति सुख साज के।
सघन तरु लसत बोलैं पिक-कुल सत,
देखौ हिय हुलसत आए रितुराज के।।2।।

जेठ नजिकाने सुधरत खसकाने, तल,
ताख तहखाने के सुधारि झारियत हैं।
होति है मरम्मति बिबिध जल जंत्रन की,
ऊँचे ऊँचे अटा, ते सुधा सुधारियत हैं।
सेनापति अंतर, गुलाब अरगजा, साजि,
सार तार हार मोल लै लै धारियत हैं।
ग्रीषम के बासर बराइवे कौं सीरे सब,
राज भोग काज साज यौं सम्हारियत हैं।।3।।

देखैं छिति अम्बर जलै है चारि ओर छोर,
तिन तरबर सब ही कौं रूप हर्‌यौ है।
महा झर लागै जोति भादव की होति चलै,
जलद पवन तन सेक मानौं पर्‌यौ है।
दारुन तरनि तरैं नदी सुख पावैं सब,
सीरी घन छाँह चाहिबौई चित धर्‌यौ है।
देखौ चतुराई सेनापति कविताई की जु,
ग्रीषम विषम बरसा की सम कर्‌यौ है।।4।।

•••

शब्दार्थ –

बरन–भिन्न/ लहियत–सजी/ बिरद–विरुदावली/ कोकिल–कोयल/ मधुप–भौंरा/ पुहुपन–पुष्प/ सुबास–सुगंध/ धीर–मंद/ मंजुल–मधुर/ कुंज–बाग/ मज्जन–स्नानादि कार्य/ बिहरत –विहार करता है/ लसत–दिखाई देना/ पिक–कोयल/ खसकाने–खस की पट्टियाँ/ अतर –इत्र/ सम्हारियत–संभालना/ तरनि–नाव/ तरबर–वृक्ष।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. सेनापति के पिता का नाम है –
   (क) गंगाधर दीक्षित (ख) परशुराम
   (ग) अनूपदास (घ) प्यारेलाल ( )
2. निम्नलिखित में से सेनापति की रचना है –
   (क) पद्माभरण (ख) जगद्विनोद
   (ग) प्रबोध पचीसी (घ) काव्यकल्पद्रुम ( )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. सेनापति के पितामह का क्या नाम था ?
2. 'कवित्त रत्नाकर' में कितने छंद हैं ?
3. सेनापति का प्रिय अलंकार कौन-सा है ?
4. 'चतुरंग' से क्या तात्पर्य है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. सेनापति का व्यक्तिगत परिचय दीजिए।
2. सेनापति की कृतियों के नाम लिखिए।
3. 'सोई चतुरंग संग दल लहियत है' पंक्ति का भावार्थ लिखिए।
4. सेनापति के काव्य की विशेषताएँ बताइए।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. बसंत ऋतु के आगमन पर प्रकृति में होने वाले परिवर्तनों को लिखिए।
2. ग्रीष्म ऋतु के आगमन से पूर्व क्या-क्या तैयारियाँ की जाती हैं ?
3. ग्रीष्म ऋतु में क्या-क्या परिवर्तन होते हैं ?
4. पाठ में आए निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।
   (क) 'बरन बरन तरु फूले....................... आवत बसंत रितुराज कहियत हैं।।'
   (ख) देखें छिति अम्बर जलै है .... विषम बरसा की सम कर्‌यौ है।।

•••

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

6. पद्माकर

कवि परिचय –

पद्माकर रीतिकाल के प्रमुख कवि हैं। इनका जन्म 1753 ई. में बाँदा (उ.प्र.) में हुआ था। इनका वास्तविक नाम 'प्यारेलाल' था। इनके पिता का नाम मोहनलाल भट्ट था। ये बचपन से ही प्रखर बुद्धि वाले थे। ये सोलह वर्ष की अल्पायु में ही सरस और भावपूर्ण छंदों की रचना करने लगे थे। इन्होंने सागर नरेश 'अप्पासाहब' को एक छंद सुनाया था, जिस पर प्रसन्न होकर श्री रघुनाथराव ने इन्हें एक लाख मुद्रा पुरस्कार स्वरूप दी। ये अर्जुन सिंह, हिम्मत बहादुर, जयपुर नरेश, महाराणा भीमसेन (उदयपुर) नरेश दौलतराव (ग्वालियर) आदि देश के कई राजाओं के आश्रित कवि रहे। इनका देहावसान 1833 ई. में कानपुर में हुआ।

प्रतिभावान् होने के साथ-साथ ये अत्यंत स्वछंद प्रकृति के थे। ये जयपुर में राजसी ठाट-बाट से कई वर्षों तक रहे। वे यात्रा पर पूरे लाव-लश्कर के साथ निकलते थे। एक बार एक नरेश को भ्रम हो गया कि कहीं कोई दूसरा नरेश आक्रमण के लिए तो नहीं आ रहा है। पद्माकर द्वारा रचित ग्रंथों में 'हिम्मत बहादुर विरुदावली', 'पद्माभरण', 'जगद्विनोद', 'प्रबोध पचीसी', 'गंगा लहरी' 'रामरसायन' और 'आलीजा प्रकाश' प्रमुख हैं।

पद्माकर की भाषा अत्यंत परिष्कृत है। इसमें कहीं–कहीं पर अवधी, ब्रज और बुन्देलखण्डी का मिश्रण भी है। इनकी कविताओं में मधुरता है। इनकी रचनाएँ हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि हैं।

पाठ-परिचय –

प्रस्तुत पाठ में गंगा की स्तुति प्रस्तुत की गई है। संकलित पदों में गंगा की निर्मलता और पतितों के उद्धार करने की क्षमता का वर्णन किया गया है। कवि ने कहा है कि भगवान महादेव की जटा से निकली गंगा ने लाखों लोगों का उद्धार किया है। गंगा तो ऐसी है कि वह बिना माँगे ही सब-कुछ दे देती है। वह कामधेनु है। उन्होंने कहा है कि गंगा धर्म का मूल है और इसके जल का पान करना चाहिए।

गंगा स्तुति

विधि के कमंडल की सिद्धि है प्रसिद्ध यही,
हरि-पद पंकज-प्रताप की लहर है।
कहैं 'पदमाकर' गिरीस-सीस मंडल के,
मंडल की माल ततकाल अघहर है।
भूपति भगीरथ के रथ की सुपुण्य पथ,
जन्हु जप जोग फल फैल की फहर है।
छेम की छहर गंगा रावरी लहर,
कलिकाल को कहर जमजाल को जहर है।।1।।
जमपुर द्वारे लगे तिन में केवारे, कोऊ
हैं न रखवारे ऐसे बन के ऊजारे हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कहै 'पदमाकर' तिहारे प्रन धारे तेउ,
करि अब भारे सुरलोक को सिधारे हैं।।
सुजन सुखारे करे पुन्य उजियारे अति,
पतित-कतारे भवसिंधु ते उतारे हैं।
काहू ने न तारे तिन्हैं गंगा तुम तारे, और
जेते तुम तारे तेते नभ में न तारे हैं।।2।।

कूरम पै कोल कोलहू पै सेस कुंडली है,
कुंडली पै फबो फैल सुफन हजार की।
कहै 'पदमाकर' त्यों फन पै फवी है भूमि,
भूमि पै फबी है थिति रजत पहार की।।
रजत पहार पर संभु सुरनायक हैं,
संभु पर ज्योति जटा-जूट है अपार की।
संभु जटा-जूटन पै चंद की छुटी है छटा,
चंद की छटान पै छटा है गंगधार की।।3।।

कैंधो तिहुँ लोक की सिंगार की बिसाल माल,
कैंधौं जगी जग में जमाति तीरथन की।
कहै 'पदमाकर' बिराजै सुर-सिंधु-धार,
कैंधों दूध धार कामधेनु के घनन की।
भूपति भगीरथ के जस को जलूस कैंधौं,
प्रगटी तपस्या कैंधौं पूरी जन्हु-जनकी।
कैंधौं कछु राखै राका-पति सों इलाका भारी,
भूमि की सलाका की पताका पुन्यगन की।।4।।

करम को मूल तन, तन मूल जीव जग,
जीवन को मूल अति आनन्द ही धारिबो।
कहै 'पदमाकर' ज्यौं आनन्द को मूल राज,
राजमूल केवल प्रजा को भौन भरिबो।
प्रजामूल अन्न सव, अन्नन को मूल मेघ,
मेघन को मूल एक जज्ञ अनुसरिबो।
जज्ञन को मूल धन, धन मूल धर्म अरु,

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

धर्म मूल गंगा–जल बिन्दु पान करिबो।।5।।

शब्दार्थ –

विधि–ब्रह्मा/ प्रसिद्ध–ख्याति प्राप्त/गिरीस–शिव/ अघहर–पाप को नष्ट करने वाली/ जन्हु–जन्हु ऋषि/ रावरी–आपकी/ कहर–कठोर/ जमजाल–यमराज का जाल/ जमपुर–यमपुर/ केवारे–किवाड़/ सुरलोक–स्वर्ग/ कतारे–पंक्ति/ कूरम–कछुआ/ कोल–सुअर/ कोलहू–वराह/ सेस–शेषनाग/ रजत पहार–कैलाश पर्वत/ संभु–भगवान शिव/ गंगधार–गंगा की धारा/ कैंधो–अथवा/ सिंगार–श्रृंगार/ जलूस–समूह, उत्सव/ राका पति–चंद्रमा।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. पद्माकर का जन्म कहाँ हुआ था ?

   (क) बाँदा (ख) जयपुर

   (ग) सागर (घ) उदयपुर ( )

2. पद्माकर का वास्तविक नाम क्या था ?

   (क) नटवरलाल (ख) प्यारेलाल

   (ग) लल्लूलाल (घ) मोहनलाल ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. पद्माकर का जन्म कब हुआ ?
2. पद्माकर के पिता का क्या नाम था ?
3. पद्माकर का देहावसान कहाँ हुआ ?
4. किस राजा ने पद्माकर को एक लाख मुद्राएँ पुरस्कार में दीं ?
5. गंगा की धारा कहाँ से निकली है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. पद्माकर किन-किन राजाओं के आश्रय में रहे ?
2. पद्माकर की कृतियों के नाम लिखिए।
3. ''भूपति भगीरथ के रथ की सुपुण्य पथ'' पंक्ति का भावार्थ लिखिए।
4. पद्माकर के काव्य की विशेषताएँ बताइए।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. प्रस्तुत पाठ के आधार पर गंगा की महत्ता का वर्णन कीजिए।
2. पद्माकर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में एक लेख लिखिए।
3. पाठ में आए निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

   (क) ''विधि के कमंडल की.........................कहर जमजाल को जहर है।।''

   (ख) ''कूरम पै कोल कोलहू....................... छटा है गंगधार की।।''

•••

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

7. मैथिलीशरण गुप्त

लेखक परिचय –

राष्ट्रकवि की उपाधि से सम्मानित भारतीय संस्कृति के महान् उद्‌गाता श्री मैथिलीशरण गुप्त का जन्म उत्तर प्रदेश के चिरगाँव (जिला झाँसी) में सन् 1886 में हुआ। गुप्त जी द्विवेदी युग के सर्वाधिक लोकप्रिय प्रतिनिधि कवि हैं। इनके पिता सेठ रामचरण कविता प्रेमी थे और 'कनकलता' उपनाम से कविताएँ लिखते थे। इनकी प्रारम्भिक कविताएँ 'वैश्योपकारक' में छपीं; किन्तु बाद में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के सम्पर्क में आने पर 'सरस्वती' में लिखना प्रारम्भ किया और उन्हीं की प्रेरणा से खड़ी बोली को कविता की सरसता के अनुरूप ढालने का कार्य किया। गुप्त जी की रचनाओं में राष्ट्रीयता, स्वदेश प्रेम, युगीन चेतना और भारतीय संस्कृति की छाप पूरी तरह दिखाई देती है। 'भारत–भारती' नामक रचना से इन्हें अत्यधिक लोकप्रियता प्राप्त हुई। देश एवं मातृभूमि के प्रति गर्व तथा गौरव, राष्ट्रीय जागरण से ओत-प्रोत 'भारत भारती' की कविताओं ने इन्हें राष्ट्रकवि के रूप में प्रतिष्ठित किया। भारत सरकार ने इन्हें राज्य सभा का सदस्य भी मनोनीत किया।

गुप्त जी की रचनाओं में मानव जीवन और समाज के विविध अंगों की समस्याओं का चित्रण हुआ है। उनमें भारतीय संस्कृति की प्राचीनता के प्रति पूज्य भाव है तो नए परिवर्तन के प्रति भी तीव्र उत्साह है। द्विवेदी युगीन आदर्शवादी नैतिकता, पवित्रता, पौराणिक आख्यानों की तर्क संगत व्याख्या एवं समसामयिक राष्ट्रीय हलचलों की तीव्र गूँज उनके काव्य में है। वे सामाजिक उत्पीड़न, राजनीतिक दासता तथा धार्मिक संकीर्णता के विरोधी हैं। उन्हें भारतीय सांस्कृतिक नव जागरण का कवि कहा जाता है।

गुप्त जी ने खण्डकाव्य, प्रबन्धकाव्य, नाटक एवं अनूदित काव्य आदि विधाओं में लिखा है। इनकी रचनाओं में 'भारतभारती', 'जयद्रथवध', 'पंचवटी', 'गुरुकुल','झंकार', 'साकेत', 'यशोधरा', 'द्वापर', 'जयभारत', 'सिद्धराज', 'विष्णु प्रिया' आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। 'साकेत' महाकाव्य ने गुप्त जी को कीर्ति के शिखर पर पहुँचाया; जिसमें राम के पावन चरित्र को आधुनिक परिवेश में चित्रित करते हुए उपेक्षिता उर्मिला के चरित्र को त्यागमयी नारी के रूप में चित्रित किया गया है।

पाठ-परिचय –

प्रस्तुत संकलन गुप्त जी के प्रसिद्ध काव्य 'यशोधरा' से संकलित किया गया है। यशोधरा में गौतम बुद्ध के राजगृह को त्यागकर चले जाने के पश्चात् उनकी पत्नी यशोधरा के हृदय में उत्पन्न भावों का मार्मिक एवं मनोवैज्ञानिक चित्रण है। गौतम बुद्ध अपनी पत्नी यशोधरा एवं पुत्र राहुल को सोता हुआ छोड़कर चले जाते हैं। प्रातः काल होने पर यशोधरा को जब पता लगता है, तो वह आत्मग्लानि से भरकर वेदना प्रकट करती है। उसे इस बात का अधिक दुःख है कि उसके पति उसे बिना बताए चले गए। वह कहती है कि ऐसा करके उन्होंने सम्भवतः हम क्षत्राणी नारियों को समझने में भूल कर दी है। हम क्षत्राणी नारियाँ देश की रक्षा के लिए अपने पतियों को खुशी-खुशी रण क्षेत्र में भेज देती हैं। फिर वे तो जगत कल्याण हेतु सिद्धि प्राप्त करने के लिए गए हैं। इस संकलन में यशोधरा की सहज नारीगत वेदना, क्षोभ, संताप के साथ-साथ उसके मातृत्व और वात्सल्य का भी प्रभावशाली अंकन है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

'भारत की श्रेष्ठता' काव्यांश गुप्त जी के प्रसिद्ध काव्य 'भारत भारती' से लिया गया है; जिसमें उन्होंने पराधीनता और निराशा में डूबी भारतीय जनता को जाग्रत होने का आह्वान किया है। 'भारत भारती' राष्ट्रीयता की उद्घोषक रचना है। राष्ट्रीय आंदोलन के समय इस रचना को अत्यधिक लोकप्रियता प्राप्त हुई। प्रस्तुत अंश में गुप्त जी ने भारतवर्ष के गौरवमय अतीत का वर्णन किया है। प्राकृतिक वैभव से समृद्ध भारत भूमि ऋषिया-महर्षियों की भूमि रही है। इस भूमि पर अनेक वीर, ऋषि-मुनि, दानी और चिंतकों ने जन्म लिया है। भारत भूमि संसार के सम्पूर्ण देशों में सिरमौर है। यह वह पुण्य भूमि है; जिसके निवासी समस्त विद्याओं एवं कला-कौशल के प्रथम आचार्य रहे हैं। हम ऐसे महान मानवों की संतति होकर भी दुर्गति को प्राप्त हो रहे हैं।

मूल पाठ –

यशोधरा

(संकलित अंश)

सिद्धि–हेतु स्वामी गये, यह गौरव की बात;
पर चोरी–चोरी गये, यही बड़ा व्याघात।
    सखि, वे मुझसे कहकर जाते,
कह, तो क्या मुझको वे अपनी पथ–बाधा ही पाते ?
    मुझको बहुत उन्होंने माना,
    फिर भी क्या पूरा पहचाना ?
    मैंने मुख्य उसी को जाना,
जो वे मन में लाते।
सखि, वे मुझसे कहकर जाते।
    स्वयं सुसज्जित करके क्षण में,
    प्रियतम को, प्राणों के पण में,
    हमीं भेज देती हैं रण में, –
क्षात्र धर्म के नाते ।
सखि, वे मुझसे कहकर जाते।
    हुआ न वह भी भाग्य अभागा,
    किस पर विफल गर्व अब जागा ?
    जिसने अपनाया था, त्यागा ।
रहे स्मरण ही आते!
सखि, वे मुझसे कहकर जाते।
    नयन उन्हें हैं निष्ठुर कहते ,
    पर इनसे जो आँसू बहते,
    सदय हृदय वे कैसे सहते ?
गये तरस ही खाते।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सखि, वे मुझसे कहकर जाते।
जाएँ, सिद्धि पावें वे सुख से,
दुखी न हों इस जन के दुःख से,
उपालम्भ दूँ मैं किस मुख से ?
आज अधिक वे भाते!
सखि, वे मुझसे कहकर जाते।
गये, लौट भी वे आवेंगे,
कुछ अपूर्व-अनुपम लावेंगे ?
रोते प्राण उन्हे पावेंगे ?
पर क्या गाते-गाते,
सखि, वे मुझसे कहकर जाते।

भारत की श्रेष्ठता

भू-लोक का गौरव ,प्रकृति का पुण्य लीला स्थल कहाँ ?
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल जहाँ।।
सम्पूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है ?
उसका कि जो ऋषिभूमि है, वह कौन ?भारतवर्ष है।।

हाँ, वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का सिरमौर है,
ऐसा पुरातन देश कोई विश्व में क्या और है ?
भगवान की भव-भूतियों का यह प्रथम भण्डार है।
विधि ने किया नर-सृष्टि का पहले यहीं विस्तार है।।

यह पुण्यभूमि प्रसिद्ध है इसके निवासी 'आर्य' हैं,
विद्या, कला-कौशल सबके जो प्रथम आचार्य हैं।
सन्तान उनकी आज यद्यपि हम अधोगति में पड़े ।
पर चिह्न उनकी उच्चता के आज भी कुछ हैं खड़े।।

•••

शब्दार्थ –

सुसज्जित – अच्छी तरह, तैयार कर / प्राणों के प्रण – प्राणों की बाजी लगी हो / क्षात्र–धर्म – क्षत्रिय धर्म के कर्त्तव्य निर्वाह हेतु / विफल – व्यर्थ / निष्ठुर – दया रहित / उपालम्भ – उलाहना / भाते – अच्छे लगना / अपूर्व – अद्वितीय / अनुपम – अनोखा / सिद्धि हेतु – सिद्धि प्राप्त करने के लिए / व्याघात – पीड़ा / पथ बाधा – मार्ग में रुकावट / गिरि – पर्वत / उत्कर्ष – उत्थान / सिरमौर – सर्वश्रेष्ठ / पुरातन – पुराना / भवभूतियाँ – सांसारिक वैभव / आर्य – श्रेष्ठ (सदाचारी) / अधोगति – पतन / विधि – ब्रह्मा, ईश्वर।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. यह गौरव की बात कि स्वामी गये –
   (क) वैराग्य हेतु (ख) सिद्धि हेतु
   (ग) राज्य प्राप्ति हेतु (घ) तीर्थयात्रा हेतु ( )
2. यशोधरा को पीड़ा है कि उसके पति चले गए हैं–
   (क) सोता हुआ छोड़कर (ख) लक्ष्य बताए बिना
   (ग) चोरी-चोरी (घ) खाना खाए बिना ( )
3. कवि के अनुसार प्रकृति का पुण्य तीर्थ स्थल है –
   (क) भारत वर्ष (ख) हिमालय
   (ग) गंगा (घ) सागर ( )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. यशोधरा का काव्य रूप क्या है ?
2. यशोधरा दुःखी क्यों है ?
3. भारतवर्ष अन्य देशों का सिरमौर क्यों है ?
4. भारतवर्ष को प्रकृति का पुण्य तीर्थ-स्थल क्यों कहा जाता है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. यशोधरा की मूल संवेदना अपने शब्दों में लिखिए।
2. 'दुःखी न हो इस जन के दुःख से' पंक्ति में यशोधरा ने 'जन' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया है?
3. 'उपालम्भ दूँ मैं किस मुख से' यशोधरा ने यह क्यों कहा है ?
4. कवि ने भारतवर्ष को भूलोक का गौरव क्यों बताया है ?अपने शब्दों में लिखिए।

निबंधात्मक प्रश्न

1. 'यशोधरा' के पठित काव्यांश के आधार पर यशोधरा की चारित्रिक विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए।
2. मैथिलीशरण गुप्त को राष्ट्रकवि क्यों कहा जाता है?
3. 'भारत की श्रेष्ठता' में अभिव्यक्त भावों को अपने शब्दों में लिखिए।
4. भारतवर्ष के अतीत की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
5. पाठ में आए निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –
   (क) 'स्वयं सुसज्जित करके................................ कहकर जाते'।
   (ख) 'भू-लोक का गौरव..भारतवर्ष'।
   (ग) 'यह पुण्य भूमि..कुछ हैं खड़े'।

•••

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

8. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

कवि परिचय –

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जन्म 21 फरवरी, 1896 की बसंत पंचमी के दिन मेदिनीपुर पश्चिम बंगाल में हुआ। तीन वर्ष की छोटी अवस्था में ही निराला जी की माताजी का निधन हो गया और युवावस्था तक आते–आते पिताजी का भी निधन हो गया। निराला का संपूर्ण जीवन संघर्षमय रहा। इलाहाबाद से निराला जी की कई स्मृतियाँ जुड़ी रहीं। निरालाजी का निधन 15 अक्टूबर, 1971 को हुआ।

छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक निराला हिंदी में मुक्तछंद के प्रवर्तक भी माने जाते हैं। निराला के प्रमुख काव्य संग्रह इस प्रकार हैं – 'अनामिका', 'परिमल', 'गीतिका', 'तुलसीदास', 'अणिमा', 'बेला', 'नए पत्ते', 'अर्चना', 'आराधना', 'गीत कुंज' आदि। निराला का गद्य साहित्य भी काफी लोकप्रिय रहा है।

पाठ-परिचय –

प्रस्तुत काव्यांश निराला की 'राम की शक्तिपूजा' से संकलित है। इसमें अन्याय पर न्याय की, असत् पर सत् की, अधर्म पर धर्म की, रावणत्व पर राम की और अन्ततः निराशा पर आशा की विजय दिखला कर सांस्कृतिक प्रतिमानों को प्रस्तुत किया है। यह कविता मानव–मन के अन्तर्द्वन्द्वों की कथा है जो मानव-जीवन के अनवरत संघर्ष में विद्यमान जिजीविषा को व्यक्त करती है।

प्रस्तुत कविता में राम-रावण युद्ध सत् और असत् की दो विरोधी प्रवृत्तियों की टकराहट है। व्यक्ति को राम की तरह विपदा और संकटकालीन परिस्थितियों में अपने संगी-मित्रों से परामर्श लेकर कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करना चाहिए।

सीता का अपहरण कर अट्टहास कर रहे रावण के साथ शक्ति को देख राम निराश हो जाते हैं किंतु विभीषण, जाम्बवान, हनुमान आदि मित्रों की सलाह पर शक्ति की उपासना करते हैं। राम का यह संघर्श विषमता और हताशा से त्रस्त मानवता को दानवता की शक्ति–संपन्नता के विरुद्ध निरन्तर संघर्ष करने की प्रेरणा देता है।

पराजित होकर भी मानव को मन से हार स्वीकार नहीं करनी चाहिए, यही 'राम की शक्तिपूजा' का आशावादी संदेश है।

मूल पाठ

राम की शक्तिपूजा

है अमानिशा, उगलता गगन घन अन्धकार,
खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन–चार,
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल,
भूधर ज्यों ध्यानमग्न, केवल जलती मशाल।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

स्थिर राघवेन्द्र को हिला रहा फिर फिर संशय,
रह रह उठता जग जीवन में रावणजय भय,
जो नहीं हुआ आज तक हृदय रिपुदम्य श्रान्त,
एक भी, अयुत-लक्ष में रहा जो दुराक्रान्त,
कल लड़ने को हो रहा विकल वह बार बार,
असमर्थ मानता मन उद्यत हो हार हार।

कुछ क्षण तक रहकर मौन सहज निज कोमल स्वर,
बोले रघुमणि ''मित्रवर, विजय होगी न, समर
यह नहीं रहा नर वानर का राक्षस से रण,
उतरी पा महाशक्ति रावण से आमन्त्रण,
अन्याय जिधर, हैं उधर शक्ति।'' कहते छल छल
हो गए नयन, कुछ बूँद पुनः ढलके दृगजल,
रुक गया कण्ठ, चमका लक्ष्मण तेजः प्रचण्ड
धँस गया धरा में कपि गह युगपद, मसक दण्ड
स्थिर जाम्बवान, समझते हुए ज्यों सकल भाव,
व्याकुल सुग्रीव, हुआ उर में ज्यों विषम घाव,
निश्चित सा करते हुए विभीषण कार्यक्रम
मौन में रहा यों स्पन्दित वातावरण विषम।
निज सहज रूप में संयत हो जानकीप्राण
बोले ''आया न समझ में यह दैवी विधान।
रावण, अधर्मरत भी, अपना, मैं हुआ अपर,
यह रहा, शक्ति का खेल समर, शंकर, शंकर!
करता मैं योजित बार-बार शरनिकर निशित,
हो सकती जिनसे यह संसृति संपूर्ण विजित,
जो तेजः पुंज, सृष्टि की रक्षा का विचार,
हैं जिनमें निहित पतन घातक संस्कृति अपार।

कह हुए भानुकुलभूषण वहाँ मौन क्षण भर,
बोले विश्वस्त कण्ठ से जाम्बवान, ''रघुवर,
विचलित होने का नहीं देखता मैं कारण,

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हे पुरुषसिंह, तुम भी यह शक्ति करो धारण,
आराधन का दृढ़ आराधन से दो उत्तर,
तुम वरो विजय संयत प्राणों से प्राणों पर।
रावण अशुद्ध होकर भी यदि कर सकता त्रस्त
तो निश्चय तुम हो सिद्ध करोगे उसे ध्वस्त,
शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन।
छोड़ दो समर जब तक न सिद्धि हो, रघुनन्दन!
तब तक लक्ष्मण हैं, महावाहिनी के नायक,
मध्य मार्ग में अंगद, दक्षिण-श्वेत सहायक।
मैं, भल्ल सैन्य, हैं वाम पार्श्व में हनुमान,
नल, नील और छोटे कपिगण, उनके प्रधान।
सुग्रीव, विभीषण, अन्य यूथपति यथासमय
आयेंगे रक्षा हेतु जहाँ भी होगा भय।''

यह अन्तिम जप, ध्यान में देखते चरण युगल
राम ने बढ़ाया कर लेने को नीलकमल।
कुछ लगा न हाथ, हुआ सहसा स्थिर मन चंचल,
ध्यान की भूमि से उतरे, खोले पलक विमल।
देखा, वहाँ रिक्त स्थान, यह जप का पूर्ण समय,
आसन छोड़ना असिद्धि, भर गए नयनद्वय,
''धिक् जीवन को जो पाता ही आया है विरोध,
धिक् साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध
जानकी! हाय उद्धार प्रिया का हो न सका,
वह एक और मन रहा राम का जो न थका।
जो नहीं जानता दैन्य, नहीं जानता विनय,
कर गया भेद वह मायावरण प्राप्त कर जय।

बुद्धि के दुर्ग पहुँचा विद्युतगति हतचेतन
राम में जगी स्मृति हुए सजग पा भाव प्रमन।
''यह है उपाय'', कह उठे राम ज्यों मन्द्रित घन

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

''कहती थीं माता, मुझको सदा राजीवनयन।
दो नील कमल हैं शेष अभी, यह पुरश्चरण
पूरा करता हूँ देकर मातः एक नयन।''
कहकर देखा तूणीर ब्रह्मशर रहा झलक,
ले लिया हस्त लक लक करता वह महाफलक।
ले अस्त्र वाम पर, दक्षिण कर दक्षिण लोचन
ले अर्पित करने को उद्यत हो गए सुमन
जिस क्षण बँध गया बेधने को दृग दृढ़ निश्चय,
काँपा ब्रह्माण्ड, हुआ देवी का त्वरित उदय।

''साधु, साधु, साधक धीर, धर्म-धन धन्य राम!''
कह, लिया भगवती ने राघव का हस्त थाम।
देखा राम ने, सामने श्री दुर्गा, भास्वर
वामपद असुर स्कन्ध पर, रहा दक्षिण हरि पर।
ज्योतिर्मय रूप, हस्त दश विविध अस्त्र सज्जित,
मन्द स्मित मुख, लख हुई विश्व की श्री लज्जित।
हैं दक्षिण में लक्ष्मी, सरस्वती वाम भाग,
दक्षिण गणेश, कार्तिक बायें रणरंग राग,
मस्तक पर शंकर! पदपद्मों पर श्रद्धाभर
श्री राघव हुए प्रणत मन्द स्वरवन्दन कर।

''होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन।''
कह महाशक्ति राम के वदन में हुई लीन।

•••

शब्दार्थ –

अमानिशा – अमावस की रात/ अप्रतिहत – अपराजित, जिसे रोका न जा सके/ अम्बुधि–सागर, समुद्र/ राघवेन्द्र – राम/ दृगजल – आँसू/ मौलिक – नवीन/ वाम – बाँया/ धिक् – धिक्कार/ पुरश्चरण – किसी कार्य की सिद्धि के लिए मंत्र जाप, विशिष्ट सफलता हेतु आयोजन/ वदन – मुख।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. राम ने किस को पराजित करने के लिए शक्ति की उपासना की ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(क) रावण (ब) मारीच
(ग) कंस (घ) मेघनाद ( )

2. 'अनामिका' किसकी रचना है ?
(क) सूर्यकांत त्रिपाठी (ख) पंत
(ग) दिनकर (घ) महादेवी वर्मा ( )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. रावण से युद्ध करते हुए राम निराश क्यों हो गए थे ?
2. राम-रावण युद्ध किसका प्रतीक है ?
3. राम को शक्ति उपासना करने का सुझाव किसने दिया ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. 'राम की शक्तिपूजा' के आधार पर राम-रावण की सेना का वर्णन कीजिए।
2. राम ने शक्ति की उपासना में कौन–से फूलों का प्रयोग किया ?
3. रावण से युद्धरत राम स्वयं को क्यों धिक्कारते हैं ?
4. पाठ में श्रीराम के लिए किन-किन पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग हुआ है ?

निबंधात्मक प्रश्न –

1. 'राम की शक्तिपूजा' में निहित सांस्कृतिक प्रतिमानों को समझाइए।
2. 'राम की शक्तिपूजा' मानव-मन का अन्तर्द्वन्द्व है। समझाइए।
3. वर्तमान भौतिकता की चकाचौंध में 'राम की शक्तिपूजा' साधारण आदमी की पीड़ा को अभिव्यक्त करती है। स्पष्ट कीजिए।
4. 'राम की शक्तिपूजा' में सत् और असत् प्रवृत्तियों के संघर्ष को विस्तार से समझाइए।
5. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –
(क) स्थिर राघवेन्द्र को हिला ....उद्यत हो हार हार।
(ख) ''धिक जीवन को जो ....मायावरण प्राप्त कर जय।

•••

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

9. जयशंकर प्रसाद

कवि परिचय –

जयशंकर प्रसाद का जन्म 30 जनवरी, 1890 को वाराणसी के एक संभ्रान्त परिवार में हुआ। 'सुंघनी साहु' परिवार के 'बाबू देवी प्रसाद' इनके पिता थे। माता का नाम मुन्नी देवी था। कविता करने की प्रवृत्ति आप में बचपन से ही रही। सातवीं कक्षा तक क्वींस कॉलेज में अध्ययन किया। इसके बाद पिता का असामयिक निधन हो गया, अतः आगे की पढ़ाई उर्दू, हिन्दी, संस्कृत एवं अंगरेजी विषय के साथ घर पर ही हुई। पारिवारिक समस्याओं का सामना करते हुए भी आपने स्वाध्याय जारी रखा। प्रसाद जी की मित्रता अपने समय के ख्याति प्राप्त लोगों से रही, जिनमें राय कृष्णदास, केदारनाथ पाठक, मैथिलीशरण गुप्त, पंत, निराला, प्रेमचन्द, महादेवी वर्मा, जैनेन्द्र आदि प्रमुख हैं। प्रसाद जी प्रतिभा एवं कौशल के धनी होने के साथ स्वभाव से विनम्र थे। अन्तर्मुखी प्रवृत्ति के साथ परिश्रमी स्वभाव इनकी विशेषता रही है।

प्रसादजी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उनकी लेखनी ने कविता, नाटक, कहानी, उपन्यास एवं निबंध आदि सभी विधाओं को समृद्ध किया है। आपकी विविध काव्य रचनाएँ इस प्रकार हैं – **मुक्तक काव्य संग्रह** – (1) चित्राधार (ब्रजभाषा में), (2) कानन कुसुम (खड़ी बोली हिंदी का प्रथम संग्रह), (3) झरना (25 कविताएँ, बाद में 55), (4) लहर (43 कविताएँ)। **प्रबंध काव्य** – प्रेम राज्य' (2) वनमिलन (3) अयोध्या का उद्धार (4) शोकोच्छवास (5) प्रेम-पथिक (पहले ब्रज भाषा में तथा बाद में खड़ी बोली में प्रकाशन), (6) महाराणा का महत्त्व (7) आँसू (8) कामायनी (महाकाव्य)। 'कामायनी' महाकाव्य पर इन्हें 'मंगला प्रसाद पारितोषिक' भी प्राप्त हुआ। **नाटक**– (1) सज्जन, (2) कल्याणी, (3) करुणालय, (4) विशाख, (5) अजातशत्रु, (6) जनमेजय का नाग यज्ञ, (7) कामना, (8) स्कन्दगुप्त, (9) एक घूँट, (10) चन्द्रगुप्त, (11) ध्रुवस्वामिनी। **कहानियाँ** – पाँच कहानी संग्रह हैं– (1) छाया, (2) प्रतिध्वनि, (3) आकाशदीप, (4) आँधी, (5) इन्द्रजाल। **उपन्यास** – कुल तीन उपन्यास लिखे जिनमें एक अधूरा रहा – (1) कंकाल, (2) तितली (3) इरावती (अधूरा) **निबंध** – साहित्यिक निबन्ध – (1) प्रकृति सौन्दर्य (2) भक्ति (3) हिन्दी साहित्य सम्मेलन (4) सरोज (5) हिंदी कविता का विकास। **ऐतिहासिक निबन्ध** – (1) सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य, (2) मौर्यों का राज्य परिवर्तन, (3) आर्यावर्त का प्रथम सम्राट, (4) दशराज युद्ध। **समीक्षात्मक निबन्ध** – (1) चम्पू (2) कवि और कविता (3) कविता का रसास्वाद (4) काव्य और कला (5) रहस्यवाद (6) रस (7) नाटकों में रस का प्रयोग (8) नाटकों का प्रारम्भ (9) रंगमंच इत्यादि।

प्रसाद छायावाद के प्रणेताओं में से एक कवि हैं। मूलतः प्रेम और सौंदर्य के कवि रहे हैं। इसके अलावा इनके काव्य में निम्नांकित विशेषताएँ पाई जाती हैं – (1) विषय की नवीनता (2) नवीन कल्पनाएँ (3) प्राकृतिक और मानवीय सौन्दर्य का चित्रण (4) लाक्षणिक वक्रता (5) भावनाओं का सूक्ष्म चित्रण (6) रहस्यात्मकता आदि छायावादी विशेषताओं से युक्त (7) सौंदर्य चेतना के साथ भारतीय इतिहास, दर्शन और संस्कृति के प्रति अनुराग तथा (8) राष्ट्रीय चेतना।

इस प्रकार प्रसाद के काव्य में छायावादी सौन्दर्यपरकता एवं भावुकता के साथ भारतीय संस्कृति के

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उज्ज्वल पक्षों और इतिहास के गौरवपूर्ण पन्नों का उजला रंग भी मिलता है जो राष्ट्रवादी भावनाओं को जाग्रत करता है।

पाठ परिचय –

इस अध्याय में दी गई कविता – 'पेशोला की प्रतिध्वनि' राष्ट्र प्रेम से ओत–प्रोत है। इस कविता में कवि उदयपुर की पिछोला झील के किनारे बने हुए महाराणाओं के महलों और उनके झील में बने प्रतिबिम्बों के माध्यम से भारतीय लोगों को पुकार कर बार-बार कह रहा है कि हम आज हमारी पुरानी अस्मिता को भूल कर सो गए हैं। हमें पुनः जागना है तथा देश के पुनरुद्धार का भार उठाना है। अतः कवि पूछता है कि वह कौन होगा ? विचार हमें करना है कि वह मैं ही हूँ।

मूल पाठ –

पेशोला की प्रतिध्वनि

अरुण-करुण बिम्ब।
वह निर्धूम, भस्म रहित ज्वलन पिण्ड।
विकल विवर्तनों से
विरल प्रवर्तनों में
श्रमित नमित-सा
पश्चिम के व्योम में है आज निरवलम्ब-सा।
आहुतियाँ विश्व की अजस्र लुटाता रहा–
सतत्, सहस्र, कर-माला से
तेज ओज बल जो वदान्यता कदम्ब-सा।
पेशोला की उर्मियाँ हैं शान्त, घनी छाया में
तट-तरु है चित्रित तरल चित्रसारी में।
झोंपड़े खड़े हैं बने शिल्प के विषाद के –
दग्ध अवसाद से।
धूसर जलद-खण्ड झटक पड़े हैं
जैसे विजन अनन्त में।
कालिमा बिखरती है संध्या के कलंक-सी,
दुन्दुभि-मृदंग-तूर्य शान्त-सब मौन हैं।
फिर भी पुकार-सी है गूँज रही व्योम में–
''कौन लेगा भार यह?
कौन विचलेगा नहीं?
दुर्बलता इस अस्थि मांस की–
ठोक कर लोहे से, परख कर वज्र से
प्रलयोल्का-खण्ड के निकष पर कस कर

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

चूर्ण अस्थि पुंज सा हँसेगा अट्टहास कौन?
साधना पिशाचों की बिखर चूर-चूर होके
धूलि-सी उड़ेगी किस दृप्त फूत्कार से?
कौन लेगा भार यह?
जीवित है कौन?
साँस चलती है किसकी
कहता है कौन ऊँची छाती कर, मैं हूँ–
– मैं हूँ मेवाड़ मैं,
अरावली-शृंग-सा समुन्नत सिर किस का ?
बोलो, कोई बोलो–अरे, क्या तुम सब मृत हो ?''
आह! इस खेवा की! –
कौन थामता है पतवार ऐसे अंधड़ में,
अन्धकार-पारावार गहन नियति-सा
उमड़ रहा है, ज्योति-रेखाहीन - क्षुब्ध हो।
खींच ले चला है –
काल-धीवर अनन्त में
साँस-सफरी-सी अटकी है किसकी आशा में?
आज भी पेशोला के
तरल जल-मण्डलों में
वही शब्द घूमता-सा
गूँजता विकल है;
किन्तु वह ध्वनि कहाँ!
गौरव-सी काया पड़ी माया है प्रताप की
वही मेवाड़!
किन्तु आज प्रतिध्वनि कहाँ ?''

कठिन शब्द–

निर्धूम – बिना धुँए के / विकल – व्याकुल, बेचैन / प्रवर्तनों – नवाचारों / आहुतियाँ – हवन सामग्री / निरवलम्ब–सा – बेसहारा–सा, आधारहीन / उर्मियाँ – लहरें / धूसर – धूल सने / दुन्दुभि – नगाड़ा, डंका, धौंसा / तूर्य – सींग से बना बाजा / निकष – कसौटी / शृंग – शिखर, चोटी / खेवा – नाव / गहन नियति – दुर्भाग्य / सफरी – मछली / विवर्तनों – घुमावों, चक्करों / विरल – मन्द, कम / व्योम – आकाश, नभ / अजस्र – निरन्तर, अपार / वदान्यता – उदारता / दग्ध अवसाद – दुःख में जलते हुए / विजन – वीरान, सुनसान / मृदंग – ढोल / प्रलयोल्का – प्रलयकारी पत्थर या बिजली / दृप्त फूत्कार – प्रखर

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

या तेजयुक्त फुफकार/ समुन्नत – ऊँचा/ पारावार – समुद्र/ धीवर – नाविक।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. 'पेशोला की प्रतिध्वनि' कविता किस काव्य संग्रह में संगृहीत है ?
   (क) कानन कुसुम (ख) लहर
   (ग) झरना (घ) चित्राधार ( )
2. कवि ने 'पेशोला' किसे कहा है ?
   (क) अन्नासागर को (ख) जयसमन्द को
   (ग) उदयसागर झील को (घ) पिछोला झील को ( )
3. कविता में 'गहन नियति-सा' किसके लिए प्रयुक्त हुआ है ?
   (क) सौभाग्य के लिए (ख) दुर्भाग्य के लिए
   (ग) डूबने के लिए (घ) गहराई के लिए ( )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. 'पेशोला झील' कहाँ स्थित है ?
2. गौरव-सी काया किसकी पड़ी है ?
3. साँस आशा में किसकी तरह लटकी हुई है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. कवि लोगों को मृत क्यों मान रहा है ?
2. कवि दुर्बलताओं के लिए कसौटी किसे मानता है ?
3. पेशोला झील में बने महलों के प्रतिबिम्ब विषाद के शिल्प बने हुए क्यों लगते हैं ?
4. दुन्दुभि-मृदंग-तूर्य शान्त-सब मौन हैं।
   फिर भी पुकार-सी है गूँज रही व्योम में।।" उक्त पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए।
5. खेवा की पतवार कौन खींच रहा है और कहाँ ले जा रहा है ?

निबंधात्मक प्रश्न –

1. 'पेशोला की प्रतिध्वनि' कविता का मूल भाव लिखिए।
2. पठित कविता के आधार पर प्रसाद के काव्य और व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।
3. कविता में आए निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –
   (क) दुर्बलता इस अस्थि .... दृप्त फुत्कार से ?
   (ख) आह! इस खेवा .... किसकी आशा में ?

•••

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

10. रामधारी सिंह दिनकर

कवि परिचय —

हिन्दी के ख्याति प्राप्त कवि रामधारी सिंह दिनकर का जन्म 23 सितम्बर, 1908 ई. में सिमरिया, मुंगेर (बिहार) में एक सामान्य कृषक परिवार में हुआ। इनके पिता रवि सिंह एवं माता मनरूप देवी थी। दिनकर जब दो वर्ष के ही थे कि इनके पिता का स्वर्गवास हो गया। फलतः दिनकर और इनके भाई-बहनों का पालन-पोषण उनकी माता द्वारा किया गया। इनका बचपन एवं कैशोर्य देहात में बीता, जिससे वास्तविक जीवन की कठोरता से सामना हुआ। आपने प्राथमिक शिक्षा गाँव के प्राथमिक विद्यालय से प्राप्त की। मिडिल तक की शिक्षा 'राष्ट्रीय मिडिल स्कूल' में प्राप्त की। यह स्कूल उस समय सरकारी व्यवस्था (विदेशी-सरकार) के विरोध में खोला गया था। शायद यहीं से दिनकर के मन और मस्तिष्क में राष्ट्रीयता की भावना का विकास प्रारम्भ हुआ। हाई स्कूल शिक्षा 'मोकामाघाट हाई स्कूल' से पूरी की। इस समय तक इनका विवाह भी हो चुका था और ये एक पुत्र के पिता भी बन गए थे। 1928 में मैट्रिक के बाद पटना विश्वविद्यालय से 1932 में इतिहास विषय के साथ बी.ए. ऑनर्स किया। तत्पश्चात् कुछ समय प्रधानाध्यापक रहने के बाद बिहार सरकार में 'सब-रजिस्ट्रार' के पद पर रहे। इस पद पर लगभग 9 वर्ष तक रहे एवं बिहार की पीड़ित अवस्था को समझा। आप विश्वविद्यालय के व्याख्याता रहे तो कुलपति भी रहे। 1952 से बारह वर्ष तक आप राज्य सभा के सदस्य रहे। सन् 1965 से 1971 तक भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार रहे।

रचना-संसार —

दिनकर के कवि जीवन का वास्तविक प्रारम्भ सन् 1935 में हुआ जब 'रेणुका' प्रकाशित हुई। इनकी आरम्भिक रचनाएँ आत्ममंथन की रचनाएँ कहलाती हैं। कवि इनमें स्वयं को पहचान कर नया मार्ग बनाने की कोशिश करता है। दिनकरजी की पद्य रचनाओं में 'रेणुका', 'हुंकार', 'रसवन्ती', 'नील कुसुम', 'कुरुक्षेत्र', 'रश्मिरथी', 'उर्वशी', 'द्वन्द्वगीत', 'इतिहास के आँसू', 'सीपी और शंख', 'नीम के पत्ते', 'नये सुभाषित', 'आत्मा की आँखें', 'बापू', 'दिल्ली', 'प्रणभंग', 'धूप और धुँआ', 'चक्रवात' और 'परशुराम की प्रतीक्षा' आदि प्रसिद्ध रही हैं। 'द्वन्द्वगीत' रुबाइयों का संग्रह है।

पद्य के अतिरिक्त दिनकर ने गद्य में भी उच्च स्तरीय साहित्य की रचना की है। उनमें 'संस्कृति के चार अध्याय', 'मिट्टी की ओर', 'काव्य की भूमिका', 'पंत, प्रसाद और मैथिलीशरण', 'हमारी सांस्कृतिक कहानी' एवं 'शुद्ध कविता की खोज' आदि प्रमुख हैं। **बाल साहित्य-संग्रह** — 1. मिर्च का मजा, 2. सूरज का ब्याह।

दिनकर के काव्य में एक सामाजिक चेतना हमेशा विद्यमान रही है। राष्ट्रीय भावना जिसका मूल तत्त्व है। राजनीतिक विषय इनकी कविताओं में ज्वलंत रूप से रहे हैं। दिनकर ने पद्य के अतिरिक्त अन्य विधाओं में भी लिखा है। दिनकर की रचनाओं में इनके व्यक्तित्व की छाप स्पष्ट दिखती है। इनकी कविताएँ मूलतः ओज और तेज की कविताएँ हैं, जिनमें सुप्त और कायर व्यक्ति को जगाने की क्षमता है जो मन में जोश भर देती हैं। अन्यायी एवं अत्याचारी का खुला विरोध मिलता है। असमानता, भेदभाव एवं शोषण के

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

खिलाफ रणभेरी बजती रहती है। इन सबके उपरांत भी इनके काव्य में सांस्कृतिक चिन्तन-मनन की प्रक्रिया जारी रहती है। दिनकर अन्यायियों के दुश्मन; तो दब-कुचले के परम हितैषी दिखाई देते हैं। इन्हें 'भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार', 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' एवं पद्मभूषण से भी सम्मानित किया गया है।

पाठ परिचय –

इस पाठ में दिनकर द्वारा रचित 'कुरुक्षेत्र' काव्य का 'तृतीय सर्ग' का संकलित अंश लिया गया है। 'कुरुक्षेत्र' में कवि 'महाभारत' महाकाव्य के पौराणिक पात्रों के माध्यम से युद्ध एवं शान्ति के सम्बन्ध में प्रश्न उठाता है। यहाँ प्रस्तुत 'तृतीय सर्ग' के संकलित अंश में भीष्म व युधिष्ठिर के मध्य संवाद चल रहा है। युधिष्ठिर स्वयं को दोषी मानकर युद्ध से विमुख हो रहे हैं। भीष्म उनसे प्रश्नोत्तर के माध्यम से यह बता रहे हैं कि छल, कपट एवं धोखे से बनाई गई शान्ति, शान्ति नहीं होती है बल्कि यह तो युद्ध की दबी हुई चिनगारी है। साथ ही यह भी कहते हैं कि युद्ध का असली दोषी कौन होता है ? वह जो कि अन्याय के विरुद्ध न्याय हेतु हथियार उठाता है या फिर वह जो अन्याय और ताकत से कृत्रिम शान्ति थोपने का प्रयास करता है। भीष्म तरह-तरह के तर्कों से युधिष्ठिर को समझाते हैं। यही कविता का संदेश है कि यदि हम सही हैं तो अन्याय का विरोध युद्ध तक जाकर कर सकते हैं। यद्यपि युद्ध निंद्य है परन्तु अन्यायपूर्ण शान्ति से वह ठीक है।

मूल पाठ –

कुरुक्षेत्र

(तृतीय सर्ग का संकलित अंश)

समर निंद्य है धर्मराज, पर,
कहो, शांति वह क्या है,
जो अनीति पर स्थित होकर भी
बनी हुई सरला है ?

सुख-समृद्धि का विपुल कोष
संचित कर कल, बल, छल से,
किसी क्षुधित का ग्रास छीन,
धन लूट किसी निर्बल से।

सब समेट, प्रहरी बिठला कर
कहती कुछ मत बोलो,
शन्ति-सुधा बह रही, न इसमें
गरल क्रान्ति का घोलो।

हिलो-डुलो मत, हृदय-रक्त
अपना मुझको पीने दो,
अचल रहे साम्राज्य शान्ति का,

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

जियो और जीने दो।
सच है, सत्ता सिमट–सिमट
जिनके हाथों में आयी,
शान्तिभक्त वे साधु पुरुष
क्यों चाहें कभी लड़ाई ?
सुख का सम्यक्-रूप विभाजन
जहाँ नीति से, नय से
संभव नहीं; अशान्ति दबी हो
जहाँ खड्ग के भय से,
जहाँ पालते हों अनीति-पद्धति
को सत्ताधारी,
जहाँ सूत्रधर हों समाज के
अन्यायी, अविचारी;
नीतियुक्त प्रस्ताव सन्धि के
जहाँ न आदर पायें;
जहाँ सत्य कहने वालों के
सीस उतारे जायें;
जहाँ खड्ग-बल एकमात्र
आधार बने शासन का;
दबे क्रोध से भभक रहा हो
हृदय जहाँ जन-जन का;
सहते-सहते अनय जहाँ
मर रहा मनुज का मन हो;
समझ कापुरुष अपने को
धिक्कार रहा जन-जन हो;
अहंकार के साथ घृणा का
जहाँ द्वन्द्वहो जारी;
ऊपर शान्ति, तलातल में
हो छिटक रही चिनगारी;
आगामी विस्फोट काल के
मुख पर दमक रहा हो;

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

इंगित में अंगार विवश
भावों के चमक रहा हो;
पढ़कर भी संकेत सजग हों
किन्तु, न सत्ताधारी;
दुर्मति और अनल में दें
आहुतियाँ बारी-बारी;
कभी नये शोषण से, कभी
उपेक्षा, कभी दमन से,
अपमानों से कभी, कभी
शर-वेधक व्यंग्य—वचन से।
दबे हुए आवेग वहाँ यदि
उबल किसी दिन फूटें,
संयम छोड़, काल बन मानव
अन्यायी पर टूटें;
कहो कौन दायी होगा
उस दारुण जगद्दहन का
अहंकार या घृणा ? कौन
दोषी होगा उस रण का ?
तुम विषण्ण हो समझ
हुआ जगदाह तुम्हारे कर से।
सोचो तो, क्या अग्नि समर की
बरसी थी अम्बर से ?
अथवा अकस्मात् मिट्टी से
फूटी थी यह ज्वाला ?
या मंत्रों के बल से जनमी
थी यह शिखा कराला ?
कुरुक्षेत्र के पूर्व नहीं क्या
समर लगा था चलने ?
प्रतिहिंसा का दीप भयानक
हृदय-हृदय में बलने ?
शान्ति खोलकर खड्ग क्रान्ति का

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

जब वर्जन करती है,
तभी जान लो, किसी समर का
वह सर्जन करती है।
शान्ति नहीं तब तक, जब तक
सुख-भाग न नर का सम हो,
नहीं किसी को बहुत अधिक हो,
नहीं किसी को कम हो।
ऐसी शान्ति राज्य करती है
तन पर नहीं, हृदय पर,
नर के ऊँचे विश्वासों पर,
श्रद्धा, भक्ति, प्रणय पर।
न्याय शान्ति का प्रथम न्यास है,
जब तक न्याय न आता,
जैसा भी हो, महल शान्ति का
सुदृढ़ नहीं रह पाता।
कृत्रिम शांति सशंक आप
अपने से ही डरती है,
खड्ग छोड़ विश्वास किसी का
कभी नहीं करती है।
और जिन्हें इस शान्ति-व्यवस्था
में सुख-भोग सुलभ है,
उनके लिए शान्ति ही जीवन—
सार, सिद्धि दुर्लभ है।
पर जिनकी अस्थियाँ चबाकर,
शोणित पीकर तन का,
जीती है यह शान्ति, दाह
समझो कुछ उनके मन का।
स्वत्व माँगने से न मिले,
संघात पाप हो जायें,
बोलो धर्मराज, शोषित वे
जियें या कि मिट जायें ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

न्यायोचित अधिकार माँगने
से न मिले, तो लड़ के,
तेजस्वी छीनते समर को
जीत, या कि खुद मरके।
किसने कहा, पाप है समुचित
स्वत्व-प्राप्ति-हित लड़ना ?
उठा न्याय का खड्ग समर में
अभय मारना-मरना?
क्षमा, दया, तप, तेज, मनोबल
की दे वृथा दुहाई,
धर्मराज व्यंजित करते तुम
मानव की कदराई।
हिंसा का आघात तपस्या ने
कब, कहाँ सहा है?
देवों का दल सदा दानवों
से हारता रहा है।
मनःशक्ति प्यारी थी तुमको
यदि पौरुष ज्वलन से,
लोभ किया क्यों भरत-राज्य का?
फिर आये क्यों वन से ?
पिया भीम ने विष, लाक्षागृह
जला, हुए वनवासी,
केशकर्षिता प्रिया सभा-सम्मुख
कहलायी दासी।
क्षमा, दया, तप, त्याग, मनोबल,
सबका लिया सहारा;
पर नर-व्याघ्र सुयोधन तुमसे
कहो, कहाँ कब हारा?
क्षमाशील हो रिपु-समक्ष
तुम हुए विनत जितना ही,
दुष्ट कौरवों ने तुमको

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कायर समझा उतना ही।
अत्याचार सहन करने का
कुफल यही होता है,
पौरुष का आतंक मनुज
कोमल होकर खोता है।
क्षमा शोभती उस भुजंग को,
जिसके पास गरल हो।
उसको क्या, जो दन्तहीन,
विषरहित, विनीत, सरल हो ?
तीन दिवस तक पन्थ माँगते
रघुपति सिन्धु-किनारे,
बैठे पढ़ते रहे छन्द
अनुनय के प्यारे-प्यारे।
उत्तर में जब एक नाद भी
उठा नहीं सागर से,
उठी अधीर धधक पौरुष की
आग राम के शर से।
सिन्धु देह धर 'त्राहि-त्राहि'
करता आ गिरा शरण में,
चरण पूज, दासता ग्रहण की,
बँधा मूढ़ बन्धन में।
सच पूछो, तो शर में ही
बसती है दीप्ति विनय की,
सन्धि-वचन संपूज्य उसी का
जिसमें शक्ति विजय की।
सहनशीलता, क्षमा, दया को
तभी पूजता जग है,
बल का दर्प चमकता उसके
पीछे जब जगमग है।
जहाँ नहीं सामर्थ्य शोध की,
क्षमा वहाँ निष्फल है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

गरल–घूँट पी जाने का
मिस है, वाणी का छल है।

•••

शब्दार्थ –

समर – युद्ध / विपुल – अगाध, अधिक / कल – यंत्र / प्रहरी – पहरेदार / गरल – विष, जहर / नय – नीतिपूर्वक, न्यायपूर्वक / सूत्रधर – नियंत्रित करने वाला / अनय – अन्याय / इंगित – संकेत, इशारा, मन का भाव / शर – वेधक, बाण / जगद्दहन – संसार की आग / बलने – जलने / सर्जन – रचना, उत्पादन, जन्म देना, नव निर्माण / न्यास – धरोहर, थाती, किसी को विश्वासपूर्वक सौंपी गई थाती / सार – तत्त्व, निष्कर्ष, तात्पर्य, किसी पदार्थ का मूल भाग / शोणित – खून, रक्त, रुधिर, रक्त वर्ण / वृथा – व्यर्थ, बेकार, निरर्थक, मूर्खतापूर्ण / कदराई – कायरता, कायरपन / लाक्षागृह – लाख से बना घर / नर–व्याघ्र – नर रूपी बाघ / भुजंग – साँप / सिन्धु – सागर, समुद्र / दीप्ति – चमक, छटा, प्रकाश, काँति, प्रभा, द्युति। निंद्य – निंदनीय, निंदा योग्य / कोष – खजाना / क्षुधित – भूखा / सुधा – अमृत / सम्यक् – ठीक, उचित, समान / खड्ग – तलवार / भभक – भड़क जाना, भभकने की अवस्था / तलातल – नीच–नीचे, सात पाताल लोकों में से एक / दुर्गति – दुर्दशा, कुपरिस्थिति / आवेग – प्रबल मनोवेग / शिखा कराला – भयानक / अग्नि ज्वाला / वर्जन – निषेध, मनाही, त्याग / प्रणय – प्रेम, प्यार, अनुराग / सुलभ – सहज, सुगम, आसानी से प्राप्त होने वाला / सिद्धि – निपुणता, दक्षता, कार्य पूरा होना, सम्पन्नता / संघात – आघात, टक्कर, हत्या / व्यंजित – जिसकी व्यंजना की गई हो, संकेतित / पौरुष – साहस, शौर्य, पुरुषार्थ / केशकर्षिता – जिसके बाल खींचे गये हों, द्रौपदी / रिपु – शत्रु, दुश्मन / नाद – ध्वनि, आवाज, गंभीर ध्वनि / त्राहि–त्राहि – आर्तनाद, चीत्कार, रक्षा के लिए पुकारना।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. 'कुरुक्षेत्र' काव्य के अनुसार शान्ति का प्रथम न्यास है ?
   (क) अन्याय (ख) न्याय
   (ग) द्वेष (घ) ईर्ष्या ( )
2. कवि ने नर-व्याघ्र किसे कहा है ?
   (क) कर्ण को (ख) भीम को
   (ग) दुर्योधन (सुयोधन) को (घ) अर्जुन को ( )
3. राम तीन दिन तक सागर से क्या माँगते रहे ?
   (क) अनाज (ख) रास्ता
   (ग) कपड़े (घ) हथियार ( )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. लोग किस भुजंग से डरते हैं ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2. विनय की दीप्ति किसमें बसती है ?

3. सहिष्णुता किसके लिए अभिशाप है ?

4. आज की कृत्रिम शान्ति किसकी रखवाली करती है ?

5. वास्तव में युद्ध करने के लिए दोषी कौन है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. कृत्रिम शांति किससे डरती है और क्यों ?

2. न्यायोचित अधिकार यदि माँगने से न मिले तो वीर लोग क्या करते हैं ?

3. अत्याचार सहन करने का कुफल क्या होता है ?

4. क्षमा किस पुरुष को शोभती है ?

5. 'भय बिनु होय न प्रीति' तुलसी की इन पंक्तियों के समकक्ष पाठ में आई पंक्तियों को चुनिए।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. बिना शक्ति के क्षमाशील होने के क्या परिणाम होते हैं ? पाठ के आधार पर विवेचना कीजिए।

2. पाठ के आधार पर शान्ति और युद्ध पर अपने विचार स्पष्ट कीजिए।

3. **निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–**

   (क) सच है सत्ता सिमट .... खड्ग के भय से,

   (ख) शान्ति नहीं तब तक .... श्रद्धा, भक्ति, प्रणय पर।

   (ग) स्वत्व माँगने से न ....या कि खुद मरके।

   (घ) क्षमा शोभती उस भुजंग ....अनुनय प्यारे-प्यारे।

•••

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

11. सुमित्रानन्दन पंत

कवि परिचय –

कवि सुमित्रानन्दन पंत का जन्म उत्तराखण्ड के जिला अल्मोड़ा के गाँव कौसानी में हुआ। जन्म के छः घण्टे बाद ही माता का निधन हो गया। इनका प्रारम्भिक नाम गुसाईदत्त रखा गया। प्रारम्भिक शिक्षा अल्मोड़ा में हुई। 1918 में मँझले भाई के साथ काशी आकर क्वींस कॉलेज से माध्यमिक परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् आप इलाहाबाद आ गए। बाद में इन्होंने अपना नाम सुमित्रानन्दन पंत रख लिया। 1921 में असहयोग आंदोलन एवं महात्मा गांधी के प्रभाव से महाविद्यालय छोड़ दिया और घर पर ही हिन्दी, संस्कृत, अँग्रेजी और बंगला का अध्ययन करने लगे। इन्होंने इलाहाबाद आकाशवाणी में शुरूआती दिनों में सलाहकार के रूप में भी कार्य किया। अल्मोड़ा की प्राकृतिक सुषमा बचपन से ही पंतजी को प्रभावित करती रही, जिसका प्रभाव उन पर जीवनभर रहा।

चौथी कक्षा से ही पंतजी ने कविता लिखना प्रारम्भ कर दिया था। 1916 में लिखी 'गिरजे का घण्टा' शीर्षक कविता उनकी प्रथम कविता मानी जाती है। कवि की रचना यात्रा को चार चरणों में बाँटा जा सकता है। **प्रथम-चरण** – 'उच्छ्वास' से लेकर 'गुंजन' तक की कविता, भाव एवं सौन्दर्य चेतना से भरपूर हैं। गुंजन काल की रचनाओं में जीवन-विकास के सत्य पर पंत का अटल विश्वास झलकता है। प्रमुख संग्रह 'उच्छ्वास' (1920 ई०), 'ग्रन्थि' (1920ई०), 'वीणा' (1927 ई०), 'पल्लव' (1928 ई०), और 'गुंजन' (1932 ई०) हैं।

द्वितीय-चरण – इसमें कवि की कविताएँ नवीन जीवन तथा युग-परिवर्तन की धारणा को सामाजिक रूप देने की कोशिश करती दिखाई देती है। कविताओं पर प्रगतिवाद एवं मार्क्सवाद का प्रभाव दिखाई देता है। इस चरण की कृतियाँ हैं – (1) 'युगान्त' 1936 (2) 'युगवाणी' 1939 (3) 'ग्राम्या' 1940। इसी दौरान आपने 'रूपाभ' नामक पत्र का भी सम्पादन किया।

तीसरा–चरण – पंत जैसे भावुक-मन कवि अधिक समय तक प्रगतिवाद और मार्क्सवाद की कठोर धारा में नहीं रह सके। वे पुनः अपनी मूल धारा के काव्य की रचना करने लगे। तृतीय चरण की रचनाओं में 'स्वर्ण किरण', 'स्वर्ण धूलि', 'युगपथ', 'अतिमा', 'उत्तरा' आदि शामिल हैं।

चौथा–चरण – 'कला और बूढ़ा चाँद' से लेकर 'लोकायतन' तक चौथे चरण में उनकी चेतना मानवतावाद की तरफ प्रवृत्त हुई। यहाँ कवि व्यक्ति और समाज के मध्य सामंजस्य स्थापित कर लोक-मंगल की कामना रखता है। 'चिदम्बरा' में इनकी कविताओं का संकलन है।

इस प्रकार से हम देखते हैं कि कवि रचनाओं के विकास क्रम में विचारों के विषय में परिवर्तनशील रहे हैं। यहाँ निराला और पंत में अन्तर स्पष्ट दिखता है कि निराला का परिवर्तन जहाँ एक दिशा विशेष की तरफ अग्रसर होता रहता है वहीं पंत के परिवर्तन में एक अस्थिरता एवं अनिश्चितता है। कुछ भी हो पंत एक प्रकृति के चितेरे कवि रहे हैं। उन्होंने भारतीय काव्य जगत में बँधी–बँधाई लीक से हटकर उसे एक नई दिशा प्रदान की है। पंत की कविताओं में निम्नलिखित विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं – प्रकृति एवं सौन्दर्य

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

से अभिभूत कर देने वाले चित्र। रचनाओं में सर्वप्रथम कला उसके उपरान्त विचार एवं अन्त में भावों का स्थान रहता है। शिल्प को अधिक महत्व दिया है। अलंकृत एवं चित्रमयी भाषा का प्रयोग। दूसरे चरण की कविता में प्रगतिवादी प्रभाव। उनके काव्य में विषय एवं शैलीगत गतिशीलता विद्यमान रही हैं। भौतिकवाद व अध्यात्मवाद के समन्वय का प्रयास। रूपों एवं प्रतीकों का प्रयोग।

पंतजी को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, यथा – पद्मभूषण (1961), ज्ञानपीठ (1968), साहित्य अकादमी तथा सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार।

पाठ परिचय –

इस अध्याय में कवि पंत की दो कविताओं को लिया गया है। प्रथम कविता 'भारत माता' 'ग्राम्य' नामक कविता संग्रह से ली गई है। इसमें स्वतंत्रता से पूर्व के ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण है। ग्रामीण जीवन दरिद्रता के अभिशाप से ग्रस्त है। कवि ने प्रतीक रूप में भारतमाता को ग्रामवासिनी बताकर भारत की दुर्दशा का वर्णन किया है। परन्तु कवि निराश न होकर आशा से भरपूर रहता है।

दूसरी कविता 'धरती कितना देती है' पंत के भाग्यवादी दर्शन पर आधारित है। इसमें कवि स्पष्ट रूप से कहता है कि जैसा कर्म होगा वैसा ही फल प्राप्त होगा। अतः व्यक्ति को स्वार्थ एवं लोभ के वशीभूत होकर कोई ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जिसका परिणाम अच्छा न हो।

मूल पाठ –

भारत माता

भारत माता
ग्रामवासिनी!
खेतों में फैला है श्यामल,
धूल भरा मैला सा आँचल,
गंगा यमुना में आँसू जल,
मिट्‌टी की प्रतिमा
उदासिनी!
दैन्य जड़ित अपलक नत चितवन,
अधरों में चिर नीरव रोदन,
युग–युग के तम से विषण्ण मन,
वह अपने घर में
प्रवासिनी!
तीस कोटि संतान नग्न तन,
अर्ध क्षुधित, शोषित, निरस्त्र जन,
मूढ़, असभ्य, अशिक्षित, निर्धन,

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

नत–मस्तक
तरु तल निवासिनी!
स्वर्ण शस्य पर-पदतल लुंठित,
धरती सा सहिष्णु मन कुंठित,
क्रंदन कंपित अधर मौन स्मित,
राहु-ग्रसित
शरदेन्दु हासिनी!
चिंतित भृकुटि-क्षितिज तिमिरांकित,
नमित नयन नभ वाष्पाच्छादित,
आनन श्री छाया शशि उपमित,
ज्ञान मूढ़
गीता प्रकाशिनी!
सफल आज उसका तप संयम,
पिला अंहिसा स्तन्य सुधोपम,
हरती जन-मन-भय, भव-तम-श्रम,
जग जननी
जीवन विकासिनी!
भारतमाता
ग्रामवासिनी।

धरती कितना देती है

आः, धरती कितना देती है।
मैंने छुटपन में छिपकर पैसे बोए थे,
सोचा था पैसों के प्यारे पेड़ उगेंगे,
रुपयों की कलदार मधुर फसलें खनकेंगी,
और फूल फलकर मैं मोटा सेठ बनूँगा।
पर बंजर धरती में एक न अंकुर फूटा,
बंध्या मिट्टी ने न एक भी पैसा उगला।
सपने जाने कहाँ मिटे, कब धूल हो गए।
मैं हताश हो, बाट जोहता रहा दिनों तक,
बाल कल्पना के अपलक पाँवड़े बिछाकर।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मैं अबोध था, मैंने गलत बीज बोये थे,
ममता को रोपा था, तृष्णा को सींचा था।
अर्धशती हहराती निकल गई तब से,
कितने ही मधु पतझर बीत गए अनजाने,
ग्रीष्म तपे, वर्षा फूली, शरदें मुसकाईं,
सी-सी कर हेमन्त कँपे, तरु झरे खिले वन,
औ, जब फिर से गाढ़ी ऊदी लालसा लिए,
गहरे कजरारे बादल बरसे धरती पर,
मैंने कोतूहलवश आँगन के कोने की
गीली तह में यों ही उँगली से सहलाकर,
बीज सेम के दबा दिये मिट्टी के नीचे।
भू के अंचल में मणि-माणिक बाँध दिए हों।
मैं फिर भूल गया इस छोटी सी घटना को,
और बात भी क्या थी याद जिसे रखता मन!
किन्तु, एक दिन जब मैं संध्या को आँगन में
टहल रहा था,– तब सहसा मैंने जो देखा।
उससे हर्ष–विमूढ़ हो उठा मैं विस्मय से!
देखा-आँगन के कोने में कई नवागत
छोटा-छोटा छाता ताने खड़े हुए हैं।
छाता कहूँ कि विजय–पताकाएँ जीवन की,
या हथेलियाँ, खोले थे वे नन्हीं प्यारी–
जो भी हो, वे हरे-हरे उल्लास से भरे
पंख मार कर उड़ने को उत्सुक लगते थे
डिम्ब तोड़कर निकले चिड़ियों के बच्चों से!
निर्निमेष, क्षण भर मैं उनको रहा देखता–
सहसा मुझे स्मरण हो आया-कुछ दिन पहले
बीज सेम के रोपे थे मैंने आँगन में,
और उन्हीं से बौने पौधों की यह पलटन
मेरी आँखों के सम्मुख अब खड़ी गर्व से
नन्हें नाटे पैर पटक, बढ़ती जाती है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तब मैं उनको रहा देखता, धीरे-धीरे।
अनगिनत पत्तों से लद, भर गईं झाड़ियाँ,
हरे-भरे टँग गए कई मखमली चँदोवे।
बेलें फैल गईं बल खा आँगन में लहरा,
और सहारा लेकर बाड़े सी टट्टी का
हरे-हरे सौ झरने फूट पड़े ऊपर को।
मैं अवाक् रह गया– वंश कैसे बढ़ता है!
छोटे, तारों-से छितरे, फूलों के छींटे
झागों-से लिपटे लहरी श्यामल लतरों पर
सुन्दर लगते थे, मावस के हँसमुख नभ-से
चोटी के मोती-से, आँचल के बूटों-से,
ओह, समय पर उनमें कितनी फलियाँ टूटीं।
कितनी सारी फलियाँ, कितनी प्यारी फलियाँ–
पतली चौड़ी कलियाँ, उफ उनकी क्या गिनती!
लम्बी-लम्बी अंगुलियों सी, नन्हीं नन्हीं
तलवारों-सी, पन्ने के प्यारे हारों-सी,
झूठ न समझें, चन्द्रकलाओं-सी नित बढ़तीं,
सच्चे मोती की लड़ियों सी, ढेर-ढेर खिल
झुण्ड-झुण्ड झिलमिल कर कचपचिया तारों-सी,
आः, इतनी फलियाँ टूटीं, जाड़ों भर खाईं,
सुबो शाम वे घर-घर पकीं, पड़ोस पास के
जाने अनजाने सब लोगों में बँटवाई,
बंधु-बांधवों, मित्रों, अभ्यागत मँगतों ने,
जी भर-भर दिन-रात मुहल्ले भर ने खाईं।
कितनी सारी फलियाँ, कितनी सारी फलियाँ।
यह धरती कितना देती है, धरती माता
कितना देती है अपने प्यारे पुत्रों को!
नहीं समझ पाया था मैं उसके महत्व को,
बचपन में निज स्वार्थ लोभवश पैसे बोकर।
रत्न-प्रसविनी है वसुधा अब समझ सका हूँ।
इसमें सच्ची ममता के दाने बोने हैं

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

इसमें जन की क्षमता के दाने बोने हैं
इसमें मानवता ममता के दाने बोने हैं
जिससे उगल सके फिर धूलि सुनहरी फसलें।
मानवता के जीवन श्रम से हँसें दिशाएँ।
हम जैसा बोयेंगे वैसा ही पायेंगे।

शब्दार्थ –

भारतमाता –

श्यामल – काला/ मिट्टी की प्रतिमा – दरिद्रता की मूर्ति/ नत–चितवन – झुकी हुई दृष्टि/ रोदन – रोना/ विषण्ण – दुःखी, शोकमग्न/ कोटि – करोड़/ अर्ध क्षुधित – आधे भूखे/ नत–मस्तक – झुके हुए सिर वाला/ स्वर्ण शस्य – सोने के समान मूल्यवान/ पदतल लुंठित – पैरों के नीचे लुढ़का हुआ/ क्रंदन – विलाप, रोना/ स्मित – मुस्कराहट, मुस्कान/ शरदेन्दु – शरद ऋतु का चन्द्रमा/ क्षितिज – जहाँ धरती और आकाश के मिलने का आभास होता है, देखने की सीमा/ तिमिर – अंधकार, निराशा/ भृकुटि – भौंहे, भौं/ उपमित – तुलना किया हुआ/ सुधोपम – अमृत जैसा/ आँसू जल – करुणा के आँसू/ उदासिनी –दुखिया/ नीरव – मूक, चुपचाप, शांत/ तम – अंधकार/ प्रवासिनी – देश से बाहर रहने वाली/ (यहाँ अर्थ – बिना अधिकार वाली होगा)/ निरस्त्र – शस्त्र रहित, निहत्थे/ मूढ़ – अज्ञानी/ तरुतल – पेड़ों के नीचे/ पर – दूसरा/ कुंठित – निराश/ अधर – होठ/ राहुग्रसित – विदेशी शासकों के अधीन/ हासिनी – कांति, चाँदनी, रोशनी/ वाष्पाच्छादित – भाप से ढके हुए, अश्रुयुक्त/ आनन – मुख, चेहरा/ भव – संसार/ हरती – दूर करती, मिटाती।

धरती कितना देती है –

कलदार – मशीन से ढला हुआ सिक्का, रुपया/ फूल फलकर – विकसित होकर/ अंकुर – बीज से निकलता नया पौधा/ हताश – निराश, जिसकी आशा नष्ट हो गई हो, दुःखी/अबोध–नासमझ/हहराती – डरती हुई, खुशीपूर्वक, उत्साहपूर्वक/ शरदें – एक ऋतु का नाम जो क्वार से कार्तिक महीने तक रहती है/ ऊदी – काला–बैंगनी रंग/ कोतूहलवश – उत्सुकता के कारण/ मणि–माणिक – बहुमूल्य रत्न/ विस्मय – आश्चर्य, अचम्भा/ डिम्ब – अण्डा/ पलटन – फौज, सैनिकों का समूह/ चँदोवे – छोटे शामियाने, छोटे तम्बू/ झरने – पर्वत आदि से नीचे गिरती जलधारा/ लतरों – बेलों, लताओं/ कचपचिया – पूर्व की ओर दिखाई देने वाले कृतिका नक्षत्र के तारों का समूह/प्रसविनी – जन्म देने वाली, उत्पन्न करने वाली/ अभ्यागत – अतिथि, मेहमान/ खनकेंगी – रुपयों की आवाज आएगी/ बंजर – ऐसी धरती जिस पर कुछ भी पैदा न हो/ बंध्या – ऐसी स्त्री या गाय जिसके बच्चे न होते हों, बाँझ/ पाँवड़े – आदरणीय व्यक्ति के सम्मान हेतु पैरों के नीचे बिछाया जाने वाला कपड़ा, पायंदान/ अर्द्धशती – आधी शताब्दी, आधा जीवन/ मधु – बसन्त ऋतु/ हेमन्त – एक ऋतु जो मार्गशीर्ष और पौष महीने में पड़ती है/ कजरारे – काजल लगे हुए, काले, काजल जैसे/ सेम – एक फली जो सब्जी के काम आती है/ हर्ष–विमूढ़ – खुशी से बेसुध/ पताकाएँ – झण्डे, ध्वज/ निर्निमेष – अपलक देखना, टकटकी लगाकर/ झाड़ियाँ – कंटीले पौधों का समूह/ बाड़े सी

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ट्टटी – बेल चढ़ाने हेतु काम आने वाली बाड़ या दीवार / अवाक् – स्तब्ध, आश्चर्य चकित होना, जिसमें मुख से आवाज न निकले / पन्ने – हरे रंग के प्रसिद्ध रत्न / ममता – माँ का संतान के प्रति प्यार या स्नेह।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. भारतमाता है–

   (क) ग्राम-वासिनी (ख) नगर-वासिनी
   (ग) पाताल-वासिनी (घ) महल-वासिनी ( )

2. कविता लिखते समय भारतमाता की संतानों की संख्या कितनी थी–

   (क) 20 करोड़ (ख) 30 करोड़
   (ग) 40 करोड़ (घ) 120 करोड़ ( )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. कविता में भारतमाता का आँचल कैसा दिखता है ?
2. भारतमाता को किसकी प्रकाशिनी बताया गया है ?
3. 'धरती कितना देती है' में कवि ने बचपन में क्या बोए थे ?
4. ऊपर बढ़ती बेलों की तुलना लेखक ने किससे की है ?
5. नए उगे सेम के पौधे कवि को कैसे लगे ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. पैसे बो कर कवि ने क्या कल्पना की ?
2. ग्रामवासिनी भारतमाता किस हालत में दिखती है ?
3. भारतमाता का संयम किस प्रकार से सफल रहा ?
4. कवि ने सेम की फलियाँ किस-किस को बाँटी ?
5. कवि लोभवश क्या नहीं समझ पाया था ?

निबंधात्मक प्रश्न –

1. भारतमाता की स्थिति कविता में कैसी है ? तथा क्यों है ?
2. पैसे एवं सेम की बिजाई के माध्यम से कवि कविता में क्या संदेश देना चाहते हैं ?
3. पंतजी के रचना-कर्म पर प्रकाश डालिए।
4. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

   (क) तीस कोटि .... शरदेन्दुहासिनी ?
   (ख) सफल आज .... जीवनविकासिनी।
   (ग) पर बंजर धरती .... तृष्णा को सींचा था।
   (घ) यह धरती कितना .... अब समझ सका हूँ।

•••

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

12. नरेश मेहता

कवि परिचय –

नरेश मेहता का जन्म 15 फरवरी सन् 1922 ई. में मध्यप्रदेश के मालवा क्षेत्र के शाजापुर कस्बे में हुआ। आपकी शिक्षा माधव कॉलेज, उज्जैन में हुई। स्नातकोत्तर उपाधि हिन्दी विषय के साथ बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से प्राप्त की। सन् 1942 में 'भारत छोड़ो आंदोलन' में सक्रिय रूप से भाग लिया। रेडियो इलाहाबाद में आप कार्यक्रम अधिकारी भी रहे। अज्ञेय द्वारा सम्पादित 'दूसरे तार सप्तक' के कवि के रूप में आप प्रतिष्ठित हुए। सन् 2000 में आपका निधन हो गया।

नरेश मेहता एक ऐसे कवि रहे हैं; जिन्होंने अपने कवित्व को सदैव मतवादी संकीर्णता से बचाए रखा है। यही कारण है कि उनकी कविताएँ आधुनिक होते हुए भी आधुनिकता का ढिंढोरा पीटते नजर नहीं आती। इनके द्वारा रचित काव्य संग्रह 'चैत्या', 'प्रवाद पर्व', 'अरण्या', 'पुरुष' आदि हैं। इसके अलावा भी आपकी अनेक काव्य रचनाएँ हैं। उनमें से प्रमुख काव्य कृतियाँ – 'बनपांखी सुनो', 'बोलने दो चीड़ को', 'मेरा समर्पित एकांत', 'उत्सवा', 'तुम मेरा मौन हो', 'संशय की एक रात', 'महाप्रस्थान' तथा 'शबरी' आदि हैं।

पद्य के साथ-साथ आपने महत्त्वपूर्ण गद्य रचनाएँ भी की हैं। इनके प्रमुख उपन्यासों में 'यह पथ बंधु था', 'धूमकेतु एक श्रुति', 'नदी यशस्वी है', 'दो एकांत', 'प्रथम फाल्गुन', 'डूबते मस्तूल' तथा 'उत्तर कथा' आदि हैं। इन उपन्यासों के अलावा दो कहानी संग्रह और दो एकांकी संग्रह भी प्रकाशित हुए हैं।

इनकी कविताएँ सरलता एवं सरसता लिए होती हैं। सरल, सीधे बिम्बों का प्रयोग तथा मानवीकरण, उपमा, रूपक और उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों की छटा इनके काव्य में दर्शनीय है। रागात्मकता, संवेदना एवं उदात्तता आदि सर्जना के मूल तत्त्वों का प्रयोग इनकी कविताओं की विशेषताएँ हैं। इनकी कविताओं में संस्कृतनिष्ठ भाषा का प्रयोग यथा स्थान मिलता है।

इंदौर से प्रकाशित होने वाले दैनिक 'चौथा संसार' का संपादन भी मेहता जी द्वारा किया गया। साहित्य अकादमी द्वारा इन्हें सन् 1988 में पुरस्कृत किया गया। इन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार भी सन् 1992 में दिया गया।

पाठ परिचय –

इस अध्याय में नरेश मेहता की तीन छोटी-छोटी कविताएँ ली गई हैं। **'किरण-धेनुएँ'** कविता में कवि प्राकृतिक सौन्दर्य को अलौकिकता से दूर हटा कर जन-जीवन से जोड़ता है। छायावाद के कल्पना लोक से निकलकर लोगों के सामान्य जीवन के यथार्थ का चित्र खींचता है। प्रस्तुत कविता में सूर्योदय के प्राकृतिक सौन्दर्य में सुनहरी किरणें गाय की, सूर्य ग्वाले का, प्रातःकालीन बादल गायों के मुख से टपकते फेन के प्रतीक हैं। कवि की कविता का उद्देश्य स्वप्नलोक से निकल वास्तविक जगत् से परिचय कराना है।

दूसरी कविता 'विडम्बना' में मानव मन का तार्किक और वस्तुनिष्ठ विश्लेषण किया गया है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तिलस्मी पक्षी के प्रतीक के माध्यम से कवि यह बताना चाहता है कि हम यथार्थ में रहते हुए वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ सत्य तक पहुँचें। यदि भ्रम की स्थिति में रहते हुए गलत तर्कों के सहारे कोई निष्कर्ष निकालते हैं तो वह मानव के हित में नहीं होगा एवं सत्य कभी भी सामने नहीं आएगा।

तीसरी कविता 'एक बोध' में कवि आधुनिकता और प्राचीन संस्कारों के बीच अनिर्णय की स्थिति बहुत अच्छी तरह प्रस्तुत करता है। इस मशीनी युग से प्राचीन परम्पराओं एवं संस्कारों युक्त मानव जब जुड़ने की कोशिश करता है तो वह कुछ छूटा कुछ टूटा हुआ महसूस करता है। उसे अधूरेपन का अहसास होता है। यह मानव के लिए एक भयावह समस्या है कि मानव इस तथाकथित आधुनिकता को अपनाने के फेर में कहीं बीच रास्ते में ही भटक कर अपना अस्तित्व न खो दे।

मूल पाठ –

किरन-धेनुएँ

उदयाचल से किरन-धेनुएँ
हाँक ला रहा
वह प्रभात का ग्वाला।
पूँछ उठाये चली आ रही
क्षितिज-जंगलों से टोली
दिखा रहे पथ इस भू मा का
सारस सुना-सुना बोली
गिरता जाता फेन मुखों से
नभ में बादल बन तिरता
किरन-धेनुओं का समूह यह
आया अंधकार चरता।
नभ की आम्रछाँह में बैठा
बजा रहा वंशी रखवाला।
ग्वालिन सी ले दूब मधुर
वसुधा हँस-हँसकर गले मिली
चमका अपने अपने स्वर्ण-सींग वे
अब शैलों से उतर चलीं
बरस रहा आलोक-दूध है
खेतों खलिहानों में
जीवन की नव-किरन फूटती

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मकई के धानों में
सरिताओं में सोम दुह रहा
वह अहीर मतवाला।

विडम्बना

सत्य की शोध में
मैंने उस दिन अपने सम्पाती को भेजा
सूर्य ओर
और वह जाने किन आकाशों से
टूटकर लौट आया।
उसे विनेत्र देख
मैंने कहा
सत्य आग्नेय है।
उसे झुलसे देख
मैंने कहा
सत्य तेजस है।
उसे लौटे देख
मैंने कहा–
सत्य अप्राप्य है।
लोगों ने तपस्वी सम्पाती को नहीं
मुझे ऋषि कहा।

एक बोध

अब मिहिर सिर आ गया
तपने लगी यह रेत।
रह गए पीछे
जिनके कुन्तलों की छाँह में
हुआ सूर्योदय हमारा।
बहुत कुछ छूटा–
और टूटा भी,
हम असंगी
स्मरण-बैसाखी सहारे चल रहे।
रेत के पदचिह्न क्या ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ये ही हमारे लिए अनुधावित रहे
इनकी मैत्री क्या!
अब हमारे और उस छूटे विगत के बीच
सम्बन्ध है तो यह कि
हम प्रव्रजावसित हैं–
ऋतु अभिषेक सिर पर झेलते
भाल पर संकोच रेखा
विवशताएँ कण्ड में
अनागत यात्रा, सम्मुख तवे सी जल रही
हम आयु के अश्वत्थ
अपनी छाँह भी स्वीकार जिसको है नहीं।

शब्दार्थ –

किरण-धेनुएँ

उदयाचल – पूरब दिशा/ ग्वाला – गाय चराने वाला, सूर्य/ फेन – झाग/ वसुधा–धरती/ आलोक – प्रकाश, रोशनी/ सरिताओं – नदियों/ अहीर – पशु पालन एवं दूध का व्यवसाय करने वाली जाति/ किरण–धेनुएँ – किरण रूपी गायें/ भू मा – खेत, पृथ्वी/ हाँक ला रहा – गायों के पीछे रहकर उन्हें चला रहा/ शैलों – चट्टानों/ खलिहानों – वह स्थान जहाँ काटी हुई फसल रखी और माँडी जाए/ सोम – अमृत/मतवाला – गर्व से इतराता हुआ।

विडम्बना –

शोध – तलाश, खोज, नवीन अन्वेषण/ विनेत्र – अंधा/झुलसे – जले हुए/ तपस्वी – तपस्या करने वाला/ संपाती – एक पौराणिक काल्पनिक पक्षी, गरुड़ का बड़ा पुत्र व जटायु का बड़ा भाई/ आग्नेय – अग्निवत्, अग्नि–सम्बन्धी, अग्नि जैसा/ तेजस – तेज, शक्ति/ ऋषि – वेद मंत्रों का साक्षात्कार और प्रकाशन करने वाला, बड़ा तपस्वी।

एक बोध –

मिहिर – सूर्य (कविता में पूँजीवादी संकट)/ असंगी – जिसके कोई साथ न हो/ अनुधावित – मात्र पिछलग्गु, जिसका अनुसरण किया जाए/ मैत्री – मित्रता/ भाल – माथा, ललाट/ अश्वत्थ – सूर्य का एक नाम, साहित्य में प्रयुक्त व्यंग्यात्मक प्रतीक जो उल्टे की तरफ इशारा करता है/ कुन्तलों – सिर के बालों/ बैसाखी – वह लकड़ी जिसके सहारे पैर विहीन चलते हैं/ प्रव्रजावसित – देश या स्थान छोड़कर गया हुआ/ अनागत – भावी, आनेवाला, अचानक।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. 'किरण धेनुएँ' कविता में प्रभात के ग्वाले को मार्ग कौन दिखा रहा है ?

(क) कोयल (ख) कबूतर

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(ग) गधा (घ) सारस ( )

2. 'विडम्बना' कविता में सत्य की खोज के लिए कवि किसे भेजता है ?

(क) सम्पाती को (ख) गरुड़ को

(ग) जटायु को (घ) कुरजा को ( )

3. 'एक बोध' कविता में सिर पर कौन आ गया है ?

(क) कौआ (ख) उल्लू

(ग) मिहिर (घ) चन्द्रमा ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. 'किरण-धेनुएँ' कविता में खेतों–खलिहानों में क्या बरस रहा है ?
2. 'किरण-धेनुएँ' कविता में शैलों से उतरकर कौन चली आ रही है ?
3. 'विडम्बना' कविता में कवि सम्पाती को किसकी खोज में भेजता है ?
4. 'विडम्बना' कविता में सम्पाती को विनेत्र देखकर कवि ने सत्य को क्या कहा ?
5. 'एक बोध' कविता के अनुसार हमारे लिए अनुधावित क्या रहा है ?
6. 'एक बोध' कविता में हम आयु के अश्वत्थ को क्या स्वीकार नहीं है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. कवि ने सूर्य की तुलना प्रभात के ग्वाले से क्यों की है ?
2. किरण-धेनुओं के लिए स्वर्ण-सींग चमकाकर शैल से उतरने की बात कवि क्यों कहता है ?
3. 'विडम्बना' कविता में कवि सत्य को अप्राप्य क्यों कहता है ?
4. लोगों द्वारा सम्पाती को ऋषि न बताकर कवि को ऋषि क्यों कहा गया है ?
5. 'एक बोध' कविता में कवि का प्रव्रजावसित से क्या तात्पर्य है ?
6. कवि को भाल पर संकोच और कण्ठ में विवशताएँ क्यों दिखाई देती हैं ?

निबंधात्मक प्रश्न –

1. ''नरेश मेहता प्रकृति के अनुपम चितेरे हैं।'' पाठ्य पुस्तक में दी गई इनकी कविताओं के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
2. 'विडम्बना' कविता में छिपे व्यंग्य को कविता में दिए गए उदाहरणों द्वारा स्पष्ट कीजिए।
3. 'एक बोध' कविता के अनुसार हमारी स्थिति कैसी है?और क्यों है?
4. पाठ में आए निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

(क) स्मरण-बैसाखी .... हम प्रव्रजावसित हैं।

(ख) गिरता जाता फेन .... वंशी रखवाला।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

13. गुल्ली–डंडा

प्रेमचन्द

लेखक परिचय –

प्रेमचन्द का जन्म 31 जुलाई, 1880 को वाराणसी के निकट लमही गाँव में हुआ । इनकी माता का नाम आनन्दी देवी एवं पिता का नाम मुंशी अजायबराम था। ये लमही डाकघर में डाकमुंशी थे। सात वर्ष की अवस्था में उनकी माता का तथा चौदह वर्ष की अवस्था में पिता का देहान्त होने से इनका बचपन एवं किशोर जीवन संघर्षमय रहा। इनका मूल नाम धनपत राय श्रीवास्तव था। पढ़ने का शौक इनको बपचन से ही था। 1898 में मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण कर स्थानीय विद्यालय में शिक्षक नियुक्त हो गए। नौकरी के साथ पढ़ाई जारी रखते हुए 1910 में इण्टर और 1919 में बी.ए. पास किया। बी.ए. करने के पश्चात् आप शिक्षा विभाग के इंस्पेक्टर पद पर नियुक्त हुए। 1906 में इन्होंने विधवा विवाह का समर्थन करते हुए बाल-विधवा शिवरानी देवी से दूसरा विवाह किया। उनके तीन सन्तानें हुईं। 'सोजे वतन' पर रोक तथा लेखन बन्द करने के अँग्रेज सरकार के आदेश के बाद मुंशी दयानारायण की सलाह से इन्होंने प्रेमचन्द नाम से लेखन प्रारम्भ किया। यह नाम ही आगे चलकर प्रसिद्ध हो गया। उर्दू में लेखन कार्य नवाबराय के नाम से करते रहे थे। उनका अन्तिम उपन्यास 'मंगलसूत्र' उनकी लम्बी बीमारी एवं तत्पश्चात् निधन के कारण पूरा न हो सका। इनके पुत्र अमृतराय ने इस उपन्यास को पूरा कर पुत्रधर्म का निर्वहण किया।

मुंशी प्रेमचन्द ने हिन्दी साहित्य को नाटक, निबन्ध, उपन्यास एवं कहानी जैसी अनेक विधाओं से समृद्ध किया; साथ ही उन्होंने सम्पादन एवं अनुवाद कार्य भी किया परन्तु इनको प्रसिद्धि एक कथाकार एवं उपन्यासकार के रूप में ही मिली। बंगाली के प्रसिद्ध साहित्यकार शरतचन्द्र ने इन्हें उपन्यास सम्राट की उपाधि दी। प्रेमचन्द तत्पश्चात् उपन्यास सम्राट नाम से प्रसिद्ध रहे। इनका रचना संसार इस प्रकार है – **नाटक** – 'संग्राम' (1922 ई.) एवं 'कर्बला' (1928 ई.)। **निबन्ध/लेख** – विभिन्न पत्र- पत्रिकाओं में प्रेमचन्द के निबन्ध छपते रहे। जिनमें इन्होंने सामाजिक एवं साहित्यिक चिन्ताओं की अभिव्यक्ति की है। प्रेमचन्द के निबन्धों का संकलन 'प्रेमचन्द : विविध प्रसंग' जिसके तीन भाग हैं तथा 'प्रेमचन्द : कुछ विचार' नाम की पुस्तकों में मिलता है। इनमें से कुछ प्रमुख निबन्ध 'साहित्य का उद्देश्य, कहानी कला (भाग 1, 2, 3), हिन्दी उर्दू की एकता, महाजनी सभ्यता, उपन्यास, जीवन में साहित्य का स्थान आदि है। **अनुवाद** – 1. टॉलस्टॉय की कहानियाँ (1923 ई.), गाल्सवर्दी के तीन नाटकों का 'हड़ताल' (1930 ई.), 'चाँदी की डिबिया' (1931ई.) और 'न्याय' (1931 ई.) नाम से अनुवाद किया।

डॉ. कमल किशोर गोयनका के अनुसार प्रेमचन्द ने कुल 301 **कहानियाँ** लिखी हैं जिनमें से 3 अभी अप्राप्य हैं। इनकी प्रथम कहानी कौनसी है यह तय करना बड़ा ही कठिन है; फिर भी कुछ विद्वान 'संसार का अनमोल रतन' को प्रेमचन्द की पहली कहानी मानते हैं, तो कुछ 'पंच परमेश्वर' (1916 ई.) को प्रथम कहानी मानते हैं। प्रेमचन्द का पहला कहानी संग्रह 'सोजे वतन' नाम से जून 1908 में प्रकाशित हुआ। इनके जीवनकाल में कुल नौ कहानी संग्रह प्रकाशित हुए– 1. सप्त सरोज, 2. नवनिधि, 3. प्रेम पूर्णिमा, 4.

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रेम-पचीसी, 5. प्रेम-प्रतिमा, 6. प्रेम-द्वादशी, 7. समर यात्रा, 8. मानसरोवर : भाग 1 व 2 और कफन। कफन प्रेमचन्द की अन्तिम कहानी मानी जाती है। प्रेमचन्द की मृत्यु के पश्चात् इनकी कहानियाँ 'मानसरोवर' शीर्षक से 8 खण्डों में प्रकाशित हुई। प्रेमचन्द जी की कहानियों के विकास-क्रम को तीन काल-खण्डों में बाँट सकते हैं– प्रथम–1916 से 1920 तक, द्वितीय–1620 से 1930 तक एवं तृतीय–1930 से 1936 तक। इन कालों में कहानियों के अलग-अलग रूप सामने आते हैं।

पत्र-पत्रिकाएँ – 1922 ई. में 'माधुरी' पत्रिका का सम्पादन, 1930 ई. में 'हंस' मासिक का प्रारम्भ, प्रकाशन एवं सम्पादन तथा 1932 ई. में 'जागरण' साप्ताहिक का सम्पादन।

उपन्यास – प्रेमचन्द द्वारा कुल पन्द्रह उपन्यास लिखे गए जिनमें से काल क्रमानुसार निम्नांकित प्रमुख हैं – 1. वरदान (अनुदित) (1921 ई.) में, 2. प्रेमा (1907 ई.), 3. रूठी रानी (1907 ई.), 4. सेवासदन (1918 ई.), 5. प्रेमाश्रम (1921 ई.), 6. रंगभूमि (1925 ई.), 7. कायाकल्प (1926 ई.), 8. निर्मला (1927 ई.), 9. गबन (1931 ई.), 10. कर्मभूमि (1932 ई.), 11. गोदान (1936 ई.), 12. मंगलसूत्र (अधूरा 1948 ई.) में प्रकाशित।

पाठ परिचय –

प्रस्तुत कहानी 'गुल्ली-डंडा' में बपचन की यादें संजोई गई हैं। कहानी बड़े कौशल से इस सच्चाई को चरितार्थ करती है कि पद और प्रतिष्ठा, मनुष्य-मनुष्य के बीच के नैसर्गिक सम्बन्ध को समाप्त कर देती है। कहानी में कथा-नायक और गया दोनों बालसखा हैं। दोनों ही बाल अवस्था में बिना किसी भेदभाव के गुल्ली-डंडा खेलते थे। कथा–नायक जो कि थानेदार का लड़का था, दाँव देने के विवाद में 'गया' के हाथों पिट भी गया था, परन्तु उसने किसी से शिकायत नहीं की। बीस साल बाद कथा-नायक जो अब इन्जीनियर हो गया है, उसी गाँव में आता है। यहाँ वह बचपन की समृतियों को सजीव करने के लिए गया से मिलता है और उसके साथ गुल्ली-डंडा खेलना चाहता है। उसके बहुत आग्रह पर गया खेलता तो है लेकिन उसके खेल में बपचन वाली बात कथा-नायक को नजर नहीं आती है। यहाँ कथा-नायक सोचता है कि उसकी अफसरी 'गया' और उसके बीच दीवार बन गई है। यह दर्शाते हुए कहानी का समापन हो जाता है।

मूल पाठ –

हमारे अँग्रेज दोस्त मानें या ना मानें, मैं तो यही कहूँगा कि गुल्ली-डंडा सब खेलों का राजा है। अब भी कभी लड़कों को गुल्ली-डंडा खेलते देखता हूँ तो जी लोट-पोट हो जाता है कि इनके साथ जाकर खेलने लगूँ। न लॉन की जरूरत, न कोर्ट की, न नेट की, न थापी की। मजे से किसी पेड़ से एक टहनी काट ली, गुल्ली बना ली, और दो आदमी भी आ गए, तो खेल शुरू हो गया।

विलायती खेलों में सबसे बड़ा ऐब है कि उनके सामान महंगे होते हैं। जब तक कम-से-कम एक सैंकड़ा न खर्च कीजिए, खिलाड़ियों में शुमार नहीं हो सकता। यहाँ गुल्ली-डंडा है कि बिना हर्र-फिटकरी के चोखा रंग देता है; पर हम अँग्रेजी चीजों के पीछे ऐसे दीवाने हो रहे हैं कि अपनी सभी चीजों से अरुचि हो गई। स्कूलों में हरेक लड़के से तीन-चार रुपये सालाना केवल खेलने की फीस ली जाती है। किसी को यह नहीं सूझता कि भारतीय खेल खिलाएँ, जो बिना दाम-कौड़ी के खेले जाते हैं। अँगरेजी खेल उनके लिए है जिनके पास धन है। गरीब लड़कों के सिर क्यों यह व्यसन मढ़ते हो ? ठीक है, गुल्ली-डंडा से आँख फूट

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

जाने का भय रहता है, तो क्रिकेट से सिर फूट जाने, तिल्ली फट जाने, टांग टूट जाने का भय नहीं रहता! अगर हमारे माथे में गुल्ली का दाग आज तक बना हुआ है, तो हमारे कई दोस्त ऐसे भी हैं, जो थापी को वैशाखी से बदल बैठे। यह अपनी-अपनी रुचि है। मुझे गुल्ली ही सब खेलों से अच्छी लगती है और बचपन की मीठी स्मृतियों में गुल्ली ही सबसे मीठी है।

वह प्रातःकाल घर से निकल जाना, वह पेड़ पर चढ़कर टहनियाँ काटना, और गुल्ली-डंडे बनाना, वह लड़ाई–झगड़े, वह सरल स्वभाव, जिसमें छूत–अछूत, अमीर–गरीब का बिलकुल भेद न रहता था, जिसमें अमीराना चोंचलों की, प्रदर्शन की, अभिमान की गुंजाइश ही न थी, यह उसी वक्त भूलेगा जब.... जब.... । घर वाले बिगड़ रहे हैं, पिताजी चौके पर बैठे वेग से रोटियों पर अपना क्रोध उतार रहे हैं, अम्माँ की दौड़ केवल द्वार तक है, लेकिन उनकी विचार-धारा में मेरा अंधकारमय भविष्य टूटी हुई नौका की तरह डगमगा रहा है, और मैं हूँ कि पदाने में मस्त हूँ, न नहाने की सुधि है, न खाने की। गुल्ली है तो जरा-सी, पर उसमें दुनिया भर की मिठाइयों की मिठास और तमाशों का आनन्द भरा हुआ है।

मेरे हमजोलियों में एक लड़का गया नाम का था। मुझसे दो-तीन साल बड़ा होगा। दुबला, लम्बा, बन्दरों की-सी लम्बी-लम्बी, पतली-पतली उँगलियाँ, बन्दरों की-सी चपलता, वही झल्लाहट। गुल्ली कैसी ही हो, उस पर इस तरह लपकता था, जैसे छिपकली कीड़ों पर लपकती है। मालूम नहीं, उसके माँ-बाप थे या नहीं। कहाँ रहता था, क्या खाता था; पर था हमारे गुल्ली क्लब का चैम्पियन। जिसकी तरफ वह आ जाए, उसकी जीत निश्चित थी। हम सब उसे दूर से आते देख, उसका दौड़ कर स्वागत करते थे और उसे अपना गोइयाँ बना लेते थे।

एक दिन मैं और गया दोनों ही खेल रहे थे। वह पदा रहा था। मैं पद रहा था; मगर कुछ विचित्र बात है कि पदाने में हम दिन-भर मस्त रह सकते हैं; पदना एक मिनट का भी अखरता है। मैंने गला छुड़ाने के लिए सब चालें चली, जो ऐसे अवसर पर शास्त्र-विहित न होने पर भी क्षम्य है, लेकिन गया अपना दाँव लिए बगैर मेरा पिंड न छोड़ता था।

मैं घर की ओर भागा। अनुनय विनय का कोई असर न हुआ।

गया ने मुझे दौड़कर पकड़ लिया और डंडा तानकर बोला– मेरा दाँव देकर जाओ। पदाया तो बड़े बहादुर बनके, पदने के बेर क्यों भागे जाते हो?

तुम दिन भर पदाओ तो मैं दिन-भर पदता रहूँ!

'हाँ, तुम्हे दिन-भर पदना पड़ेगा।'

'न खाने जाऊँ, न पीने जाऊँ?'

'हाँ,! मेरा दाँव दिए बिना कहीं नहीं जा सकते।'

'हाँ, मेरे गुलाम हो।'

'मैं घर जाता हूँ, देखूँ मेरा क्या कर लेते हो।'

'घर कैसे जाओगे, कोई दिल्लगी है। दाँव दिया है, दाँव लेंगे।'

'अच्छा कल मैंने अमरूद खिलाया था। वह लौटा दो।'

'वह तो पेट में चला गया।'

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

'निकालो पेट से। तुमने क्यों खाया मेरा अमरूद? तुमने दिया था, तब मैंने खाया। मैं तुमसे माँगने न गया था।'

'जब तक मेरा अमरूद न दोगे, मैं दाँव न दूँगा।'

मैं समझता था, न्याय मेरी ओर है। आखिर मैंने किसी स्वार्थ से ही उसे अमरूद खिलाया होगा। कौन निःस्वार्थ किसी के साथ सलूक करता है। भिक्षा तक तो स्वार्थ के लिए ही देते हैं। जब गया ने अमरूद खाया, तो फिर उसे मुझसे दाँव लेने का क्या अधिकार है। रिश्वत देकर तो लोग खून पचा जाते हैं। यह मेरा अमरूद यों ही हजम कर जाएगा। अमरूद पैसे के पाँच वाले थे, जो गया के बाप को भी नसीब न होंगे। यह सरासर अन्याय था।

गया ने मुझे अपनी ओर खींचते हुए कहा– मेरा दाँव देकर जाओ, अमरूद-समरूद मैं नहीं जानता।

मुझे न्याय का बल था। वह अन्याय पर डटा हुआ था। मैं हाथ छुड़ाकर भागना चाहता था। वह मुझे जाने न देता! मैंने उसे गाली दी, उसने उससे कड़ी गाली दी, और गाली ही नहीं, एक चाँटा जमा दिया। मैंने उसे दाँत से काट लिया, उसने मेरी पीठ पर डंडा जमा दिया। मैं रोने लगा। गया मेरे इस अस्त्र का मुकाबला न कर सका। भागा। मैंने तुरंत आंसू पोंछ डाले, डंडे की चोट भूल गया और हँसता हुआ घर जा पहुँचा। मैं थानेदार का लड़का एक अदने से लड़के के हाथों पिट गया, यह मुझे उस समय भी अपमानजनक मालूम हुआ, लेकिन घर में किसी से शिकायत न की।

उन्हीं दिनों पिताजी का वहाँ से तबादला हो गया। नई दुनिया देखने की खुशी में ऐसा फूला कि अपने हमजोलियों से बिछुड़ जाने का बिल्कुल दुःख न हुआ। पिताजी दुःखी थे। यह बड़ी आमदनी की जगह थी। अम्माजी भी दुःखी थीं, यहाँ सब चीजें सस्ती थीं, और मुहल्ले की स्त्रियों से घेराव-सा हो गया था; लेकिन मारे खुशी के फूला न समाता था। लड़कों से जीट उड़ा रहा था, वहाँ ऐसे घर थोड़े ही होते हैं। ऐसे-ऐसे ऊँचे घर हैं कि आसमान से बातें करते हैं। वहाँ के अँगरेजी स्कूल में कोई मास्टर लड़कों को पीटे, तो उसे जेहल हो जाए। मेरे मित्रों की फैली हुई आँखें और चकित मुद्रा बतला रही थी कि मैं उनकी निगाह में कितना ऊँचा उठ गया हूँ। बच्चों में मिथ्या को सत्य बना लेने की शक्ति है, जिसे हम, जो सत्य को मिथ्या बना लेते हैं, क्या समझेंगे?उन बेचारों को मुझसे कितनी स्पर्धा हो रही थी। मानो कह रहे थे– तुम भगवान् हो भाई, जाओ। हमें तो इसी ऊजड़ ग्राम में जीना भी है और मरना भी।

बीस साल गुजर गए। मैंने इंजीनियरी पास की और उसी जिले का दौरा करता हुआ उसी कस्बे में पहुँचा और डाक बंगले में ठहरा। उस स्थान को देखते ही इतनी मधुर बाल स्मृतियाँ हृदय में जाग उठीं कि मैंने छड़ी उठायी और कस्बे की सैर करने निकला। आँख किसी प्यासे पथिक की भाँति बचपन के उन क्रीड़ा-स्थलों को देखने के लिए व्याकुल हो रही थी; पर उस परिचित नाम के सिवा वहाँ और कुछ परिचित न था। जहाँ खंडहर था, वहाँ पक्के मकान खड़े थे। जहाँ बरगद का पुराना पेड़ था, वहाँ अब सुन्दर बगीचा था। स्थान की काया-पलट हो गई थी। अगर उसके नाम और स्थिति का ज्ञान न होता, तो मैं इसे पहचान भी न सकता। बचपन की संचित और अमर स्मृतियाँ बाँह खोले अपने उन पुराने मित्रों से गले मिलने को अधीर हो रही थीं, मगर वह दुनिया बदल गई थी। ऐसा जी होता था कि उस धरती से लिपटकर रोऊँ और

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कहूँ, तुम मुझे भूल गईं! मैं तो अब भी तुम्हारा वहीं रूप देखना चाहता हूँ।

सहसा एक खुली हुई जगह में मैंने दो–तीन लड़कों को गुल्ली-डंडा खेलते देखा। एक क्षण के लिए मैं अपने को बिल्कुल भूल गया। भूल गया कि मैं एक ऊँचा अफसर हूँ, साहबी ठाठ में, रोब और अधिकार के आवरण में।

जाकर एक लड़के से पूछा– क्यों बेटे, यहाँ कोई गया नाम का आदमी है ?

एक लड़के ने गुल्ली-डंडा समेटकर सहमे हुए स्वर में कहा- कौन गया?गया चर्मकार।

मैंने यों ही कहा– हाँ–हाँ वही। गया नाम का कोई आदमी है तो ? शायद वही हो।

'हाँ, है तो।

'जरा उसे बुला सकते हो ?'

लड़का दौड़ता हुआ गया और एक क्षण में एक पाँच हाथ के काले देव को साथ लिए आता दिखाई दिया। मैं दूर ही से पहचान गया। उसकी ओर लपकना चाहता था कि उसके गले लिपट जाऊँ, पर कुछ सोचकर रह गया। बोला–कहो, गया, मुझे पहचानते हो ?

गया ने झुककर सलाम किया– हाँ मालिक, भला पहचानूँगा क्यों नहीं! आप मजे में रहे?

'बहुत मजे में। तुम अपनी कहो ?'

'डिप्टी साहब का साईस हूँ।'

'मतई, मोहन, दुर्गा सब कहाँ हैं ? कुछ खबर है।'

'मतई तो मर गया, दुर्गा और मोहन दोनों डाकिए हो गए हैं। आप ?'

'मैं तो जिले का इंजीनियर हूँ।'

'सरकार तो पहले ही बड़े जहीन थे।'

'अब कभी गुल्ली-डंडा खेलते हो ?'

गया ने मेरी ओर प्रश्न की आँखों से देखा – अब गुल्ली-डंडा क्या खेलूँगा सरकार, अब तो धन्धे से छुट्टी नहीं मिलती।

'आओ, आज हम तुम खेलें। तुम पदाना हम पदेंगे। तुम्हारा एक दाँव हमारे ऊपर है। वह आज ले लो।'

गया बड़ी मुश्किल से राजी हुआ। वह ठहरा टके का मजदूर, मैं एक बड़ा अफसर। हमारा और उसका क्या जोड़ ? बेचारा झेंप रहा था! लेकिन मुझे भी कुछ कम झेंप न थी; इसलिए नहीं कि मैं गया के साथ खेलने जा रहा था, बल्कि इसलिए कि लोग इस खेल को अजूबा समझकर इसका तमाशा बना लेंगे और अच्छी-खासी भीड़ लग जाएगी। उस भीड़ में आनन्द कहाँ रहेगा, पर खेले बगैर तो रहा नहीं जाता। आखिर निश्चय हुआ कि दोनों जने बस्ती से बहुत दूर एकांत में जाकर खेलें। वहाँ कौन देखने वाला बैठा होगा। मजे से खेलेंगे और बचपन की उस मिठाई को खूब रस ले-लेकर खाएँगे। मैं गया को लेकर डाक-बंगले पर आया और मोटर में बैठकर दोनों मैदान की ओर चले। साथ में एक कुल्हाड़ी ले ली। मैं गम्भीर भाव धारण किए हुए था, लेकिन गया इसे अभी तक मजाक ही समझ रहा था। फिर भी उसके मुख पर

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उत्सुकता या आनन्द का कोई चिह्न न था। शायद वह हम दोनों में जो अन्तर हो गया था, वही सोचने में मगन था।

मैंने पूछा— तुम्हें कभी हमारी याद आती थी गया? सच कहना। गया झेंपता हुआ बोला— मैं आपको याद करता हुजूर, किस लायक हूँ। भाग में आपके साथ कुछ दिन खेलना बदा था, नहीं मेरी क्या गिनती?

मैंने कुछ उदास होकर कहा— लेकिन मुझे तो बराबर, तुम्हारी याद आती थी। तुम्हारा वह डंडा, जो तुमने तानकर जताया था, याद है न?

गया ने पछताते हुए कहा— वह लड़कपन था सरकार, उसकी याद न दिलाओ।

'वाह! वह मेरे बाल-जीवन की सबसे रसीली याद है। तुम्हारे उस डंडे में जो रस था, वह तो अब न आदर-सम्मान में पाता हूँ, न धन में। कुछ ऐसी मिठास थी उसमें कि आज तक उससे मन मीठा होता रहता है।'

इतनी देर में हम बस्ती से कोई तीन मील निकल आये। चारों तरफ सन्नाटा है। पश्चिम ओर कोसों तक भीमताल फैला हुआ है, जहाँ आकर हम किसी समय कमल-पुष्प तोड़ ले जाते थे और उसके झूमके बनाकर कानों में डाल लेते थे। जेठ की संध्या केसर में डूबी चली आ रही है। मैं लपककर एक पेड़ पर चढ़ गया और एक टहनी काट लाया। चटपट गुल्ली-डंडा बन गया। खेल शुरू हो गया। मैंने गुच्ची में गुल्ली रखकर उछाली। गुल्ली गया के सामने से निकल गई। उसने हाथ लपकाया, जैसे मछली पकड़ रहा हो। गुल्ली उसके पीछे जाकर गिरी। यह वही गया है, जिसके हाथों में गुल्ली जैसे आप-ही जाकर बैठ जाती थी। वह दाहने-बायें कहीं हो, गुल्ली उसकी हथेलियों में ही पहुँचती थी। जैसे गुल्लियों पर वशीकरण डाल देता हो। नयी गुल्ली, पुरानी गुल्ली, छोटी गुल्ली, बड़ी गुल्ली, नोकदार गुल्ली, सपाट गुल्ली सभी उससे मिल जाती थीं। जैसे उसके हाथों में कोई चुम्बक हो; गुल्लियों को खींच लेता हो, लेकिन आज गुल्ली को उससे वह प्रेम नहीं रहा। फिर तो मैंने पदाना शुरू किया। मैं तरह-तरह की धाँधलियाँ कर रहा था। अभ्यास की कसर बेईमानी से पूरी कर रहा था। हुच जाने पर भी डंडा खेले जाता था, हालांकि शास्त्र के अनुसार गया की बारी आनी चाहिए थी। गुल्ली पर ओछी चोट पड़ती और वह जरा दूर पर गिर पड़ती तो मैं झपटकर उसे खुद उठा लेता दोबारा टांड लगाता। गया वह सारी बे-कायदगियाँ देख रहा था, पर कुछ न बोलता था, जैसे उसे वह सब कायदे-कानून भूल गये। उसका निशाना कितना अचूक था। गुल्ली उसके हाथ से निकलकर टन से डंडे में आकर लगती थी। उसके हाथ से छूटकर उसका काम था डंडे से टकरा जाना, लेकिन आज वह गुल्ली डंडे में लगती ही नहीं! कभी दाहिने जाती है, कभी बाएँ, कभी आगे, कभी पीछे।

आध घंटे पदाने के बाद एक बार गुल्ली डंडे में आ लगी। मैंने धाँधली की गुल्ली डंडे में नहीं लगी, बिल्कुल पास से गई, लेकिन लगी नहीं।

गया ने किसी प्रकार का असंतोष नहीं प्रकट किया।

'न लगी होगी।'

'डंडे में लगती तो क्या मैं बेईमानी करता?'

'नहीं भैया, तुम भला बेईमानी करोगे।'

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

बचपन में मजाल था कि मैं ऐसा घपला करके जीता बचता! यही गया गर्दन पर चढ़ बैठता, लेकिन आज मैं उसे कितनी आसानी से धोखा दिए चला जाता था। गधा है! सारी बातें भूल गया।

सहसा गुल्ली फिर डण्डे से लगी और इतने जोर से लगी, जैसे बन्दूक छूटी हो। इस प्रमाण के सामने अब किसी तरह की धाँधली करने का साहस मुझे इस वक्त भी न हो सका, लेकिन क्यों न एक बार सबको झूठ बताने की चेष्टा करूँ? मेरा हरज ही क्या है?मान गया तो वाह-वाह, नहीं तो दो–चार हाथ पदना ही तो पड़ेगा। अन्धेरे का बहाना करके जल्दी से गैला छुड़ा लूँगा। फिर कौन दाँव देने आता है।

गया ने विजय के उल्लास में कहा– लग गई, लग गई! टन से बोली।

मैंने अनजान बनने की चेष्टा करके कहा– तुमने लगते देखा?मैंने तो नहीं देखा।

'टन से बोली है सरकार!'

'और जो किसी ईंट से लग गई हो?'

मेरे मुख से यह वाक्य उस समय कैसे निकला, इसका मुझे खुद आश्चर्य है। इस सत्य को झुठलाना वैसा ही था, जैसे दिन को रात बताना। हम दोनों ने गुल्ली को डण्डे में जोर से लगते देखा था, लेकिन गया ने मेरा कथन स्वीकार कर लिया।

'हाँ, किसी ईंट में ही लगी होगी। डण्डे में लगती तो इतनी आवाज न आती।'

मैंने फिर पदाना शुरू कर दिया, लेकिन इतनी प्रत्यक्ष धाँधली कर लेने के बाद गया की सरलता पर मुझे दया आने लगी, इसलिए जब तीसरी बार गुल्ली डण्डे में लगी, तो मैंने बड़ी उदारता से दाँव देना तय कर दिया।

गया ने कहा– अब तो अँधेरा हो गया है भैया, कल पर रखो।

मैंने सोचा, कल बहुत-सा समय होगा, यह न जाने कितनी देर पदाए, इसलिए इसी वक्त मुआमला साफ कर लेना अच्छा होगा।

'नहीं, नहीं। अभी बहुत उजाला है। तुम अपना दाँव ले लो।

'गुल्ली सूझेगी नहीं।'

'कुछ परवाह नहीं।'

गया ने पदाना शुरू किया, पर उसे अब बिल्कुल अभ्यास न था। उसने दो बार टांड लगाने का इरादा किया, पर दोनों ही बार हुच गया। एक मिनट से कम में वह दाँव पूरा कर चुका था। बेचारा घण्टा-भर पदा, पर एक मिनिट ही में अपना दाँव खो बैठा। मैंने अपने हृदय की विशालता का परिचय दिया।

'एक दाँव और खेल लो। तुम तो पहले ही हाथ में हुच गए।'

'नहीं भैया, अब अँधेरा हो गया।'

'तुम्हारा अभ्यास छूट गया। कभी खेलते नहीं?'

'खेलने का समय कहाँ मिलता है भैया!'

हम दोनों मोटर पर जा बैठे और चिराग जलते-जलते पड़ाव पर पहुँच गए। गया चलते-चलते बोला– कल यहाँ गुल्ली-डंडा होगा। सभी पुराने खिलाड़ी खेलेंगे। तुम भी आओगे? जब तुम्हें फुरसत हो,

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तभी खिलाड़ियों को बुलाऊँ।

मैंने शाम का समय दिया और दूसरे दिन मैच देखने गया। कोई दस-दस आदमियों की मण्डली थी। कई मेरे लड़कपन के साथी निकले! अधिकांश युवक थे, जिन्हें मैं पहचान न सका। खेल शुरू हुआ। मैं मोटर पर बैठा-बैठा तमाशा देखने लगा। आज गया का खेल, उसका वह नैपुण्य देखकर मैं चकित हो गया। टांड लगाता, तो गुल्ली आसमान से बात करती। कल की-सी वह झिझक, वह हिचकिचाहट, वह बेदिली आज न थी। लड़कपन में जो बात थी, आज उसने प्रौढ़ता प्राप्त कर ली थी। कहीं कल इसने मुझे इस तरह पदाया होता, तो मैं जरूर रोने लगता। उसके डण्डे की चोट खाकर गुल्ली दो सौ गज की खबर लाती थी।

पदने वालों में एक युवक ने कुछ धाँधली की। उसने अपने विचार में गुल्ली लपक ली थी। गया का कहना था – गुल्ली जमीन में लगकर उछली थी। इस पर दोनों में ताल ठोकने की नौबत आई है। युवक दब गया। गया का तमतमाया हुआ चेहरा देखकर डर गया। अगर वह दब न जाता, तो जरूर मार-पीट हो जाती।

मैं खेल में न था, पर दूसरों के इस खेल में मुझे वहीं लड़कपन का आनन्द आ रहा था, जब हम सब-कुछ भूलकर खेल में मस्त हो जाते थे। अब मुझे मालूम हुआ कि कल गया ने मेरे साथ खेला नहीं, केवल खेलने का बहाना किया। उसने मुझे दया का पात्र समझा। मैंने धाँधली की, बेईमानी की, पर उसे जरा क्रोध न आया। इसीलिए कि वह खेल न रहा था, मुझे खेला रहा था, मेरा मन रख रहा था। वह मुझे पदाकर मेरा कचूमर नहीं निकालना चाहता था। मैं अब अफसर हूँ। यह अफसरी मेरे और उसके बीच में दीवार बन गई है। मैं अब उसका लिहाज पा सकता हूँ, अदब पा सकता हूँ, साहचर्य नहीं पा सकता। लड़कपन था, तब मैं उसका समकक्ष था। हममें कोई भेद न था। यह पद पाकर अब मैं केवल उसकी दया के योग्य हूँ। वह मुझे अपना जोड़ नहीं समझता। वह बड़ा हो गया है, मैं छोटा हो गया हूँ।

•••

कठिन शब्द –

विलायती – विदेशी/ अमीराना – अमीरोचित, धनिकोचित/ गुंजाइश – स्थान, अवकाश/ गोइयाँ – साथी, सखा, खेल का साथी, सखी/ दिल्लगी – मजाक, हास–परिहास/ हजम – पाचन क्रिया, गबन, पचाना/ अस्त्र – फेंक कर चलाया जाने वाला हथियार/ जीट – डींग, गप्प/ साईस – घोड़ों की देखभाल करने वाला नौकर/ वशीकरण – वश में करने की क्रिया, सम्मोहन/ हुच जाना – गुल्ली–डंडा खेल में अपनी बारी से बाहर हो जाना/ बे–कायदगियाँ – नियम विरुद्ध, अवैध/ हरज – हानि, क्षति, नुकसान/ पड़ाव – ठहरने का स्थान/ मण्डली–समूह/ नैपुण्य –दक्षता, निपुणता, निपुण होने की अवस्था/ कचूमर–दुर्दशा, दुर्दशा करना/ साहचर्य – मित्रता, संग–साथ, मेल–मिलाप, सहचारिता/ शुमार – शामिल, गिनती, हिसाब/ व्यसन – लत, दुराचरण, बुरी आदत/ चोंचलों – दिखावों, नखरों/ हमजोलियों – साथी, सखा/ विहित – विधि के अनुरूप होने वाला, निर्धारित/ सलूक – ढंग, तौर–तरीका, व्यवहार/ नसीब – भाग्य, किस्मत, तकदीर/ लौंडे – बिगड़े हुए लड़के, छिछोरे/ पथिक – बटोही, राहगीर, मुसाफिर, यात्री/ बदा – होनी, भाग्य में लिखा हुआ/ धाँधलियाँ – हेरा–फेरी, घोटाला, धोखा, शरारत/ घपला – गोलमाल, गलत तरीके से

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कार्य के कारण हुई गड़बड़/ गैला – गाड़ी के जाने लायक रास्ता/ चिराग – दीपक/ फुरसत – अवकाश, खाली समय/ लड़कपन – बचपन, बचपना/ प्रौढ़ता – परिपक्वता, वयस्कता/ अदब – विनय, शिष्टाचार

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1 इस कहानी में कथा-नायक विलायती खेलों का सबसे बड़ा ऐब क्या मानते हैं ?

(क) महँगा होना (ख) सस्ता होना

(ग) चोट का डर (घ) अधिक समय लगना ( )

2 कहानी में कथा-नायक और उसका मित्र गुल्ली-डंडा खेलने कहाँ गए ?

(क) रेलवे स्टेशन (ख) पाठशाला

(ग) भीमताल (घ) अस्पताल ( )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1 कहानी में लेखक जिस मित्र से मिला, उसका नाम क्या है ?

2 कहानी का कथा-नायक बड़ा होकर क्या बनता है ?

3 कथा-नायक ने गया को गुल्ली-डंडा मैच देखने के लिए कब का समय दिया ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. गया के व्यक्तित्व की तीन विशेषताएँ बताइए।
2. कथा-नायक को गुल्ली-डंडा खेलों का राजा क्यों लगता है ?
3. खेल में पदने से बचने के लिए कथा-नायक क्या चालें चलता है ?
4. कथा-नायक के अनुसार बच्चों में ऐसी कौनसी शक्ति होती है जो बड़ों में नहीं होती ?
5. कथा-नायक और गया के बीच स्मृतियाँ सजीव होने में कौनसी बात बाधा बनती है? और क्यों ?

निबंधात्मक प्रश्न –

1 'गुल्ली-डंडा' कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि पद और प्रतिष्ठा मनुष्य और मनुष्य के बीच के नैसर्गिक सम्बन्ध को समाप्त कर देते हैं।

2 कथा-नायक की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए।

3. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

(क) मैं समझता था .... यह सरासर अन्याय था।

(ख) मैं खेल में न था, ... मैं छोटा हो गया हूँ।

•••

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

14. मिठाई वाला

भगवती प्रसाद वाजपेयी

लेखक परिचय –

भगवती प्रसाद वाजपेयी का जन्म कानपुर में सन् 1899 में हुआ। उनकी पहली कहानी 'यमुना' 1923 ई० में 'श्री शारदा' नाम की पत्रिका में प्रकाशित हुई। इससे पहले वे कविता के क्षेत्र में आ चुके थे। वाजपेयी कवि, नाटककार, उपन्यासकार और कहानीकार के रूप में अपनी प्रभावी सृजन-कला का परिचय देते हैं। उनके प्रमुख उपन्यास हैं – त्यागमयी, पतवार, भूदान। 'छलना' और 'रायपिथौरा' उनके नाटक हैं। कविता संग्रह हैं – 'ओस की बूँदें'। इसके अतिरिक्त उन्होंने बालोपयोगी साहित्य का सृजन भी किया है एवं संपादन के क्षेत्र से भी जुड़े रहे हैं।

कहानीकार के रूप में वाजपेयी जी के प्रमुख संग्रह हैं – 'मधुपर्क', 'हिलोर', 'पुष्करिणी', 'दीपमालिका', 'उपहार', 'खाली बोतल', 'अंगारे', 'स्नेह' आदि। वाजपेयी जी की कहानियों में मध्यवर्गीय मानसिक ऊहापोह को विशेष महत्त्व मिला है। बदलते समाज और बदलते वातावरण एवं नए प्रश्नों और समस्याओं को वाजपेयी जी ने अधिक महत्त्व दिया है। उन्होंने कुछ कहानियाँ समाज की विकृत परंपराओं, रूढ़ियों, कुरीतियों आदि को लेकर लिखी हैं तो कुछ कहानियों में विभिन्न वर्गों के बीच की दूरी, कटुता, अविश्वास, घृणा का सटीक चित्रण हुआ है। उनकी कहानियों में कहीं प्रेमचंद के आदर्शोन्मुख सामाजिक यथार्थ के दर्शन होते हैं तो कहीं शरतचन्द्र की भावुकता और मार्मिकता मिलती है। वाजपेयी जी की कहानियाँ आकार की दृष्टि से प्रायः छोटी होती हैं परंतु उनमें व्यंजकता होती है। कथानक अल्प होते हुए भी कहानियाँ तीव्र घटनाक्रम से बाँधे रखती हैं। शीर्षक आकर्षक और व्यंजनात्मक होते हैं। भाषा की स्वाभाविकता और कहने का विशिष्ट ढंग वाजपेयी जी की कहानियों की निजी विशेषता है।

पाठ परिचय –

'मिठाईवाला' कहानी में लेखक ने बाल मनोविज्ञान के विविध कोणों को प्रस्तुत किया है। बाल सुलभ चपलता, आकर्षण, हठ, मन की विविध भंगिमाएँ इस कहानी में देखी जा सकती हैं। यह कहानी मानव-मन में छिपे वात्सल्य और उसके समर्पणभाव की जीती जागती कथा है। मानव अपने हृदय के अभाव को पूर्ण करने के लिए किस प्रकार स्वयं को विश्व से जोड़कर संतुष्टि प्राप्त कर सकता है इसका प्रकट उदाहरण यह कहानी है।

मूल पाठ –

1

बहुत ही मीठे स्वरों के साथ वह गलियों में घूमता हुआ कहता – ''बच्चों को बहलाने वाला, खिलौनेवाला।''

इस अधूरे वाक्य को वह ऐसे विचित्र, किंतु मादक-मधुर ढंग से गाकर कहता कि सुनने वाले एक बार अस्थिर हो उठते। उसके स्नेहाभिषिक्त कंठ से फूटा हुआ उपयुक्त गान सुनकर निकट के मकानों में

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हलचल मच जाती। छोटे-छोटे बच्चों को अपनी गोद में लिए युवतियाँ चिकों को उठाकर छज्जों पर नीचे झाँकने लगतीं। गलियों और उनके अन्तर्व्यापी छोटे-छोटे उद्यानों में खेलते और इठलाते हुए बच्चों का झुंड उसे घेर लेता और तब वह खिलौनेवाला वहीं बैठकर खिलौने की पेटी खोल देता।

बच्चे खिलौने देख पुलकित हो उठते। वे पैसे लाकर खिलौने का मोल-भाव करने लगे। पूछते –''इछका दाम क्या है, औल इछका। औल इछका ? खिलौनेवाला बच्चों को देखता और उनकी नन्हीं-नन्हीं उँगलियों से पैसे ले लेता, और बच्चों की इच्छानुसार उन्हें खिलौने दे देता। खिलौने लेकर बच्चे फिर उछलने-कूदने लगते और तब फिर खिलौने वाला उसी प्रकार गाकर कहता –''बच्चों को बहलाने वाला, खिलौनेवाला।'' सागर की हिलोर की भाँति उसका यह मादक गान गली भर के मकानों में इस ओर से उस ओर तक, लहराता हुआ पहुँचा, और खिलौनेवाला आगे बढ़ जाता।

राय विजयबहादुर के बच्चे भी एक दिन खिलौने लेकर घर आए। वे दो बच्चे थे – चुन्नू और मुन्नू! चुन्नू जब खिलौने ले आया, तो बोला –''मेला घोला कैछा छुन्दल ऐ?''

मुन्नू बोला – ''औल देखो, मेला कैसा छुन्दल ऐ''

दोनों अपने हाथी-घोड़े लेकर घर भर में उछलने लगे। इन बच्चों की माँ रोहिणी कुछ देर तक खड़े-खड़े उनका खेल निरखती रही। अन्त में दोनों बच्चों को बुलाकर उसने पूछा –''अरे ओ चुन्नू-मुन्नू, ये खिलौने तुमने कितने में लिये हैं ?''

मुन्नू बोला – ''दो पैछे में। खिलौनेवाला दे गया ऐ।''

रोहिणी सोचने लगी–इतने सस्ते कैसे दे गया है। कैसे दे गया है, यह तो वही जाने। लेकिन दे तो गया ही है, इतना तो निश्चय है।

एक ज़रा सी बात ठहरी। रोहिणी अपने काम में लग गई। फिर कभी उसे इस पर विचार करने की आवश्यकता भी भला क्यों पड़ती।

2

छह महीने बाद।

नगर भर में दो-चार दिनों से एक मुरलीवाले के आने का समाचार फैल गया। लोग कहने लगे–''भाई वाह! मुरली बजाने में वह एक ही उस्ताद है। मुरली बजाकर, गाना सुनाकर वह मुरली बेचता भी है सो भी दो-दो पैसे। भला, इसमें उसे क्या मिलता होगा। मेहनत भी तो न आती होगी!''

एक व्यक्ति ने पूछ लिया –''कैसा है वह मुरलीवाला, मैंने तो उसे नहीं देखा!''

उत्तर मिला –''उम्र तो उसकी अभी अधिक न होगी, यही तीस-बत्तीस का होगा। दुबला–पतला गोरा युवक है, बीकानेरी रंगीन साफा बाँधता है।''

''वही तो नहीं, जो पहले खिलौने बेचा करता था ?''

''क्या वह पहले खिलौने भी बेचा करता था ?''

''हाँ जो आकार प्रकार तुमने बतलाया, उसी प्रकार का वह भी था।''

प्रतिदिन इसी प्रकार उस मुरलीवाले की चर्चा होती। प्रतिदिन नगर की प्रत्येक गली में उसका

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मादक, मृदुल स्वर सुनाई पड़ता – ''बच्चों को बहलाने वाला, मुरलियावाला।''

रोहिणी ने भी मुरलीवाले का यह स्वर सुना। तुरंत ही उसे खिलौने वाले का स्मरण हो आया। उसने मन ही मन कहा –''खिलौनेवाला भी इसी तरह गा–गाकर खिलौने बेचा करता था।''

रोहिणी उठकर अपने पति विजय बाबू के पास गयी –''जरा उस मुरलीवाले को बुलाओ तो, चुन्नू-मुन्नू के लिए ले लूँ। क्या पता यह फिर इधर आये, न आए। वे भी, जान पड़ता है, पार्क में खेलने निकल गए हैं।''

विजय बाबू एक समाचार-पत्र पढ़ रहे थे। उसी तरह उसे लिए हुए वे दरवाजे पर आकर मुरलीवाले से बोले –''क्यों भई, किस तरह देते हो मुरली ?''

किसी की टोपी गली में गिर पड़ी। किसी का जूता पार्क में ही छूट गया, और किसी की सोथनी (पाजामा) ही ढीली होकर लटक आई है। इस तरह दौड़ते-हाँफते हुए बच्चों का झुण्ड आ पहुँचा। एक स्वर से सब बोल उठे – ''अम बी लेंदे मुल्ली, और अम बी लेंदे मुल्ली।''

मुरलीवाला हर्ष-गद्गद हो उठा। बोला –''सबको देंगे भैया! लेकिन ज़रा रुको, ठहरो, एक-एक को देने दो। अभी इतनी जल्दी हम कहीं लौट थोड़े ही जाएँगे। बेचने तो आए ही हैं, और हैं भी इस समय मेरे पास एक-दो नहीं, पूरी सत्तावन। ......हाँ बाबूजी, क्या पूछा था आपने, कितने में दीं।.....दी तो वैसे तीन-तीन पैसे के हिसाब से है, पर आपको दो-दो पैसे में ही दे दूँगा।''

विजय बाबू भीतर-बाहर दोनों रूपों में मुस्करा दिए। मन ही मन कहने लगे–कैसा है। देता तो सबको इसी भाव से है, पर मुझ पर उलटा एहसान लाद रहा है। फिर बोले–''तुम लोगों की झूठ बोलने की आदत होती है। देते होंगे सभी को दो-दो पैसे में, पर एहसान का बोझा मेरे ही ऊपर लाद रहे हो।''

मुरलीवाला एकदम अप्रतिभ हो उठा। बोला–''आपको क्या पता बाबू जी कि इनकी असली लागत क्या है। यह तो ग्राहकों का दस्तूर होता है कि दुकानदार चाहे हानि उठाकर चीज क्यों न बेचे, पर ग्राहक यही समझते हैं–दुकानदार मुझे लूट रहा है। आप भला काहे को विश्वास करेंगे? लेकिन सच पूछिए तो बाबूजी, असली दाम दो ही पैसा है। आप कहीं से दो पैसे में ये मुरलियाँ नहीं पा सकते। मैंने तो पूरी एक हजार बनवाई थीं, तब मुझे इस भाव पड़ी हैं।''

विजय बाबू बोले–''अच्छा, मुझे ज्यादा वक्त नहीं, जल्दी से दो ठो निकाल दो।''

दो मुरलियाँ लेकर विजय बाबू फिर मकान के भीतर पहुँच गए। मुरलीवाला देर तक उन बच्चों के झुंड में मुरलियाँ बेचता रहा। उसके पास कई रंग की मुरलियाँ थीं। बच्चे जो रंग पसंद करते, मुरलीवाला उसी रंग की मुरली निकाल देता।

''यह बड़ी मुरली है। तुम यही ले लो बाबू, राजा बाबू तुम्हारे लायक तो बस यह है। हाँ भैये, तुमको वही देंगे। ये लो।.....तुमको वैसी न चाहिए, यह नारंगी रंग की, अच्छा वही लो। ....ले आए पैसे ?अच्छा, ये लो तुम्हारे लिए मैंने पहले ही से यह निकाल रखी थी.....! तुमको पैसे नहीं मिले। तुमने अम्मा से ठीक तरह माँगे न होंगे। धोती पकड़कर पैरों में लिपटकर, अम्मा से पैसे माँगे जाते हैं बाबू! हाँ, फिर जाओ। अबकी बार मिल जाएँगे..... । दुअन्नी है ?तो क्या हुआ, ये लो पैसे वापस लो। ठीक हो गया न हिसाब ?.....मिल गए पैसे ?देखो, मैंने तरकीब बताई। अच्छा, अब तो किसी को नहीं लेना है ? सब ले चुके ? तुम्हारी माँ के पास पैसे

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

नहीं हैं ? अच्छा, तुम भी यह लो। अच्छा, तो अब मैं चलता हूँ।''

इस तरह मुरलीवाला फिर आगे बढ़ गया।

3

आज अपने मकान में बैठी हुई रोहिणी मुरलीवाले की सारी बातें सुनती रही। आज भी उसने अनुभव किया, बच्चों के साथ इतने प्यार से बातें करने वाला फेरीवाला पहले कभी नहीं आया। फिर वह सौदा भी कैसा सस्ता बेचता है। भला आदमी जान पड़ता है। समय की बात है, जो बेचारा इस तरह मारा-मारा फिरता है। पेट जो न कराये, सो थोड़ा।

इसी समय मुरलीवाले का क्षीण स्वर दूसरी निकट की गली से सुनाई पड़ा – ''बच्चों को बहलानेवाला, मुरलीवाला!''

रोहिणी इसे सुनकर मन ही मन कहने लगी– और स्वर कैसा मीठा है इसका!

बहुत दिनों तक रोहिणी को मुरलीवाले का वह मीठा स्वर और उसकी बच्चों के प्रति वे स्नेहसिक्त बातें याद आती रहीं। महीने आए और चले गए। फिर मुरलीवाला न आया। धीरे–धीरे उसकी स्मृति भी क्षीण हो गई।

4

आठ मास बाद –

सर्दी के दिन थे। रोहिणी स्नान करके मकान की छत पर चढ़कर आजानुलंबित केश-राशि सुखा रही थी। इसी समय नीचे की गली में सुनाई पड़ा – ''बच्चों को बहलानेवाला, मिठाईवाला।''

मिठाईवाले का स्वर उसके लिए परिचित था, झट से रोहिणी नीचे उतर आई। उस समय उसके पति मकान में नहीं थे। हाँ, उनकी वृद्धा दादी थीं। रोहिणी उनके निकट आकर बोली–''दादी, चुन्नू-मुन्नू के लिए मिठाई लेनी है। जरा कमरे में चलकर ठहराओ तो। मैं उधर कैसे जाऊँ, कोई आता न हो जरा हटकर मैं भी चिक की ओट में बैठी रहूँगी।''

दादी उठकर कमरे में आकर बोली–''ऐ मिठाईवाले, इधर आना।''

मिठाईवाला निकट आ गया। बोला –''कितनी मिठाई दूँ माँ ? ये नए तरह की मिठाइयाँ हैं -रंग-बिरंगी, कुछ-कुछ खट्टी, कुछ-कुछ मीठी, जायकेदार, बड़ी देर तक मुँह में टिकती हैं। जल्दी नहीं घुलती। बच्चे बड़े चाव से चूसते हैं। इन गुणों के सिवा ये खाँसी भी दूर कर सकती है! कितनी दूँ ? चपटी, गोल पहलदार गोलियाँ हैं। पैसे की सोलह देता हूँ।''

दादी बोली –''सोलह तो बहुत कम होती हैं, भला पचीस तो देते।'' मिठाईवाला –''नहीं दादी, अधिक नहीं दे सकता। इतना भी देता हूँ, यह अब मैं तुम्हें क्या..... । खैर, मैं अधिक न दे सकूँगा।''

रोहिणी दादी के पास ही थी। बोली –''दादी, फिर भी काफी सस्ता दे रहा है। चार पैसे की ले लो। यह पैसे रहे।

मिठाईवाला मिठाइयाँ गिनने लगा।

''तो चार की दे दो। अच्छा, पच्चीस नहीं सही, बीस ही दो। अरे हाँ, मैं बूढ़ी हुई मोल-भाव अब मुझे

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ज्यादा करना आता भी नहीं।''

कहते हुए दादी के पोपले मुँह से जरा-सी मुस्कराहट भी फूट निकली।

रोहिणी ने दादी से कहा–''दादी, इससे पूछो, तुम इस शहर में और भी कभी आए थे या पहली बार आए हो ? यहाँ के निवासी तो तुम हो नहीं।''

दादी ने इस कथन को दोहराने की चेष्टा की ही थी कि मिठाईवाले ने उत्तर दिया –''पहली बार नहीं और भी कई बार आ चुका हूँ।''

रोहिणी चिक की आड़ ही से बोली –''पहले यही मिठाई बेचते हुए आए थे, या और कोई चीज लेकर ?''

मिठाई वाला हर्ष, संशय और विस्मयादि भावों में डूबकर बोला –''इससे पहले मुरली लेकर आया था, और उससे भी पहले खिलौने लेकर।''

रोहिणी का अनुमान ठीक निकला। अब तो वह उससे और भी कुछ बातें पूछने के लिए अस्थिर हो उठी। वह बोली –''इन व्यवसायों में भला तुम्हें क्या मिलता होगा ?

वह बोला –''मिलता भला क्या है! यही खाने भर को मिल जाता है। कभी नहीं भी मिलता है। पर हाँ, संतोष, धीरज और कभी-कभी असीम सुख जरूर मिलता है और यही मैं चाहता भी हूँ।''

''सो कैसे ?वह भी बताओ ?''

''अब व्यर्थ उन बातों की क्यों चर्चा करूँ ?उन्हें आप जाने ही दें। उन बातों को सुनकर आपको दुःख ही होगा।''

''जब इतना बताया है, तब और भी बता दो। मैं बहुत उत्सुक हूँ। तुम्हारा हर्जा न होगा। मिठाई मैं और भी कुछ ले लूँगी।''

अतिशय गंभीरता के साथ मिठाईवाले ने कहा –''मैं भी अपने नगर का एक प्रतिष्ठित आदमी था। मकान, व्यवसाय, गाड़ी-घोड़े, नौकर-चाकर सभी कुछ था। स्त्री थी, छोटे-छोटे दो बच्चे भी थे। मेरा वह सोने का संसार था। बाहर संपत्ति का वैभव था, भीतर सांसारिक सुख था। स्त्री सुन्दरी थी, मेरी प्राण थीं। बच्चे ऐसे सुन्दर थे, जैसे सोने के सजीव खिलौने। उनकी अठखेलियों के मारे घर में कोलाहल मचा रहता था। समय की गति! विधाता की लीला। अब कोई नहीं है। दादी, प्राण निकाले नहीं निकले। इसलिए अपने उन बच्चों की खोज में निकला हूँ। वे सब अन्त में होंगे, तो यहीं कहीं। आखिर, कहीं न कहीं जन्में ही होंगे। उस तरह रहता, घुलघुल कर मरता। इस तरह सुख-संतोष के साथ मरूँगा। इस तरह के जीवन में कभी-कभी अपने उन बच्चों की एक झलक-सी मिल जाती है। ऐसा जान पड़ता है, जैसे वे इन्हीं में उछल-उछलकर हँस–खेल रहे हैं। पैसों की कमी थोड़े ही है, आपकी दया से पैसे तो काफी है। जो नहीं है, इस तरह उसी को पा जाता हूँ।

रोहिणी ने अब मिठाईवाले की ओर देखा– उसकी आँखें आँसुओं से तर हैं।

इस समय चुन्नू-मुन्नू आ गए। रोहिणी से लिपटकर, उसका आँचल पकड़ कर बोले –''अम्माँ, मिठाई!''

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

"मुझसे लो।" यह कहकर तत्काल कागद की दो पुड़ियाँ, मिठाइयों से भरी, मिठाईवाले ने चुन्नू-मुन्नू को दे दीं।

रोहिणी ने भीतर से पैसे फेंक दिए।

मिठाईवाले ने पेटी उठाई, और कहा –"अब इस बार ये पैसे न लूँगा।"

दादी बोली – "अरे-अरे, न न अपने पैसे लिए जा भाई!"

तब तक आगे फिर सुनाई पड़ा उसी प्रकार मादक-मृदुल स्वर में –"बच्चों को बहलाने वाला मिठाईवाला।"

•••

शब्दार्थ –

मादक–नशीले / मधुर–मीठे, सुनने में प्रिय / स्नेहाभिषिक्त कंठ–स्नेह में भीगा गला / मृदुल–कोमल / अप्रतिभ–उदास / अतिशय–अत्यधिक

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. मुरलीवाला एकदम अप्रतिभ हो उठा –
   (क) अपने पर अविश्वास किए जाने के कारण।
   (ख) वस्तुओं का अधिक मूल्य लेने के कारण।
   (ग) विजय बाबू की कुटिल मुस्कान के कारण।
   (घ) मुरली न बिकने की चिंता के कारण। ( )
2. मिठाईवाला गली-गली मिठाई बेचता फिरता था –
   (क) पैसा कमाने के लिए
   (ख) अपने बच्चों को खोजने के लिए
   (ग) बच्चों को प्रसन्न करने के लिए
   (घ) परिवार पालन करने के लिए ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. मिठाईवाला कहानी के कहानीकार कौन हैं ?
2. मिठाईवाला कहानी में किन-किन रूपों में आया था ?
3. मुरलीवाला किस तरह का साफा बाँधता था ?
4. बच्चों से खिलौने की कीमत सुनकर रोहिणी ने क्या सोचा ?
5. मुरलीवाला कितने पैसे में मुरली बेचता था ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. मिठाईवाला कहानी की मूल संवेदना क्या है ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2. 'पेट जो न कराये सो थोड़ा है' इस कथन से मिठाईवाले का कौन-सा मनोभाव प्रकट होता है ?
3. मिठाईवाले ने अपनी मिठाइयों की क्या-क्या विशेषताएँ बताईं ?
4. मिठाईवाला अपना सामान सस्ते में क्यों बेचता था ?
5. मुरलीवाले ने बच्चों को अपनी माँ से पैसे माँगने का क्या तरीका बताया ?

निबंधात्मक प्रश्न –

1. 'मिठाईवाला' कहानी बाल मनोविज्ञान के विविध कोणों को स्पष्ट करती है।' उक्त कथन की उदाहरण समीक्षा कीजिए।
2. अतिशय गंभीरता के साथ मिठाईवाले ने रोहिणी को अपनी क्या कहानी सुनाई ?
3. पाठ में आए निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

   (क) ''आपको क्या पता बाबूजी.........इस भाव पड़ी है।''

   (ख) ''उस तरह रहता.........उसी को पा जाता हूँ।''

•••

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

15. भारतीय संस्कृति

बाबू गुलाबराय

लेखक परिचय –

बाबू गुलाबराय का जन्म सन् 1888 को इटावा में हुआ। आप छतरपुर रियासत के महाराज के प्राईवेट सेक्रेटरी रहे थे, बाद में आगरा के सैण्ट जोन्स कॉलेज में प्रोफेसर रहे। बाबूजी मननशील व्यक्ति थे। हिंदी के प्रख्यात आलोचक, निबंधकार एवं संपादक के रूप में बाबू गुलाबराय ने प्रशंसनीय साहित्य सेवा की। 'साहित्य-संदेश' नामक पत्र द्वारा आपने साहित्य-जगत की खूब सेवा की। इस पत्र में आपके भावात्मक और विचारात्मक दोनों प्रकार के लेख प्रकाशित हुए।

आपका काव्यशास्त्र, निबंध एवं आलोचना के क्षेत्र में समान अधिकार था। 'ठलुआ क्लब', 'मेरी असफलताएँ', 'कुछ गहरे कुछ उथले' उनके श्रेष्ठ निबंध संग्रह हैं। उनके निबंध व्यक्तिपरक, विचारपरक एवं संस्मरणात्मक हैं। आपके लेख गंभीर और विचार-पूर्ण हैं। लेखों में सजीवता है, मधुर व्यंग्य और हास्य के पुट से आपके लेखों में वार्तालाप का-सा आनंद आता है। बाबू गुलाबराय ने व्याख्यात्मक शैली का प्रयोग करते हुए गंभीर आलोचकीय मुद्रा को त्याग कर अनौपचारिक रूप से लेखन कार्य किया है।

आपके विचारात्मक निबंधों की भाषा में तत्सम शब्दों के साथ उर्दू के शब्दों और मुहावरों का प्रयोग मिलता है। भावपूर्ण लेखों में भाषा गंभीर है। गुलाबराय जी की भाषा विषयानुकूल सरल और गंभीर रही है। गंभीर विषयों पर लिखे गए लेखों की भाषा संस्कृत-गर्भित है तथा हास्य रस पर लिखे गए लेखों की भाषा उर्दू शब्दों और मुहावरों से युक्त है। भाषा की विविधता आपके गंभीर ज्ञान का प्रमाण है। भाषा की तरह शैली भी विषयानुकूल गवेषणात्मक और समीक्षात्मक बन गई है।

मूल पाठ –

'संस्कृति' शब्द का संबंध संस्कार से है जिसका अर्थ है संशोधन करना, उत्तम बनाना, परिष्कार करना। अंगरेजी शब्द 'कल्चर' में वही धातु है जो 'एग्रीकल्चर' में है। इसका भी अर्थ 'पैदा करना, सुधारना' है। संस्कार व्यक्ति के भी होते हैं और जाति के भी। जातीय संस्कारों को ही संस्कृति कहते हैं। संस्कृति एक समूहवाचक शब्द है। जलवायु के अनुकूल रहन-सहन की विधियाँ और विचार-परंपराएँ जाति के लोगों में दृढ़मूल हो जाने से जाति के संस्कार बन जाते हैं। इनको प्रत्येक व्यक्ति अपनी निजी प्रकृति के अनुकूल न्यूनाधिक मात्रा में पैतृक संपत्ति के रूप में प्राप्त करता है। ये संस्कार व्यक्ति के घरेलू जीवन तथा सामाजिक जीवन में परिलक्षित होते हैं। मुनष्य अकेला रहकर भी इनसे छुटकारा नहीं पा सकता। ये संस्कार दूसरे देश में निवास करने अथवा दूसरे देशवासियों के संपर्क में आने से कुछ परिवर्तित भी हो सकते हैं और कभी-कभी दब भी जाते हैं; किंतु अनुकूल वातावरण प्राप्त करने पर फिर उभर आते हैं।

संस्कृति का बाह्य पक्ष भी होता है और आंतरिक भी। उसका बाह्य पक्ष आंतरिक का प्रतिबिम्ब नहीं तो उससे संबंधित अवश्य रहता है। हमारे बाह्य आचार, हमारे विचारों और मनोवृत्तियों के परिचायक होते हैं। संस्कृति एक देश-विशेष की उपज होती है, उसका संबंध देश के भौतिक वातावरण और उसके

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पालित, पोषित एवं परिवर्द्धित विचारों से होता है।

भाषा संस्कृति का कुछ बाहरी अंग-सा है, फिर भी वह हमारी जातीय मनोवृत्ति की परिचायिका होती है। 'कुशल' शब्द को ही लीजिए; वह हमारी उस संस्कृति की ओर संकेत करता है जिसमें कि पूजा-विधान की संपन्नता के लिए कुश लाना एक दैनिक कार्य बना हुआ था। जो कुश ला सकता था वह तन्दुरुस्त भी और होशियार भी समझा जाता था। 'प्रवीण' का संबंध वीणा से है – प्रकर्षः वीणायां प्रवीणः। हमारी भाषा में 'गो' से संबंधित शब्दों का बाहुल्य है; जैसे गोधूलि-बेला (जिसमें विवाह जैसे शुभ कार्य संपन्न होते हैं), गोष्ठी, गवेषणा (गाय की चाह या खोज के अर्थ-विस्तार द्वारा गवेषणा का अर्थ 'खोज' हो गया), गवाक्ष (गौ की आँख-खिड़कियों का आकार शायद पहले गोल होता होगा), गुरसी (अँगीठी गोरसी से बनी है जिसमें गौ का दूध औटाया जाता था), गोपुच्छ (नाटक को गौ की पूँछ के समान बताया गया है – अंत में आकर मूल कथा ही रह जाती है और उसका फैलाव बंद हो जाता है), गोमुखी (जिसके भीतर माला फेरी जाती है और जिससे जल गिरता है उसे भी कहते हैं), गोपन (छिपाना–यह शब्द भी गौ से संबंध रखता है; जो वस्तु पाली जाती है, सुरक्षित रखी जाती है, वह छिपाकर भी रखी जाती है) आदि। यह बाहुल्य हमारे समाज में गौ की प्रधानता का द्योतक है।

भारत गरम देश है। यहाँ हृदय को शीतल करना मुहावरा है, किंतु आंग्ल देश ठंडा है, वहाँ की परिस्थिति के अनुकूल warm reception और cold treatment आदि मुहावरे हैं। breaking the ice मौन भंग करने के अर्थ में आता है। ice ठंडेपन का प्रतीक है और मौन ठंडेपन का ही द्योतक है। अँग्रेजी का प्रयोग killing two birds with one stone वहाँ की हिंसात्मक प्रवृत्ति का परिचायक है। हमारे यहाँ इसका अनुवाद हुआ है 'एक ढेले में दो पंछी' किंतु उसमें वह मधुरता नहीं जो 'एक पंथ दो काज' में है। उसके कहते ही हमको 'गोरस बेचन हरि मिलन, एक पंथ दो काज' की बात याद आ जाती है।

हमारा रहन-सहन, पोशाक आदि सभी बातें जातीय परिस्थिति, देश के वातावरण और देश की भावनाओं से संबंधित हैं। जमीन पर बैठना, हाथ से खाना, नहाकर खाना, लम्बे-ढीले कपड़े पहनना, बेसिले कपड़ों को अधिक शुद्ध मानना, ये सब चीजें देश की आवश्यकताओं और आदर्शों के अनुकूल हैं। गरम देश में पृथ्वी का स्पर्श बुरा नहीं लगता। इसीलिए यहाँ जूतों का इतना मान नहीं है जितना कि विलायत में। यहाँ हाथ से खाने का चलन इसलिए हुआ कि यहाँ हर समय हाथ धोये जा सकते हैं। अन्न को भी देवता माना जाता है, उससे सीधा संपर्क अधिक सुखद और स्वाभाविक समझा जाता है। यहाँ नहाने के लिए जल की कमी नहीं और नहाने की आवश्यकता भी अधिक होती है, इसलिए नहाना धर्म का अंग हो गया है।

इस देश में शरीर को अधिक महत्त्व नहीं दिया जाता है। इसलिए लम्बे कपड़ों को, जो शरीर को उभार में न लावें और उसे पूर्णतया ढक लें, अधिक महत्त्व दिया जाता है। बेसिले कपड़े जैसे धोती आदि नित्य सहज में धोये जा सकते हैं। उसमें सीवन का भी किसी प्रकार का मैल नहीं रह सकता है, इसीलिए वे अधिक पवित्र माने जाते हैं। हमारे यहाँ नंगे सिर की अपेक्षा सर ढकना अधिक सांस्कृतिक समझा जाता है। ऐसा सभी पूर्वी देशों में है। यहूदियों के प्रार्थना-भवनों में भी नंगे सिर नहीं बैठते। बाल भी शरीर के अंग होने के कारण ढके जाने की अपेक्षा रखते हैं।

इसी प्रकार देश के वातावरण और रुचि के अनुकूल ही मांगल्य वस्तुओं का विधान किया जाता है। फूलों में हमारे यहाँ कमल को सबसे अधिक महत्त्व दिया जाता है। इसका संबंध जल और सूर्य दोनों से है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

वह जल में रहता है और सूर्य को देखकर प्रसन्न होता है। जल और सूर्य देश की महती आवश्यकताओं में से हैं, इसका दोनों से संबंध है। कमल ही सब प्रकार के शारीरिक सौंदर्य का उपमान बनता है – चरण–कमल, नेत्र-कमल, मुख-कमल आदि कमल की महत्ता के द्योतक हैं। ''नव कंज लोचन कंज मुख कर कंज पद कंजारुणम्'' इस छंद में सभी अंग कमल बन गए हैं।

आम्र (रसाल), कदली, दूर्वादल, नारियल, श्रीफल (शरीफा) आदि को मांगल्य कार्यों में प्रमुख स्थान दिया जाता है। आम यहाँ का विशेष मेवा है। इसमें रस भरा रहता है और इसका बौर बसन्त का अग्रदूत है। हमारे यहाँ अश्वत्थ (पीपल) को भी विशेष महत्ता दी गई है। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान् की विभूतियों में अश्वत्थ को भी माना गया है – 'अश्वत्थः सर्व वृक्षाणाम्।' भारतीय संस्कृति में जिन-जिन वस्तुओं को महत्ता दी गई है वे सब श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान् की विभूतियों के रूप में आ गई हैं। भगवान् बुद्ध को भी अश्वत्थ वृक्ष के ही नीचे बुद्धत्व प्राप्त हुआ था। स्थावर वस्तुओं में हिमालय को, सरिताओं में गंगा को, पक्षियों में गरुड़ को तथा ऋतुओं में बसन्त ऋतु को महत्ता दी गई है। स्त्रीलिंग चीजों में कीर्ति, वाणी, स्मृति, बुद्धि और धृति (धैर्य) को महत्ता दी गई है। यह भी हमारी जातीय मनोवृत्ति का परिचायक है।

यह तो रहे संस्कृति के बाह्य अंग। संस्कृति के आंतरिक अंगों पर भारत में विशेष बल दिया गया है। धर्म ग्रंथों में अच्छे मनुष्यों के जो लक्षण बतलाए गए हैं, मनुस्मृति में जो धृति, क्षमा, दया, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय-निग्रह, धी, विद्या, सत्य और अक्रोध धर्म के दस लक्षण बतलाए गए हैं, वे सब भारतीयों की मानसिक और आध्यात्मिक संस्कृति के अंग हैं। श्रीमद्भगवद्गीता में दैवी सम्पदा वालों के लक्षण दिए गए हैं जिनमें 'अभय' को सबसे पहला स्थान दिया गया है। स्थितप्रज्ञ के लक्षण (दूसरा अध्याय), सात्विक चीजों के लक्षण (सत्रहवाँ अध्याय) आदि सब भारतीय संस्कृति के अनुकूल सभ्य और शिष्ट पुरुष के लक्षण हैं। इसलिए सभी महाकाव्य ऐसे लक्षणों से भरे पड़े हैं। 'रघुवंश' में रघुकुल के राजाओं के जो गुण बतलाए गए हैं, वे न केवल भारत के सांस्कृतिक आदर्शों के परिचायक हैं, बल्कि उनसे अतीत का भव्य चित्र हमारे सम्मुख आ जाता है। देखिए –

''दूसरों को दान देने के लिए ही जो सम्पन्न बनते थे (उनका धन दानाय था), सत्य के लिए ही मितभाषी बने हुए थे (मिथ्याभिमान के कारण वे कम बातचीत नहीं करते थे), जो यश के लिए विजय प्राप्त करते थे (धन-राज्य छीनने के लिए नहीं) (यश को अपने यहाँ अधिक महत्त्व दिया गया है। हमारे पूर्वज यश के लिए समस्त संपदा और वैभव त्यागने को सदैव तत्पर रहते थे। अर्जुन से भी श्रीकृष्ण ने अंतिम अपील यही की थी – 'यशो लभस्व'), संतान के लिए (कामोपभोग के लिए नहीं, वरन् पितृ-ऋण चुकाने और समाज को अच्छे नागरिक देने के अर्थ) जो गृहस्थ बनते थे, बाल्यावस्था में जो विद्याध्ययन करते थे, यौवन में विषय-भोग करने वाले, वृद्धावस्था में मुनिवृत्ति को धारण करने वाले और योग द्वारा शरीर को त्यागने वाले (आजकल तो रोगेणान्ते तनुत्यजाम् की बात हो गई है) ऐसे रघुवंशियों के कुल का मैं (कालिदास) वर्णन करता हूँ; यद्यपि मेरे पास वाणी का वैभव अधिक नहीं है। इससे पता चलता है कि प्राचीन भारत में त्याग, सत्य, यश, आश्रम–विभाग और सामाजिक कल्याण की ओर अधिक ध्यान दिया जाता था। संक्षेप में भारतीय संस्कृति के मुख्य-मुख्य अंग इस प्रकार बतलाए जा सकते हैं –

(1) आध्यात्मिकता – इसके अन्तर्गत नश्वर शरीर का तिरस्कार, परलोक, सत्य, अहिंसा, तप आदि आध्यात्मिक मूल्यों को अधिक महत्त्व देना, आवागमन की भावना, ईश्वरीय न्याय में विश्वास आदि बातें

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हैं। हमारे यहाँ कि संस्कृति तपोवन-संस्कृति रही है जिसमें विस्तार ही विस्तार था – **'प्रथम साम रव तव तपोवने प्रथम प्रभात तवगमने।'** विस्तार के वातावरण में आत्मा का संकुचित रूप नहीं रह सकता था इसी के अनुकूल आत्मा का सर्वव्यापक विस्तार माना गया है। इसीलिए हमारे यहाँ सर्वभूत हित पर अधिक महत्त्व दिया गया है – **'आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति सः पश्यति।'**

कीरी और कुंजर में एक ही आत्मा का विस्तार देखा जाता है। इसी से गांधीजी की सर्वोदय की भावना को बल मिला। हमारे यहाँ के मनीषी **'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः'** का पाठ पढ़ते थे।

नश्वर शरीर के तिरस्कार की भावना हमारे यहाँ के लोगों को बड़े-बड़े बलिदानों के लिए तैयार कर सकी। शिवि, दधीचि, मोरध्वज इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं। महाराज दिलीप ने गुरु की प्रसन्नता के लिए नन्दिनी नाम की गौ को चराने का व्रत धारण किया था। उसकी सिंह से रक्षा करने के लिए वे अपने प्राणों का भी उत्सर्ग करने को तैयार हो जाते हैं। वे सिंह से कहते हैं कि यदि तुम मुझ पर दया ही करना चाहते हो तो मेरे यश-शरीर पर दया करो; पंचभूतों से बने हुए नाशवान् शरीर के पिण्डों पर मुझ जैसे लोगों की आस्था नहीं होती। हमारे यहाँ का मार्ग साधना का मार्ग रहा है और तप, त्याग और संयम को महत्ता दी गई है। क्या बौद्ध, क्या जैन और क्या वैष्णव, सभी लोग इन गुणों की सराहना करते हैं।

हमारे यहाँ की आध्यात्मिकता मन और बुद्धि से परे जाती है। वह आत्मा का साक्षात् अनुभव करना चाहती हैं। यही भारतीय और पाश्चात्य दर्शनों का अंतर है। हमारे दर्शन का अर्थ आत्मा का दर्शन ही है, पाश्चात्य देशों में वह बुद्धि-विलास के रूप में रहा है।

(2) समन्वय बुद्धि – आत्मा की एकता के आधार पर हमारे यहाँ अनेकता में एकता देखी गई है।

इसी से मिलती-जुलती समन्वय-भावना है। हमारे विचारकों ने सभी वस्तुओं में सत्य के दर्शन किए हैं। उनका धर्म अविरोधी धर्म रहा है।

इसीलिए हमारे यहाँ धर्म–परिवर्तन को विशेष महत्त्व नहीं दिया गया है। फिर भी संस्कृतियों का आदान-प्रदान हुआ है। तुलसीदासजी जैसे महात्मा ने, जो भारतीय संस्कृति के प्रतिनिधि कहे जा सकते हैं, समन्वय बुद्धि से ही काम लिया था। उन्होंने शैव और वैष्णवों का, ज्ञान और भक्ति का तथा अद्वैत और विशिष्टाद्वैत का समन्वय किया था। आधुनिक कवियों में प्रसादजी ने अपनी 'कामायनी' में ज्ञान, इच्छा और क्रिया का समन्वय किया है। मानव-कल्याण में ज्ञान, इच्छा, क्रिया का पार्थक्य ही बाधक होता है।

ज्ञान दूर कुछ, क्रिया भिन्न है, इच्छा पूरी क्यों हो मन की।
एक दूसरे से न मिल सके, यह विडम्बना है जीवन की।।

(3) वर्णाश्रम विभाग – हमारी संस्कृति में कार्यविभाजन को बड़ा महत्त्व दिया गया है। समाज को भी चार भागों में बाँटा है और मानव-जीवन को भी। सामाजिक विभाजन बढ़ते-बढ़ते संकुचित और अपरिवर्तनीय बन गया। अपरिवर्तनीय बनने में भी इतनी हानि न थी यदि सबका महत्त्व सिद्धान्त और व्यवहार दोनों में एक-सा मान लिया गया होता। कुछ लोगों ने श्रेष्ठता का अधिकार कर लिया और 'पण्डितः समदर्शिनः' की बात भूल गए। हमारे सभी प्रचारकों और सुधारकों ने इसके विरुद्ध आवाज उठाई और उन सब में जोरदार आवाज रही, भगवान् गौतम बुद्ध, संत कबीर और महात्मा गाँधी की। पुरुष सूक्त ने तो चारों वर्णों को एक ही विराट् शरीर का अंग माना है – **'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत् बाहू राजन्यः कृतः।'**

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

एक ही शरीर के विभिन्न अंगों में कोई ऊँचा–नीचा नहीं होता। सामाजिक संगठन का हमारे यहाँ बहुत ऊँचा आदर्श रखा गया था। वैदिक ऋषियों की तो यही भावना थी, लेकिन हम उसको भुला बैठे।

(4) अहिंसा, करुणा, मैत्री और विनय – इन चार गुणों को इसलिए ही रखा गया है कि इनके मूल में अहिंसा की भावना है और करुणा, मैत्री तथा विनय अहिंसा व्रत के पालन में सहायक होते हैं। हिंसा केवल वध करने में ही नहीं होती है वरन् किसी का उचित भाग ले लेने और दूसरों का जी दुखाने में भी। इसीलिए हमारे यहाँ 'सत्यं ब्रूयात्' के साथ 'प्रियं ब्रूयात्' का पाठ पढ़ाया गया है। करुणा प्रायः छोटों के प्रति होती है, मैत्री बराबर वालों के प्रति और विनय बड़ों के प्रति किंतु हमको सभी के प्रति शिष्टता का व्यवहार करना चाहिए। विनय शील का एक अंग है, उसको बड़ा आवश्यक माना गया है। भगवान् कृष्ण ने ब्राह्मण के विशेषणों में विद्या के साथ विनय भी लगाया – **'विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे'।** विनय भारतीय संस्कृति की एक विशेषता है। असांस्कृतिक लोग ही उद्धत होते हैं।

(5) प्रकृति प्रेम – भारतवर्ष पर प्रकृति की विशेष कृपा रही है। यहाँ सभी ऋतुएँ समय पर आती हैं और पर्याप्त काल तक ठहरती हैं। ऋतुएँ अपने अनुकूल फल-फूलों का सृजन करती हैं। धूप और वर्षा के समान अधिकार के कारण यह भूमि शस्यश्यामला हो जाती है। यहाँ का नगाधिराज हिमालय कवियों को सदा से प्रेरणा देता आ रहा है और यहाँ की नदियाँ मोक्षदायिनी समझी जाती रही हैं। यहाँ कृत्रिम धूप और रोशनी की आवश्यकता नहीं पड़ती। भारतीय मनीषी जंगल में रहना पसंद करते थे। वृक्षों में पानी देना एक धार्मिक कार्य समझते हैं। सूर्य और चंद्र दर्शन नित्य और नैमित्तिक कार्यों में शुभ माना जाता है। यहाँ के पशु-पक्षी, लता-गुल्म और वृक्ष तपोवनों के जीवन का एक अंग बन गए थे, तभी तो शकुन्तला के पतिगृह जाते समय जाने की उन सबों से आज्ञा चाहते हैं –

पीछे पीवत नीर जो पहले तुमको प्याय।
फूल–पात तोरति नहीं गहने हू के चाय।।
जब तुअ फूलन के दिवस आवत हैं सुखदान।
फूली अंग समाति नहिं उत्सव करत महान।।
सो यह जाति शकुन्तला आज पिया के गेह।
आज्ञा देहु पयान की तुम सब सहित सनेह।।

हमारी संस्कृति इतने में ही संकुचित नहीं है। पारिवारिकता पर हमारी संस्कृति में विशेष बल दिया गया है। भारतीय संस्कृति में शोक की अपेक्षा आनंद को अधिक महत्त्व दिया गया है। इसलिए हमारे यहाँ शोकान्त नाटकों का निषेध है। भारत में आतिथ्य को विशेष महत्त्व प्रदान किया गया है। अतिथि को भी देवता माना गया है – 'अतिथिदेवोभव'।

हमारी संस्कृति के मूल अंगों पर प्रकाश डाला जा चुका है। भारत में विभिन्न जातियों के पारस्परिक सम्पर्क में आने से संस्कृति की समस्या कुछ जटिल हो गई। पुराने जमाने में द्रविड़ और आर्य संस्कृति का समन्वय बहुत रीति से हो गया था। इस समय मुस्लिम और अंग्रेजी संस्कृति का मेल हुआ है। हम इन संस्कृतियों से अछूते नहीं रह सकते हैं। भारतीय संस्कृति की समन्वयशीलता यहाँ भी अपेक्षित है किंतु समन्वय में अपना न खो बैठना चाहिए। दूसरी संस्कृतियों के जो अंग हमारी संस्कृति में अविरोध रूप से

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अपनाए जा सकें उनके द्वारा अपनी संस्कृति को सम्पन्न बनाना आपत्तिजनक नहीं। अपनी संस्कृति अच्छी हो या बुरी, चाहे दूसरों की संस्कृति से मेल खाती हो या न खाती हो, उससे लज्जित होने की कोई बात नहीं।

प्राचीन भारतीय संस्कृति में धार्मिक कृत्यों में एकान्त-साधना पर अधिक बल दिया गया है, यद्यपि सामूहिक प्रार्थना का अभाव नहीं है। हमारे कीर्तन आदि तथा महात्मा गाँधी द्वारा परिचालित प्रार्थना-सभाएँ धर्म में एकत्व की सामाजिक भावना को उत्पन्न करती आई है। हमारे यहाँ सामाजिकता की अपेक्षा पारिवारिकता को महत्त्व दिया गया है। पारिवारिकता को खोकर सामाजिकता को ग्रहण करना तो मूर्खता होगी; किन्तु पारिवारिकता के साथ-साथ सामाजिकता बढ़ाना श्रेयस्कर होगा। भाषा और पोशाक में अपनत्व खोना जातीय व्यक्तित्व को तिलांजलि देना होगा। हमें अपनी सम्मिलित परिवार की प्रथा को इतना न बढ़ा देना चाहिए कि व्यक्ति का व्यक्तित्व ही न रह जाए और न व्यक्ति को इतना महत्त्व देना चाहिए कि गुरुजनों का आदर-भाव भी न रहे और पारिवारिक एकता पर कुठाराघात हो। कपड़े और जूतों की सभ्यता और कम से कम कपड़ा पहनने और नंगे पैर रहने की सभ्यता में भी समन्वय की आवश्यकता है। अंग्रेजी सभ्यता में जूतों का विशेष महत्त्व है, किंतु उसे अपने यहाँ के चौका और पूजागृहों की सीमा पर आक्रमण न करना चाहिए। हमारी सभ्यता मिट्टी और पीतल के बर्तनों की है। हमारी सभ्यता स्वास्थ्य विज्ञान के नियमों के अधिक अनुकूल है। यदि हम कुल्हड़ों के कूड़े का अच्छा बन्दोबस्त कर सकें उससे अच्छी कोई चीज नहीं है। आलस्य को वैज्ञानिकता पर विजय न पाना चाहिए। अँग्रेजी संस्कृति से भी सफाई और समय की पाबन्दी की बहुत-सी बातें सीखी जा सकती हैं, किंतु अपनी संस्कृति के मूल अंगों पर ध्यान रखते हुए समन्वय बुद्धि से काम लेना चाहिए। समन्वय द्वारा ही संस्कृति क्रमशः उन्नति करती रही है और आज भी हमें उसे समन्वयशील बनाना है।

•••

शब्दार्थ –

कंज–कमल / स्थावर–स्थिर, अचल / कुंजर–हाथी / पंचभूत–पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश, पवन, पाँच तत्व जिनसे शरीर बना है / उद्धत–उग्र, प्रचंड / शस्यश्यामला–नई फसल की हरियाली / नैमित्तिक–किसी विशेष प्रयोजन की सिद्धि के लिए हो / कुठाराघात–गहरी चोट / समन्वय–संयोग, मिलाप।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. 'भारतीय संस्कृति' निबंध के निबंधकार कौन हैं ?

   (क) बाबू घनश्यामदास (ख) बाबू गुलाबराय

   (ग) हरिश्चन्द्र (घ) आचार्य हजारी प्रसाद ( )

2. 'गोरस बेचन हरि मिलन, एक पंथ दो काज' लोकोक्ति का अर्थ है –

   (क) दूध बेचने जाना (ख) हरि से मिलना

   (ग) एक समय में दो कार्य संपन्न होना (घ) दो पक्षियों को मारना ( )

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. संस्कृति शब्द का क्या अर्थ है ?
2. संस्कृति के कितने पक्ष हैं ?
3. 'कुशल' शब्द का क्या अर्थ है ?
4. 'भाषा' संस्कृति का कौन-सा अंग है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. मनुस्मृति में अच्छे मनुष्य के क्या लक्षण बताए गए हैं ?
2. 'रघुवंश' में रघुकुल के राजाओं के कौन-से गुण बताए गए हैं ?
3. मांगलिक कार्यों में किन पदार्थों को प्रमुख स्थान दिया जाता है ?
4. साधना मार्ग में किन तीन गुणों को महत्ता दी गई है ?
5. भारतीय और पाश्चात्य दर्शन में प्रमुख अंतर क्या है ?

निबंधात्मक प्रश्न –

1. संस्कृति के बाह्यस्वरूप में किन बातों को स्थान दिया जाता है ?
2. पतिगृह जाते हुए शकुन्तला ने किनसे और क्यों आज्ञा प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त की ?
3. भारतीय संस्कृति के प्रमुख अंगों पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।
4. भारतीय संस्कृति में प्रकृति प्रेम की विशेषता को सोदाहरण समझाइए।
5. पाठ में आए निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

   (क) हमारी संस्कृति इतने में ही संकुचित नहीं है। ....अतिथि को भी देवता माना गया है – 'अतिथिदेवोभव'।

   (ख) हमारे यहाँ सामाजिकता की अपेक्षा............पारिवारिक एकता पर कुठाराघात हो।

•••

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

16. शिरीष के फूल

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

लेखक परिचय –

भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन और इतिहास के आख्याता, प्रसिद्ध निबंधकार, उपन्यासकार, आलोचक एवं सफल अध्यापक रहे आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म सन् 1907 ई० में बलिया जिले (उत्तरप्रदेश) के 'आरत दुबे का छपरा' नामक गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम श्री अनमोल द्विवेदी एवं माता का नाम श्रीमती ज्योतिष्मती था। इनके जन्म का नाम बैजनाथ था। जन्म के समय पिता को किसी मुकदमें में एक हजार रुपये की प्राप्ति होने पर इनके पिता ने इनका नाम हजारी प्रसाद रख दिया। इनकी प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई। इन्होंने संस्कृत, बंगाली, हिन्दी, अंग्रेजी, भाषाओं का गहन अध्ययन किया। ये ज्योतिशशास्त्रविद् भी थे। ये शांतिनिकेतन, काशी एवं पंजाब के विश्वविद्यालयों में हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष रहे। सन् 1949 ई० में लखनऊ विश्वविद्यालय ने डी०लिट्० की उपाधि से सम्मानित किया एवं सन् 1957 में भारत सरकार ने इन्हें 'पद्मभूषण' से अलंकृत किया। 19 मई सन् 1979 को आपका देहावसान हुआ।

द्विवेदी जी का साहित्य सम्बन्धी दृष्टिकोण अत्यंत व्यापक एव उदार है। उनका मानना है कि साहित्य मानव सापेक्ष है। मनुष्य को क्षुद्रता और संकीर्णता से उबारकर, सात्त्विक व्यापक भावभूमि पर प्रतिष्ठित करना साहित्य का लक्ष्य है। द्विवेदी जी का कहना है कि मैं साहित्य को मनुष्य की दृष्टि से देखने का पक्षपाती हूँ। जो वाग्जाल मनुष्य को दुर्गति, हीनता और परमुखापेक्षिता से बचा न सके, जो उसकी आत्मा को तेजोदीप्त न बना सके, जो हृदय को परदुःख कातर और संवेदनशील न बना सके, उसे साहित्य कहने में मुझे संकोच होता है।

द्विवेदी जी ने आलोचना, निबन्ध, इतिहास, उपन्यास, संस्कृति आदि विविध क्षेत्रों में अपनी साहित्यिक प्रतिभा का परिचय दिया है । इनकी प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं – **निबन्ध**– 'अशोक के फूल', 'कल्पलता', 'विचार और वितर्क', 'कुटज', 'विचार–प्रवाह', 'आलोक पर्व'। **'उपन्यास** –'बाणभट्ट की आत्मकथा', 'चारुचन्द्रलेख', 'पुनर्नवा', 'अनामदास का पोथा'। **आलोचना, साहित्येतिहास** – 'सूर-साहित्य', 'कबीर', 'नाथ सम्प्रदाय', 'मध्यकालीन बोध का स्वरूप', 'कालिदास की लालित्य योजना', 'साहित्य सहचर', 'साहित्य का धर्म', हिन्दी साहित्य की भूमिका, 'हिन्दी साहित्य का आदिकाल', हिन्दी साहित्य : उद्भव और विकास। **संपादित** –'नाथ–सिद्धों की बानियाँ', 'संदेश रासक', 'संक्षिप्त पृथ्वीराज रासो', 'विश्वभारती (शांतिनिकेतन पत्रिका का सम्पादन)। **धर्म एवं संस्कृति विषयक** – 'प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद', 'मध्य-कालीन धर्म साधना', 'सहज साधना'।

पाठ परिचय –

प्रस्तुत ललित निबन्ध 'शिरीष के फूल' लेखक के 'कल्पलता' नामक निबन्ध संग्रह से संकलित है। यह संदेश प्रधान निबन्ध है, जिसमें द्विवेदी जी ने आँधी, लू और गरमी की प्रचण्डता में अविचल होकर कोमल पुष्पों का सौन्दर्य बिखेरने वाले शिरीष की तुलना अवधूत से करते हुए मनुष्य की अजय जिजीविषा और

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तुमुल कोलाहल, संघर्ष के बीच धैर्यपूर्वक लोक-चिन्तन हित रह कर्त्तव्यशील रहने को महान मानवीय मूल्य के रूप में स्थापित किया है। लेखक ने शिरीष के माध्यम से इस दार्शनिक सत्य को भी अभिव्यक्त किया है कि मनुष्य को यह समझ लेना चाहिए कि संसार परिवर्तनशील है और परिवर्तन की गति के अनुरूप अपने को ढाल लेना ही अच्छा है। संसार का सत्य यही है कि जो वस्तु एक दिन पल्लवित और पुष्पित हुई है उसका झड़ना निश्चित है। मनुष्य को अनासक्त भाव से जीवन यापन करना चाहिए। जो जितना अनासक्त हो सकता है, वह उतना ही अधिक समाज के लिए योगदान दे सकता है। अनासक्ति के साथ-साथ फक्कड़ाना मस्ती भी जरूरी है। कबीर के फक्कड़ व्यक्तित्व की तुलना अवधूत से करने के बाद वे गाँधी को भी इसी श्रेणी में रखते हैं। उनके अनुसार कालिदास भी अनासक्त कवि थे। इसलिए वे कालजयी हो सके।

मूल पाठ–

जहाँ बैठ के यह लेख लिख रहा हूँ उसके आगे पीछे दाँए-बाँए, शिरीष के अनेक पेड़ हैं। जेठ की जलती धूप में, जबकि धरित्री निर्धूम अग्निकुंड बनी हुई थी, शिरीष नीचे से ऊपर तक फूलों से लद गया था। कम फूल इस प्रकार की गरमी में फूल सकने की हिम्मत करते हैं । कर्णिकार (वनचंपा) और आरग्वध (अमलतास) की बात मैं भूल नहीं रहा हूँ। वे भी आस-पास बहुत है। लेकिन शिरीष के साथ आरग्वध की तुलना नहीं की जा सकती। वह पन्द्रह-बीस दिन के लिए फूलता है, वसंत ऋतु के पलाष की भाँति। कबीर दास को इस तरह पन्द्रह दिन के लिए लहक उठना पसंद नहीं था। यह भी क्या कि 'दस दिन फूले और फिर खंखड़-के-खंखड़ ''दिन दस फूला, फूलिके खंखड़ भया पलास''। फूल है शिरीष। वसन्त के आगमन के साथ लहक उठता है, आषाढ़ तक तो निश्चित रूप से मस्त बना रहता है। मन रम गया तो भरे भादों में भी निर्घात फूलता रहता है। जब उमस से प्राण उबलता रहता है और लू से हृदय सूखता रहता है, एकमात्र शिरीष कालजयी अवधूत की भाँति जीवन की अजेयता का मंत्र-प्रचार करता है। यद्यपि कवियों की भाँति हर फूल-पत्ते को देखकर मुग्ध होने लायक हृदय विधाता ने नहीं दिया है, पर नितांत ठूँठ भी नहीं हूँ। शिरीष के पुष्प मेरे मानस में थोड़ी हिल्लोल जरूर पैदा करते हैं।

शिरीष के वृक्ष बड़े और छायादार होते हैं। पुराने भारत का रईस जिन मंगल-जनक वृक्षों को अपनी वृक्ष-वाटिका की चहारदीवारी के पास लगाया करता था, उनमें एक शिरीष भी है। (वृहत् संहिता 5513) अशोक, अरिष्ट (रीठा का वृक्ष), पुन्नाग और शिरीष के छायादार और घन मसृण हरीतिमा से परिवेष्टित वृक्ष-वाटिका जरूर बड़ी मनोहर दिखती होगी। वात्स्यायन ने (काम सूत्र में) बताया है कि वाटिका के सघन छायादार वृक्षों की छाया में ही झूला (दोला) लगाया जाना चाहिए। यद्यपि पुराने कवि बकुल (मौलसिरी) के पेड़ में ऐसी दोलाओं को लगा देखना चाहते थे, पर शिरीष भी क्या बुरा है?डाल इसकी अपेक्षाकृत कमजोर जरूर होती है, पर उसमें झूलनेवालियों का वजन भी तो बहुत ज्यादा नहीं होता। कवियों की यही तो बुरी आदत है कि वजन का एकदम ख्याल नहीं करते। मैं तुंदिल नरपतियों की बात नहीं कह रहा हूँ, वे चाहें तो लोहे का पेड़ बनवा लें।

शिरीष का फूल संस्कृत-साहित्य में बहुत कोमल माना गया है। मेरा अनुमान है कि कालिदास ने यह बात शुरू-शुरू में प्रचारित की होगी। उनका कुछ इस पुष्प पर पक्षपात था (मेरा भी है) कह गए हैं, शिरीष पुष्प केवल भौरों के पदों का कोमल दबाव सहन कर सकता है, पक्षियों का बिलकुल नहीं– **पदं सहेत भ्रमरस्य पेलवं शिरीष पुष्पं नः पुन पतत्रिणाम्।** अब मैं इतने बड़े कवि की बात का विरोध कैसे

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

करूँ ? सिर्फ विरोध करने की हिम्मत न होती तो भी कुछ कम बुरा नहीं था। यहाँ तो इच्छा भी नहीं है। खैर, दूसरी बात कह रहा था। शिरीष के फूलों की कोमलता देखकर परवर्ती कवियों ने समझा कि उसका सब–कुछ कोमल है। यह भूल है। इसके फल इतने मजबूत होते हैं कि नए फूलों के निकल आने पर भी स्थान नहीं छोड़ते। जब तक नए फल-पत्ते मिलकर धकियाकर उन्हें बाहर नहीं कर देते तब तक वे डटे रहते हैं। वसंत के आगमन के समय जब सारी वनस्थली पुष्प-पत्र से मर्मरित होती रहती है, शिरीष के पुराने फल बुरी तरह खड़खड़ाते हैं। मुझे इनको देखकर उन नेताओं की बात याद आती है, जो किसी प्रकार जमाने का रुख नहीं पहचानते और जब तक नयी पौध के लोग उन्हें धक्का मारकर निकाल नहीं देते तब तक जमे रहते हैं।

मैं सोचता हूँ पुराने की यह अधिकार – लिप्सा क्यों नहीं समय रहते सावधान हो जाती ? जरा और मृत्यु, ये दोनों ही जगत के अति परिचित और अतिप्रामाणिक सत्य हैं। तुलसीदास ने अफसोस के साथ इनकी सच्चाई पर मुहर लगाई थी– 'धरा को प्रमान यही तुलसी जो फरा, सो झरा जो बरा, सो बुताना।' मैं शिरीष के फूलों को देखकर कहता हूँ कि क्यों नहीं फलते ही समझ लेते बाबा कि झड़ना निश्चित है। सुनता कौन है ? महाकाल देवता सपासप कोड़े चला रहे हैं, जीर्ण और दुर्बल झड़ रहे हैं; जिनमें प्राणकण थोड़ा भी ऊर्ध्वमुखी है, वे टिक जाते हैं। दुरन्त प्राणधारा और सर्वव्यापक कालाग्नि का संघर्ष निरन्तर चल रहा है। मूर्ख समझते हैं कि जहाँ बने हैं वहीं देर तक बने रहें तो काल देवता की आँख बचा जाएँगे। भोले हैं वे । हिलते-डुलते रहो, स्थान बदलते रहो, आगे की ओर मुहँ किए रहो तो कोड़े की मार से बच भी सकते हो। जमें कि मरे।

कई एक बार मुझे मालूम होता है कि यह शिरीश एक अद्‌भुत अवधूत है दुःख हो सुख, वह हार नहीं मानता। न ऊधो का लेना, न माधो का देना। जब धरती और आसमान जलते रहते हैं, तब भी यह हज़रत न - जाने कहाँ से अपने लिए रस खींचते रहते हैं। मौज में आठों याम मस्त रहते है। एक वनस्पतिशास्त्री ने मुझे बताया है कि यह उस श्रेणी का पेड़ है जो वायुमंडल से अपना रस खींचता हैं। जरूर खींचता होगा, नहीं तो भयंकर लू के समय इतने कोमल ततुंजाल और ऐसे सुकुमार केसर को कैसे उगा सकता था। अवधूतों के मुँह से ही संसार की सबसे सरस रचनाएँ निकली हैं। कबीर बहुत-कुछ इस शिरीष के समान ही थे मस्त और बेपरवाह, पर सरस और मादक। कालिदास भी जरूर अनासक्त योगी रहे होंगे। शिरीष के फूल फक्कड़ाना मस्ती से ही उपज सकते हैं और मेघदूत का काव्य उसी प्रकार के अनासक्त अनाविल उन्मुक्त हृदय में उमड़ सकता है। जो कवि अनासक्त नहीं रह सका, जो फक्कड़ नहीं बन सका, जो किए-कराए का लेखा–जोखा मिलाने में उलझ गया, वह भी क्या कवि है ? कहते हैं कर्णाट-राज की प्रिया विज्जिकादेवी ने गर्वपूर्वक कहा था कि एक कवि ब्रह्मा थे, दूसरे वाल्मीकि और तीसरे व्यास। एक ने वेदों को दिया, दूसरे ने रामायण और तीसरे ने महाभारत को। इनके अतिरिक्त और कोई यदि कवि होने का दावा करे तो मैं कर्णाट–राज की प्यारी रानी उनके सिर पर अपना बायाँ चरण रखती हूँ **(तेषां मूर्ध्नि ददामि वामचरणं कर्णाट-राजप्रिया)**। मैं जानता हूँ कि इस उपालम्भ से दुनिया का कोई कवि हारा नहीं है, पर इसका मतलब यह नहीं कि कोई लजाये नहीं तो उसे डाँटा भी न जाए। पर मैं कहता हूँ कवि बनना है मेरे दोस्तो, तो फक्कड़ बनो। शिरीष की मस्ती की ओर देखो; लेकिन अनुभव ने मुझे बताया है कि कोई किसी की सुनता नहीं। मरने दो।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कालिदास वजन ठीक रख सकते थे क्योंकि वे अनासक्त योगी की स्थिर प्रज्ञता और विदग्ध प्रेमी का हृदय पा चुके थे। कवि होने से क्या होता है ? मैं भी छंद बना लेता हूँ, तुक जोड़ लेता हूँ और कालिदास भी छंद बना लेते थे – तुक भी जोड़ ही सकते होंगे। इसलिए हम दोनों एक श्रेणी के नहीं हो जाते। पुराने सहृदय ने किसी ऐसे ही दावेदार को फटाकरते हुए कहा था –**'वयमपि कवयः कवयः कवयस्ते कालिदासद्याः'।** मैं तो मुग्ध और विस्मय–विमूढ़ होकर कालिदास के एक-एक श्लोक को देखकर हैरान हो जाता हूँ। अब इस शिरीष के फूल का ही एक उदाहरण लीजिए। शकुन्तला बहुत सुंदर थी। सुंदर क्या होने से कोई हो जाता है ? देखना चाहिए कि कितने सुंदर हृदय से वह सौन्दर्य डुबकी लगाकर निकला है। शकुन्तला कालिदास के हृदय से निकली थी। विधाता की ओर से कोई कार्पण्य नहीं था, कवि की ओर से भी नहीं। राजा दुष्यन्त भी अच्छे-भले प्रेमी थे। उन्होंने शकुन्तला का एक चित्र बनाया था; लेकिन रह-रहकर उनका मन खीझ उठता था। उहूँ, कहीं-न-कहीं' कुछ छूट गया है। बड़ी देर के बाद समझ में आया कि शकुन्तला के दोनों कानों में उस शिरीष पुष्प को देना भूल गए हैं, जिसके केसर गंडस्थल तक लटके हुए थे, और रह गया हैं शरच्चन्द्र की किरणों के समान कोमल और शुभ्र मृणाल का हार।

कालिदास सौन्दर्य के बाह्य आवरण को भेदकर उसके भीतर तक पहुँच सकते थे, दुःख हो कि सुख, वे अपना भाव-रस उस अनासक्त कृषीवल की भाँति खींच लेते थे, जो निर्दलित ईक्षुदंड से रस निकाल लेता है। कालिदास महान् थे, क्योंकि वे अनासक्त रह सके थे। कुछ इस श्रेणी की अनासक्त आधुनिक हिन्दी के कवि सुमित्रानंदन पंत में है। कविवर रवीन्द्रनाथ में यह अनासक्ति थी। एक जगह उन्होंने लिखा है–'राजोद्यान का सिंहद्वार कितना ही अभ्रभेदी क्यों न हो, उसकी शिल्पकला कितनी ही सुन्दर क्यों न हो, वह यह नहीं कहता कि हममें आकर ही सारा रास्ता समाप्त हो गया । असल गंतव्य स्थान उसे अतिक्रम करने के बाद ही है। यही बताना उसका कर्त्तव्य है। फूल हो या पेड़, वह अपने-आप में समाप्त नहीं है। वह किसी अन्य वस्तु को दिखाने के लिए उठी हुई अँगुली है, एक इशारा है।

शिरीष तरु सचमुच पक्के अवधूत की भाँति मेरे मन में ऐसी तरंगें जगा देता है जो ऊपर की ओर उठती रहती हैं। इस चिलकती धूप में इतना सरस वह कैसे बना रहता है ? क्या ये बाहृय परिवर्तन– धूप, वर्शा, आँधी, लू, अपने आप में सत्य नहीं है ? हमारे देश के ऊपर से जो यह मारकाट, अग्निदाह, लूट-पाट, खून-खच्चर का बवंडर बह गया है, उसके भीतर भी क्या स्थिर रहा जा सकता है ? शिरीष रह सका है। अपने देश का एक बूढ़ा रह सका था। क्यों, मेरा मन पूछता है कि ऐसा क्यों सम्भव हुआ ? क्योंकि शिरीष भी अवधूत है। शिरीष वायुमंडल से रस खींचकर इतना कोमल और इतना कठोर हो सका था। मैं जब-जब शिरीष की ओर देखता हूँ तब-तब हूक उठती है – हाय वह अवधूत आज कहाँ है ?

•••

शब्दार्थ–

धरित्री – धरती/ निर्धूम – धुआँ रहित/ कर्णिकार – कनेर (कनियार) नामक फूल/ आरग्वध – अमलतास नामक फूल/ खंखड़ – ठूँठ शुष्क/ निर्घात – बिना आघात या बाधा के/ अवधूत – सांसारिक बन्धनों एवं विशय वासनाओं से ऊपर उठा हुआ योगी/ आगमन – आने/ कालजयी – काल को जीतने वाला या काल से अप्रभावित/ विधाता – ब्रह्मा/ नितांत – एकदम/ ठूँठ – शुष्क/

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हिल्लोल – लहर / अरिश्ठ – रीठा नामक वृक्ष / पुन्नाग – एक बड़ा सदाबहार पेड़ / घन–मृसण – घना, चिकना (गहन चिकना / मुलायम) / हरीतिमा – हरियाली / परिवेष्टित – आच्छादित, ढका हुआ / सपासप – एक प्रकार की ध्वनि जो कोड़े मारते समय निकलती है, जो जल्दी का अर्थ ध्वनित करती है / मनोहर – मन को हरने वाली सुन्दर / दोला – झूला / बकुल – मौलसिरी का पेड़ / तुंदिल – तोंद वाले, मोटे पेट वाले / परवर्ती – बाद के / मर्मरित – (पत्तों की) खड़खड़ाहट या सरसराहट की ध्वनि से युक्त / जीर्ण – सड़े गले, कमजोर / ऊर्ध्वमुखी – ऊपर को मुख यानि प्रगति की दिशा में / दुरंत – जिसका विनाश होना मुश्किल है / हज़रत – श्रीमान् (व्यंग्यात्मक स्वर) / अनासक्त – मोह–माया, विषय वासनाओं से मुक्त / अनाविल – स्वच्छ / मेघदूत – कालिदास के द्वारा चरित खण्डकाव्य / लेखा–जोखा – हिसाब–किताब / कर्णाट – कर्नाटक राज्य का प्राचीन नाम / उपालम्भ – उलाहना / विदग्ध – अच्छी तरह से तपा हुआ / विस्मय – आश्चर्य / कार्पण्य – कृपणता, कंजूसी / गण्डस्थल – गाल तक / शुभ्र – श्वेत / मृणाल – कमल नाल / कृशीवल – किसान / निर्दलित – अच्छी तरह निचोड़ा हुआ / ईक्षुदण्ड – ईख (गन्ने) का तना / अभ्रभेदी – गगन चुम्बी / गतंव्य – लक्ष्य, पहुँचने का स्थान / धरा – पृथ्वी।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. 'हाय, वह अवधूत आज कहाँ है?' इस पंक्ति में अवधूत शब्द का प्रयोग किसके लिए हुआ है–

   (क) कबीर (ख) शिरीष

   (ग) आरग्वध (घ) गांधी ( )

2. 'मेघदूत' किसकी रचना है ?

   (क) कबीर (ख) तुलसी

   (ग) कालिदास (घ) वाल्मीकि ( )

3. 'शिरीष के फूल ' निबन्ध है–

   (क) ललित निबन्ध (ख) वस्तुनिष्ठ निबन्ध

   (ग) आलोचनात्मक निबन्ध (घ) ऐतिहासिक निबन्ध ( )

4. प्राचीन 'कर्णाट राज्य' का आधुनिक नाम क्या है ?

   (क) कर्नाटक (ख) तमिलनाडु

   (ग) केरल (घ) आसाम। ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. 'धरित्री निर्धूम अग्निकुंड बनी हुई थी' पंक्ति से क्या आशय है ?
2. शिरीष का फूल संस्कृत साहित्य में कैसा माना जाता है ?
3. 'कबीर बहुत' कुछ इस शिरीष के समान ही थे' लेखक ने ऐसा क्यों कहा ?
4. 'उधो का लेना, न माधो का देना' का अर्थ लिखिए।

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. 'दिन दस फूला फूलिके खंखड़ भया पलास' इस पंक्ति का भावार्थ लिखिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2. 'धरा को प्रमान यही तुलसी जो फरा सो झरा, जो बरा सो बुताना '। इस पंक्ति में तुलसी दास जी ने क्या संदेश दिया हैं ?

3. लेखक के अनुसार कवि के लिए कौन-से गुण आवश्यक हैं ?

4. लेखक ने 'शिरीष के फूल' को कालजयी अवधूत की तरह क्यों बताया है ?

निबन्धात्मक प्रश्न –

1. लेखक के अनुसार कोमल और कठोर दोनों भाव किस प्रकार गांधी के व्यक्तित्व की विशेषता बन गए ?

2. 'शिरीष के फूल' ललित निबन्ध के माध्यम से द्विवेदी जी ने क्या संदेश दिया है ?अपने शब्दों में लिखिए।

3. ललित निबन्ध के स्वरूप को ध्यान में रखते हुए 'शिरीष के फूल' निबन्ध की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

4. सुनता कौन हैं ? महाकाल देवता सपासप कोड़े चला रहे हैं, जीर्ण और दुर्बल झड़ रहे हैं। जिनमें प्राण-कण थोड़ा भी ऊर्ध्वमुखी है, वे टिक जाते हैं। द्विवेदी जी के इस कथन में क्या संकेत निहित है ? स्पष्ट कीजिए।

5. पाठ में आए निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

(क) ''जो कवि अनासक्त.. क्या कवि है।''

(ख) ''दु:ख हो कि सुख... अनासक्ति थी।''

(ग) ''क्यों मेरा मन...आज कहाँ है ?''

(घ) ''जब उमस से प्राण.. प्रचार करता रहता है।''

•••

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

17. पाजेब

जैनेन्द्र कुमार

लेखक परिचय –

प्रेमचन्दोत्तर युग के प्रसिद्ध विचारक, उपन्यासकार, कथाकार और निबन्धकार श्री जैनेन्द्र कुमार का जन्म सन् 1905 ई. में अलीगढ़ (उ.प्र.) के कौड़ियागंज नामक कस्बे में हुआ था। पिता का नाम प्यारेलाल एवं माता का नाम श्रीमती रामदेवी था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा जैन गुरुकुल हस्तिनापुर में हुई। व्यक्तिगत रूप से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद उच्च शिक्षा के लिए काशी विश्वविद्यालय आए परन्तु महात्मा गांधी के सन् 1921 के आंदोलन का इन पर इतना प्रभाव पड़ा कि ये अध्ययन छोड़कर आंदोलन के उत्साही कार्यकर्ता बन गए।

जैनेन्द्र ने अपनी कहानियों एवं उपन्यासों के द्वारा हिन्दी में एक सशक्त मनोवैज्ञानिक कथा-धारा का प्रवर्तन किया। कथाकार के साथ-साथ इनकी पहचान एक सशक्त अत्यन्त गम्भीर चिन्तक के रूप में रही है। इन्होंने साहित्य, समाज, धर्म, संस्कृति, राजनीति, दर्शन आदि से सम्बन्धित विषयों को बहुत सरल एवं अनौपचारिक सी दिखाई देने वाली शैली में प्रस्तुत किया। इनकी लगभग दो सौ कहानियाँ हैं जो 'जैनेन्द्र की श्रेष्ठ कहानियाँ' नाम से आठ भागों में प्रकाशित हो चुकी हैं। जैनेन्द्र ने अपनी कहानियों में मनुष्य की आंतरिक समस्याओं का सूक्ष्म चित्रण किया है जिससे इनकी कहानियों को एक नई अन्तर्दृष्टि, संवेदनशीलता और दर्शन की गम्भीरता प्राप्त हुई है। इन्होंने हिन्दी कहानी को परम्परागत शिल्प के स्थान पर नवीन शिल्प और शैली प्रदान की। इन पर गांधीवादी दर्शन का पर्याप्त प्रभाव पड़ा।

जैनेन्द्र की प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं – 'परख', 'सुनीता', 'त्यागपत्र', 'कल्याणी', 'विवर्त', 'सुखदा', 'अनाम स्वामी', 'जयवर्धन', 'मुक्तिबोध (उपन्यास)', 'फाँसी', 'जयसन्धि', 'वातायान', 'नीलम देश की राजकन्या', 'एक रात', 'दो चिड़ियाँ', 'पाजेब' (कहानी संग्रह), 'प्रस्तुत प्रश्न', 'जड़ की बात', 'पूर्वोदय', 'साहित्य का श्रेय और प्रेय', 'सोच विचार', 'समय और हम', 'विचार वल्लरी', 'प्रेम और परिवार', 'राष्ट्र और राज्य (निबन्ध संग्रह), 'ये और वे', (संस्मरण); 'मन्दालिनी', 'पाप और प्रकाश', (नाटक)। प्रमुख पुरस्कार– साहित्य अकादमी पुरस्कार, 'भारत-भारती, सम्मान। भारत सरकार द्वारा पद्मभूषण से सम्मानित।

पाठ–परिचय–

'पाजेब' बाल–मनोविज्ञान पर आधारित सजीव, रोचक, सशक्त एवं मार्मिक कहानी है। इस कहानी में मुन्नी की पाजेब खो जाती है। इस पर उसके भाई आशुतोष को अपराधी समझा जाता है। वह अबोध अवस्था होने के कारण अपनी स्थिति स्पष्ट नहीं कर पाता। झूठ बोलने के अपराध में उसे सजा मिलती है और अन्त में बुआ के आने पर स्थिति स्पष्ट होती है कि पाजेब बुआ के साथ चली गई थी और बालक निरपराध प्रमाणित होता है। इस प्रकार कहानी का उद्देश्य बाल-मनोविज्ञान का चित्रण करना है। बालक अबोध होते हैं। उनकी कोमल बुद्धि तर्कहीन होती है। वे अपनी बात स्पष्ट नहीं कर पाते। स्नेह, भय और प्रलोभन के कारण अपराधी न होने पर भी वे अपराध स्वीकार कर लेते हैं। आशुतोष की यही स्थिति है। उसने

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

न पाजेब चुराई, न छुन्नू को दी और न पतंग वाले को बेची। फिर भी वह पिता के सामने स्थिति स्पष्ट नहीं कर पाने के कारण अपराधी बन जाता है। एक-एक कर सारे अपराध स्वीकार कर लेता है; परन्तु अन्त में निरपराधी सिद्ध होता है।

मूलपाठ –

बाजार में एक नई तरह की पाजेब चली है। पैरों में पड़कर वे बड़ी अच्छी मालूम होती हैं। उनकी कड़ियाँ आपस में लचक के साथ जुड़ी रहती हैं कि पाजेब का मानो निज का आकार कुछ नहीं है, जिस पाँव में पड़े उसी से अनुकूल ही रहती है।

पास-पड़ोस में तो सब नन्हीं–बड़ी के पैरों में आप वही पाजेब देख लीजिए। एक ने पहनी तो दूसरी ने भी पहनी। देखा–देखी में इस तरह उनका न पहनना मुश्किल हो गया है।

हमारी मुन्नी ने भी कहा कि बाबूजी, हम पाजेब पहनेंगे। बोलिए भला कठिनाई से चार बरस की उम्र और पाजेब पहनेगी।

मैंने कहा कि कैसी पाजेब ?

बोली कि हाँ, वही जैसी रुक्मिन पहनती है, जैसी शीला पहनती है।

मैंने कहा कि अच्छा-अच्छा!

बोली कि मैं तो आज ही मँगा लूँगी।

मैंने कहा कि अच्छा भाई, आज ही सही।

उस वक्त तो खैर मुन्नी किसी काम में बहल गई; लेकिन जब दोपहर आई मुन्नी की बुआ, तब वह मुन्नी सहज मानने वाली न थी।

बुआ ने मुन्नी को मिठाई खिलाई और गोद में लिया और कहा कि अच्छा, तो तेरी पाजेब अब के इतवार को जरूर लेती आऊँगी।

इतवार को बुआ आई और पाजेब ले आई। मुन्नी उन्हें पहनकर खुशी के मारे यहाँ से वहाँ छमकती फिरी। रुक्मिन के पास गई और कहा देख रुक्मिन मेरी पाजेब। शीला को भी अपनी पाजेब दिखाई। सबने पाजेब पहनी देखकर उसे प्यार किया और तारीफ की। सचमुच वह चाँदी की सफेद दो-तीन लड़ियाँ-सी टखनों के चारों ओर लिपटकर, चुपचाप बिछी हुई ऐसी सुघड़ लगती थीं कि बहुत ही, और बच्ची की खुशी का ठिकाना न था।

और हमारे महाशय आशुतोष, जो मुन्नी के बड़े भाई थे, पहले तो मुन्नी को सजी–बजी देखकर बड़े खुश हुए। वह हाथ पकड़कर अपनी बढ़िया मुन्नी को पाजेब-सहित दिखाने के लिए आस–पास ले गए। मुन्नी की पाजेब का गौरव उन्हें अपना भी मालूम होता था। वह खूब हँसे और ताली पीटी, लेकिन थोड़ी देर बाद वह ठुमकने लगे कि मुन्नी को पाजेब दी, सो हम बाईसिकिल लेंगे।

बुआ ने कहा कि अच्छा बेटा, अबके जन्मदिन पर तुझे भी बाईसिकिल दिलवाएँगे।

आशुतोष बाबू ने कहा कि हम तो अभी लेंगे।

बुआ ने कहा, ''छी-छी, तू कोई लड़की है? ज़िद तो लड़कियाँ करती हैं और लड़कियाँ रोती हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कहीं बाबू साहब लोग रोते हैं!''

आशुतोष बाबू ने कहा कि हम बाईसिकिल जरूर लेंगे जन्मदिन वाले रोज।

बुआ ने कहा कि हाँ, यह बात पक्की रही, जन्मदिन पर तुमको बाईसिकिल मिलेगी।

इस तरह वह इतवार का दिन हँसी-खुशी पूरा हुआ। शाम होने पर बच्चों की बुआ चली गई। पाजेब का शौक घड़ी-भर का था। वह फिर उतारकर रख–रखा दी गई, जिससे कहीं खो न जाए। पाजेब वह बारीक और सुबुक काम की थी और खासे दाम लग गए थे।

श्रीमती ने हम से कहा कि क्यों जी, लगती तो अच्छी है, मैं भी एक बनवा लूँ ?

मैंने कहा कि क्यों न बनवाओ! तुम कौन चार बरस की नहीं हो!

खैर, यह हुआ। पर मैं रात को अपनी मेज पर था कि श्रीमती ने आकर कहा कि तुमने पाजेब तो नहीं देखी?

मैंने आश्चर्य से कहा कि क्या मतलब ?

बोलीं कि देखो, यहाँ मेज-वेज पर तो नहीं है। एक तो उसमें की है, पर दूसरे पैर की मिलती ही नहीं है। जाने कहाँ गई ?

मैंने कहा कि जाएगी कहाँ? यहीं-कहीं देख लो। मिल जाएगी।

उन्होंने मेरी मेज के कागज उठाने-धरने शुरू किए और अलमारी की किताबें टटोल डालने का भी मनसूबा दिखाया।

मैंने कहा कि यह क्या कर रही हो ? यहाँ वह कहाँ से आई ?

जवाब में वह मुझी से पूछने लगीं कि फिर कहाँ हैं ?

मैंने कहा कि तुमने ही तो रखी होगी। कहाँ रखी थी ?

बतलाने लगीं कि मैंने दोपहर के बाद कोई दो बजे उतारकर दोनों अच्छी तरह संभालकर उस नीचे वाले बक्स में रख दी थीं। अब देखा तो एक है, दूसरी गायब है।

मैंने कहा कि तो चलकर वह इस कमरे में कैसे आ जाएगी ? भूल हो गई होगी। एक रखी होगी एक वहीं-कहीं फर्श पर छूट गई होगी। देखो, मिल जाएगी। कहीं जा नहीं सकती।

इस पर श्रीमती कहा-सुनी करने लगीं तो तुम तो ऐसे ही हो। खुद लापरवाह हो, दोष उल्टे मुझे देते हो। कह तो रही हूँ कि मैंने दोनों संभालकर रखी थीं।

मैंने कहा कि संभाल कर रखी थी तो फिर यहाँ-वहाँ क्यों देख रही हो ? जहाँ रखी थी वहाँ से ले लो न। वहाँ नहीं है तो फिर किसी ने निकाली ही होगी।

श्रीमती बोलीं कि मेरा भी यही खयाल हो रहा है। हो न हो, बंसी नौकर ने निकाली है। मैंने रखी, तब वह वहाँ मौजूद था।

मैंने कहा कि तो उससे पूछा ?

बोली कि वह तो साफ इन्कार करता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मैंने कहा कि तो फिर ?

श्रीमती जोर से बोलीं कि तो फिर मैं क्या बताऊँ ? तुम्हें तो किसी बात की फिकर है ही नहीं। डाँटकर कहते क्यों नहीं हो, उस बंसी को बुलाकर ?जरूर पाजेब उसी ने ली है।

मैंने कहा कि अच्छा, तो उसे क्या कहना होगा ? यह कहूँ कि ला भाई, पाजेब दे दे!

श्रीमती झल्लाकर बोलीं कि हो चुका बस कुछ तुमसे! तुम्हीं ने तो उस नौकर की जात को शहजोर बना रखा है। डाँट न फटकार, नौकर ऐसे सिर न चढ़ेगा तो क्या होगा ?

मैंने पूछा कि तो तुम्हारा क्या ख्याल है ?

बोलीं कि कह तो रही हूँ कि किसी ने उसे बक्स में से निकाला ही है और सोलह में पंद्रह आने यह बंसी है। सुनते हो न, वही है।

मैंने कहा कि मैंने बंसी से पूछा था। उसने नहीं ली मालूम होती।

इस पर श्रीमती ने कहा कि तुम नौकरों को नहीं जानते। वे बड़े छँटे होते हैं। जरूर बंसी ही चोर है। नहीं तो क्या फरिश्ते लेने आते ?

मैंने कहा कि तुमने आशुतोष से भी पूछा ?

बोलीं कि पूछा था। वह तो खुद ट्रंक और बक्स के नीचे घुस-घुस-कर खोज लगाने से मेरी मदद करता रहा। वह नहीं ले सकता।

मैंने कहा कि उसे पतंग का बड़ा शौक है।

बोलीं कि तुम तो उसे बताते-बरजते कुछ हो नहीं। उमर होती जा रही है। वह यों ही रह जाएगा। तुम्हीं हो उसे पतंग की शह देने वाले।

मैंने कहा कि जो कहीं पाजेब ही पड़ी मिल गई हो तो ?

बोलीं कि नहीं, नहीं, नहीं! मिलती तो वह बता न देता ?

खैर, बातों–बातों में मालूम हुआ कि उस शाम आशुतोष पतंग और एक डोर का पिन्ना नया लाया है।

श्रीमती ने कहा कि यह तुम्हीं हो जिसने पतंग की उसे इजाजत दी। बस सारे दिन पतंग-पतंग! यह नहीं कि कभी उसे बिठाकर सबक की भी कोई बात पूछो। मैं सोचती हूँ कि एक दिन तोड़–ताड़ दूँ उसकी सब डोर और पतंग। हाँ, तो सारे वक्त वही धुन!

मैंने कहा कि खैर, छोड़ो। कल सवेरे पूछताछ करेंगे।

सवेरे बुलाकर मैंने गंभीरता से उससे पूछा कि क्यों बेटा, एक पाजेब नहीं मिल रही है, तुमने तो नहीं देखी?

वह गुम हो आया, जैसे नाराज हो। उसने सिर हिलाया कि उसने नहीं ली। पर मुँह नहीं खोला।

मैंने कहा कि देखो बेटे, ली हो तो कोई बात नहीं, सच कह देना चाहिए।

उसका मुँह और भी फूल आया और वह गुम-सुम बैठ रहा।

मेरे मन में उस समय तरह–तरह के सिद्धान्त आए। मैंने स्थिर किया कि अपराध के प्रति करुणा ही

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

होनी चाहिए, रोष का अधिकार नहीं है। प्रेम से ही अपराध-वृत्ति को जीता जा सकता है। आतंक से उसे दबाना ठीक नहीं है। बालक का स्वभाव कोमल होता है और सदा ही उससे स्नेह से व्यवहार करना चाहिए।

मैंने कहा कि बेटा आशुतोष, तुम घबराओं नहीं। सच कहने में घबराना नहीं चाहिए। ली हो तो खुलकर कह दो, बेटा! हम कोई सच कहने की सजा थोड़े ही दे सकते हैं! बल्कि सच बोलने पर तो इनाम मिला करता है।

आशुतोष सब सुनता हुआ बैठा रह गया। उसका मुँह सूजा था। वह सामने मेरी आँखों में नहीं देख रहा था। रह–रहकर उसके माथे पर बल पड़ते थे।

''क्यों बेटे, तुमने ली तो नहीं ?''

उसने सिर हिलाकर, क्रोध से अस्थिर और तेज आवाज़ में कहा कि मैंने नहीं ली, नहीं ली, नहीं ली। यह कहकर वह रोने को हो आया, पर रोया नहीं। आँखों में आँसू रोक लिए।

उस वक्त मुझे प्रतीत हुआ उग्रता दोष का लक्षण है।

मैंने कहा कि बेटा, डरो नहीं। अच्छा जाओं, ढूँढो; शायद कहीं पड़ी हुई वह पाजेब मिल जाए। मिल जाएगी तो हम तुम्हें इनाम देंगे।

वह चला गया और दूसरे कमरे में जाकर पहले तो एक कोने में खड़ा हो गया। कुछ देर चुपचाप खड़े होकर वह फिर यहाँ-वहाँ पाजेब की तलाश में लग गया।

श्रीमती आकर बोली कि आशु से तुमने पूछताछ लिया ?क्या ख्याल है ?

मैंने कहा कि संदेह तो मुझे होता है। नौकर का काम तो यह है नहीं।

श्रीमती ने कहा कि नहीं जी, आशु भला क्यों लेगा?

मैं कुछ बोला नहीं। मेरा मन जाने कैसा गंभीर प्रेम के भाव से आशुतोष के प्रति उमड़ रहा था। मुझे मालूम होता था कि ठीक इस समय आशुतोष को हमें अपनी सहानुभूति से वंचित नहीं करना चाहिए, बल्कि कुछ अतिरिक्त स्नेह इस समय बालक को मिलना चाहिए। मुझे यह एक भारी दुर्घटना मालूम होती थी। मालूम होता था कि अगर आशुतोष ने चोरी की है तो उसका इतना दोष नहीं है, बल्कि यह हमारे ऊपर बड़ा भारी इलज़ाम है। बच्चे में चोरी की आदत भयावह हो सकती है। लेकिन बच्चे के लिए वैसी लाचारी उपस्थित हो आई, यह और भी कहीं भयावह है। यह हमारी आलोचना है। हम उस चोरी से बरी नहीं हो सकते।

मैंने बुलाकर कहा, ''अच्छा, सुनो। देखो, मेरी तरफ देखो, यह बताओ कि पाजेब तुमने छुन्नू को दी है न?''

वह कुछ देर नहीं बोला। उसके चेहरे पर रंग आया और गया। मैं एक-एक छाया ताड़ना चाहता था।

मैंने आश्वासन देते हुए कहा कि कोई बात नहीं। हाँ, हाँ, बोलो, डरो नहीं। ठीक बताओ, बेटे! कैसा हमारा सच्चा बेटा है।

मानो बड़ी कठिनाई के बाद उसने अपना सिर हिलाया।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मैंने बहुत खुश होकर कहा कि दी है न छुन्नू को ?

उसने सिर हिला दिया।

अत्यंत सांत्वना के स्वर में स्नेहपूर्वक मैंने कहा कि मुँह से बोलो– छुन्नू को दी है ?

उसने कहा, ''हाँ-आँ।''

मैंने अत्यंत हर्ष के साथ दोनों बाँहों में लेकर उसे उठा लिया। कहा कि ऐसे ही बोल दिया करते हैं अच्छे लड़के। आशु हमारा राजा बेटा है। गर्व के भाव से गोद में लिए-लिए मैं उसकी माँ की तरफ गया। उल्लासपूर्वक बोला कि देखो, हमारे बेटे ने सच कबूल किया है। पाजेब उसने छुन्नू को दी है।

सुनकर माँ उसकी खुश हो आई; उन्होंने उसे चूमा। बहुत शाबाशी दी और उसकी बलैयाँ लेने लगीं।

आशुतोष भी मुसकरा आया। अगरचे एक उदासी भी उसके चेहरे से दूर नहीं हुई थी।

उसके बाद अलग ले जाकर मैंने उससे बड़े प्रेम से पूछा कि पाजेब छुन्नू के पास है न ? जाओ, माँग ला सकते हो उससे ?

आशुतोष मेरी ओर देखता हुआ बैठा रह गया। मैंने कहा कि जाओ बेटे! ले आओ।

उसने जवाब में मुँह नहीं खोला।

मैंने आग्रह किया तो वह बोला कि छुन्नू के पास नहीं हुई तो वह कहाँ से देगा ?

मैंने कहा कि तो जिसको उसने दी होगी उसका नाम बता देगा। सुनकर वह चुप हो गया। मेरे बार-बार कहने पर वह यही कहता रहा कि पाजेब छुन्नू के पास न हुई तो वह देगा कहाँ से ?

अंत में हारकर मैंने कहा कि वह कहीं तो होगी। अच्छा तुमने कहाँ से उठाई थी ?''

''पड़ी मिली थी ?''

''और फिर नीचे जाकर वह तुमने छुन्नू को दिखाई ?''

''हाँ!''

''फिर उसी ने कहा कि इसे बेचेंगे ?''

''हाँ!''

''कहाँ बेचने को कहा ?''

''कहा, मिठाई लाएँगे।

''नहीं पतंग लाएँगे।''

''अच्छा पतंग को कहा ?''

''हाँ!''

''तो उसी के पास होनी चाहिए न ? या पतंगवाले के पास होगी। होगी, जाओ बेटा, उससे ले आओ। कहना हमारे बाबूजी तुम्हें इनाम देंगे।''

वह जाना नहीं चाहता था। उसने फिर कहा कि छुन्नू के पास नहीं हुई तो कहाँ से देगा?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मुझे उसकी ज़िद बुरी मालूम हुई। मैंने कहा कि तो कहीं तुमने उसे गाड़ दिया है ? क्या किया है ? बोलते क्यों नहीं ?

वह मेरी ओर देखता रहा और कुछ नहीं बोला।

मैंने कहा कि कुछ कहते क्यों नहीं ?

वह गुम-सुम रह गया और नहीं बोला।

मैंने डपटकर कहा कि जाओ, जहाँ हो वहीं से पाजेब लेकर आओ।

जब अपनी जगह ने नहीं उठा और नहीं गया तो मैंने उसे कान पकड़कर उठाया। कहा कि सुनते हो! जाओ, पाजेब लेकर आओ, नहीं तो घर में तुम्हारा काम नहीं है।

उस तरह उठाया जाकर वह उठ गया और कमरे के बाहर निकल गया। निकलकर बरामदे के एक कोने में रूठा मुँह बनाकर खड़ा रह गया।

मुझे बड़ा क्षोभ हो रहा था। यह लड़का सच बोलकर अब किस बात से घबरा रहा है, यह मैं कुछ समझ न सका। मैंने बाहर आकर जरा धीरे से कहा कि जाओ भाई, जाकर छुन्नू से कहते क्यों नहीं हो ?

पहले तो उसने कोई जवाब नहीं दिया और जब जवाब दिया तो बार-बार कहने लगा कि छुन्नू के पास नहीं हुई तो कहाँ-से देगा ?

मैंने कहा कि जितने में उसने बेची होगी वह दाम दे देंगे। समझे न, जाओ, तुम कहो तो।

छुन्नू की माँ ने कहा कि उनका लड़का ऐसा काम नहीं कर सकता। उसने पाजेब नहीं देखी।

जिस पर आशुतोष की माँ ने कहा कि नहीं, तुम्हारा छुन्नू झूठ बोलता है। क्यों रे आशुतोष, तैने दी थी न ?

आशुतोष ने धीरे से कहा कि हाँ, दी थी।

दूसरी ओर छुन्नू बढ़कर आया और हाथ फटकारकर बोला कि मुझे नहीं दी। क्यों रे, मुझे कब दी थी ?

आशुतोष ने जिद बाँधकर कहा कि दी तो थी। कह दो, नहीं दी थी ?

नतीजा यह हुआ कि छुन्नू की माँ ने छुन्नू को खूब पीटा और खुद भी रोने लगी। कहती जाती कि हाय रे, अब हम चोर हो गए। यह कुलच्छिनी औलाद जाने कब मिटेगी ?

बात दूर तक फैल चली। पड़ोस की स्त्रियों में पवन पड़ने लगी और श्रीमती ने घर लौटकर कहा कि छुन्नू और उसकी माँ दोनों एक-से हैं। मैंने कहा कि तुमने तेजा-तेजी क्यों कर डाली ? ऐसे कोई बात भला कभी सुलझती है!

बोली कि हाँ, मैं तेज बोलती हूँ। अब जाओ ना, तुम्हीं उनके पास से पाजेब निकलकर लाते क्यों नहीं ? तब जानूँ अब पाजेब निकलवा दो।

मैंने कहा कि पाजेब से बढ़कर शांति है और अशांति से तो पाजेब मिल नहीं जाएगी।

श्रीमती बुदबुदाती हुई नाराज होकर मेरे सामने से चली गईं।

थोड़ी देर के बाद छुन्नू की माँ हमारे घर आई। श्रीमती उन्हें लाई थीं। अब उनके बीच गरमी नहीं

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

थी, उन्होंने मेरे सामने आकर कहा कि छुन्नू तो पाजेब के लिए इन्कार करता है। वह पाजेब कितने की थी, मैं उसके दाम भर सकती हूँ।

मैंने कहा, ''यह आप क्या कहती है। बच्चे, बच्चे हैं। आपने छुन्नू से सहूलियत से पूछा भी?''

उन्होंने उसी समय छुन्नू को बुलाकर मेरे सामने कर दिया। कहा कि क्यों रे, बता क्यों नहीं देता जो तैने पाजेब देखी हो ?

छुन्नू ने जोर से सिर हिलाकर इन्कार किया और बताया कि पाजेब आशुतोष के हाथ में मैंने देखी थी और वह पतंग वाले को दे आया है। मैंने खूब देखी थी। वह चाँदी की थी।

''तुम्हें ठीक मालूम है ?''

''हाँ, वह मुझसे कह रहा था कि तू भी चल, पतंग लाएँगे।''

''पाजेब कितनी बड़ी थी, बताओ तो ?''

छुन्नू ने उसका आकार बताया, जो ठीक ही था।

मैंने उसकी माँ की ओर देखकर कहा कि देखिए न, पहले यही कहता था कि मैंने पाजेब देखी तक नहीं। अब कहता है कि देखी है।

माँ ने मेरे सामने छुन्नू को खींचकर तभी धम्म-धम्म पीटना शुरू कर दिया। कहा कि क्यों रे, झूठ बोलता है? तेरी चमड़ी न उधेड़ी तो मैं नहीं।

मैंने बीच-बचाव करके छुन्नू को बचाया। वह शहीद की भाँति पिटता रहा था। रोया बिल्कुल नहीं था और एक कोने में खड़े आशुतोष को जाने किस भाव से वह देख रहा था।

खैर, मैंने सबको छुट्टी दी। कहा कि जाओ बेटा छुन्नू, खेलो! उसकी माँ को कहा कि आप उसे मारिएगा नहीं और पाजेब कोई ऐसी बड़ी चीज नहीं है।

छुन्नू चला गया। तब, उसकी माँ ने पूछा कि आप उसे कसूरवार समझते हो ?

मैंने कहा कि मालूम तो होता है कि उसे कुछ पता है और वह मामले में शामिल है।

इस पर छुन्नू की माँ ने पास बैठी हुई मेरी पत्नी से कहा, ''चलो बहनजी, मैं तुम्हें अपना सारा घर दिखाए देती हूँ। एक-एक चीज देख लो। होगी पाजेब तो जाएगी कहाँ ?''

मैंने कहा, छोड़िए भी। बेबात की बात बढ़ाने से क्या फायदा ?'' सो ज्यों-ज्यों मैंने उन्हें दिलासा दी। नहीं तो वह छुन्नू को पीट-पीटकर हाल–बेहाल कर डालने का प्रण ही उठाए ले रही थीं। ''कुलछने, आज तुझे धरती में नहीं गाड़ दिया, तो मेरा नाम नहीं।''

खैर, जिस-तिस भाँति बखेड़ा टाला। मैं इस झंझट में दफ्तर भी समय पर नहीं जा सका। जाते वक्त श्रीमती को कह गया कि देखा, आशुतोष को धमकाना मत। प्यार से सारी बातें पूछना। धमकाने से बच्चे बिगड़ जाते हैं और हाथ कुछ नहीं आता। समझीं न?

शाम को दफ्तर से लौटा तो श्रीमती ने सूचना दी कि आशुतोष ने सब-कुछ बतला दिया है। ग्यारह आने पैसे में वह पाजेब पतंगवाले को दे दी है। पैसे उसने थोड़े-थोड़े करके देने को कहे हैं। पाँच आने जो दिए वे छुन्नू के पास हैं। इस तरह रत्ती-रत्ती बात उसने कह दी है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कहने लगीं कि मैंने बड़े प्यार से पूछ-पूछकर यह सब उसके पेट में से निकाला है। दो-तीन घंटे मैं मगज मारती रही। हाय राम, बच्चे का भी क्या जी होता है!

मैं सुनकर खुश हुआ। मैंने कहा कि चलो अच्छा है, अब पाँच आने भेजकर पाजेब मँगा लेंगे। लेकिन यह पतंग वाला भी कितना बदमाश है, बच्चों के हाथ से ऐसी चीजें लेता है। उसे पुलिस में दे देना चाहिए। उचक्का कहीं का!

फिर मैंने पूछा कि आशुतोष कहाँ है?

उन्होंने बताया कि बाहर ही कहीं खेल-खाल रहा होगा।

मैंने कहा कि बंसी, जाकर उसे बुला तो लाओ।

बंसी गया और उसने आकर कहा कि वह अभी आते हैं।

''क्या कर रहा है ?''

''छुन्नू के साथ गिल्ली-डंडा खेल रहे हैं।''

थोड़ी देर में आशुतोष आया। तब मैंने उसे गोद में लेकर प्यार किया। आते-आते उसका चेहरा उदास हो गया था और गोद में लेने पर वह विशेष प्रसन्न नहीं मालूम हुआ।

उसकी माँ ने खुश होकर कहा कि हमारे आशुतोष ने सब बातें अपने आप पूरी-पूरी बता दी है। हमारा आशुतोष बड़ा सच्चा लड़का है।

आशुतोष मेरी गोद में टिका रहा। लेकिन अपनी बड़ाई सुनकर भी उसको कुछ हर्ष नहीं हुआ प्रतीत होता था।

मैंने कहा कि आओ, चलो अब क्या बात है ? क्यों हजरत, तुमको पाँच ही आने तो मिले हैं न ? हमसे पाँच आने माँग लेते तो क्या हम न देते ? सुना, अब से ऐसा मत करना, बेटे!

कमरे में ले जाकर मैंने फिर पूछताछ की, ''क्यों बेटा, पतंगवाले ने पाँच आने तुम्हें दिए थे न ?''

''हाँ।''

''और वे छुन्नू के पास हैं ?''

''हाँ।''

''अभी तो उसके पास होंगे न ?''

''नहीं।''

''खर्च कर दिए ?''

''नहीं।'' खर्च किए ?''

''हाँ।''

''खर्च किए कि नहीं खर्च किए ?''

उस ओर से प्रश्न करने पर वह मेरी ओर देखता रहा, उत्तर नहीं दिया।

''बताओ, खर्च कर दिए कि अभी हैं ?''

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

''जवाब में उसने एक बार 'हाँ' कहा तो दूसरी बार 'नहीं' कहा।

मैंने कहा कि तो यह क्यों नहीं कहते कि तुम्हें नहीं मालूम है ?

''हाँ।''

''बेटा, मालूम है न ?''

''हाँ।''

''पतंगवाले से पैसे छुन्नू ने लिए हैं न ?''

''हाँ।''

''तुमने क्यों नहीं लिए ?''

वह चुप।

''पाँचों इकन्नी थीं, या दुअन्नी और पैसे भी थे ?''

वह चुप।

''बतलाते क्यों नहीं हो ?''

चुप।

''इकन्नियाँ कितनी थी, बोलो ?''

''दो।''

''बाकी पैसे थे ?''

''हाँ।''

''दुअन्नी नहीं थी ?''

''हाँ।''

''दुअन्नी थीं ?''

''हाँ।''

मुझे क्रोध आने लगा। डपटकर कहा कि सच क्यों नहीं बोलते जी ? सच बताओ, कितनी इकन्नियाँ थीं और कितना क्या था ?

वह गुम-सुम खड़ा रहा, कुछ नहीं बोला।

''बोलते क्यों नहीं ?''

वह नहीं बोला।

''सुनते हो। बोलो—नहीं तो ....''

आशुतोष डर गया और कुछ नहीं बोला।

''सुनते नहीं, मैं क्या कह रहा हूँ।''

इस बार भी वह नहीं बोला तो मैंने पकड़कर उसके कान खींच लिए। वह बिना आँसू लिए गुम-सुम खड़ा रहा।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

''अब भी नहीं बोलोगे ?''

वह डर के मारे पीला हो आया, लेकिन बोल नहीं सका। मैंने जोर से बुलाया, ''बंसी, यहाँ आओ, इसको ले जाकर कोठरी में बंद कर दो।''

बंसी नौकर उसे उठाकर ले गया और कोठरी में मूँद दिया।

दस मिनट बाद मैंने फिर उसे पास बुलाया। उसका मुँह सूजा हुआ था। बिना कुछ बोले उसके होंठ हिल रहे थे। कोठरी में बंद होकर भी वह रोया नहीं।

मैंने कहा, ''क्यो रे, अब तो अकल आयी ?''

वह सुनता हुआ गुम-सुम खड़ा रहा।

''अच्छा, पतंगवाला कौन-सा है ?दायीं तरफ का वह चौराहेवाला ?'' उसने कुछ होठों में ही बड़बड़ा दिया, जिसे मैं कुछ न समझ सका।

''वह चौराहे वाला ?बोलो.....''

''हाँ!''

''देखो, अपने चाचा के साथ ले जाओ। बता देना कि कौन-सा है। फिर उसे स्वयं भुगत लेंगे। समझते हो न ?''

यह कहकर मैंने अपने भाई को बुलवाया। सब बात समझाकर कहा, ''देखो पाँच आने के पैसे ले जाओ। पहले तुम दूर रहना। आशुतोष पैसे ले जाकर उसे देगा और अपनी पाजेब माँगेगा। अव्वल तो वह पाजेब लौटा ही देगा, नहीं तो उसे डाँटना और कहना कि तुझे पुलिस के सुपुर्द कर दूँगा। बच्चों से माल ठगता है ?समझे! नरमी की जरूरत नहीं है।''

''और आशुतोष, अब जाओ, अपने चाचा के साथ जाओ।'' वह अपनी जगह पर खड़ा था। सुनकर भी टस-से-मस होता दिखाई नहीं दिया।

''नहीं जाओगे ?''

उसने सिर हिला दिया कि नहीं जाऊँगा।

मैंने तब उसे समझाकर कहा कि भैया, घर की चीज है, दाम लगे हैं। भला पाँच आने में रुपयों का माल किसी के हाथ खो दोगे ? जाओ, चाचा के संग जाओ। तुम्हें कुछ नहीं कहना होगा। हाँ, पैसे दे देना और अपनी चीज वापस माँग लेना। दे दे, नहीं दे तो नहीं दे, तुम्हारा इससे सरोकार नहीं। सच है न, बेटे! अब जाओ।

पर वह जाने को तैयार नहीं दीखा। मुझे उस लड़के की गुस्ताखी पर बड़ा बुरा मालूम हुआ। बोलो, इसमें बात क्या है ? इसमें मुश्किल कहाँ है ? समझाकर बात कर रहे हैं सो समझता ही नहीं, सुनता ही नहीं।

मैंने कहा कि क्यों रे, नहीं जाएगा।

उसने फिर सिर हिला दिया कि नहीं जाऊँगा।

मैंने प्रकाश, अपने छोटे भाई को बुलाया। कहा, ''प्रकाश, इसे पकड़-कर ले जाओ।''

प्रकाश ने उसे पकड़ा और आशुतोष अपने हाथ-पैरों से उसका प्रतिकार करने लगा। वह साथ

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

जाना नहीं चाहता था।

मैंने अपने ऊपर बहुत सब्र करके फिर आशुतोष को पुचकारा, कहा कि जाओ भाई ? डरो नहीं। अपनी चीज़ घर में आएगी। इतनी-सी बात समझते नहीं। प्रकाश, इसे गोदी में ले जाओ और जो चीज माँगे इसे बाजार से दिलवा देना। जाओ भाई, आशुतोष!

पर उसका मुँह फूला हुआ था। जैसे-तैसे बहुत समझाने पर वह प्रकाश के साथ चला। ऐसे चला मानों पैर उठाना उसे भारी हो रहा हो। आठ बरस का लड़का होने आया फिर भी देखो न किसी भी बात की उसमें समझ नहीं है। मुझे जो गुस्सा आया तो क्या बतलाऊँ। लेकिन यह याद करके कि गुस्से से बच्चे संभलने की जगह बिगड़ते हैं, मैं अपने को दबाता चला गया। खैर, वह गया तो मैंने चैन की साँस ली।

लेकिन देखता क्या हूँ कि कुछ देर में प्रकाश लौट आया। मैंने पूछा, ''क्यों ?''

बोला कि आशुतोष भाग गया है।

मैंने कहा कि अब वह कहाँ है ?

''वह रूठा खड़ा है, घर में नहीं आता।''

''जाओ पकड़कर तो लाओ।''

वह पकड़ा हुआ आया, मैंने कहा, ''क्यों रे, तू शरारत से बाज नहीं आएगा ? बोल, जाएगा कि नहीं ?''

वह नहीं बोला तो मैंने कसकर उसे दो चाँटे दिए। थप्पड़ लगते ही वह एकदम चीखा, पर फौरन चुप हो गया। वह वैसे ही मेरे सामने खड़ा रहा।

मैंने उसे देखकर मारे गुस्से से कहा कि ले जाओ इसे मेरे सामने से। जाकर कोठरी में बंद कर दो। दुष्ट!

इस बार वह आध-एक घंटे बंद रहा। मुझे ख्याल आया कि मैं ठीक नहीं कर रहा हूँ लेकिन जैसे कि दूसरा रास्ता नहीं दीखता था। मार-पीटकर मन को ठिकाना देने की आदत पड़ गई थी, और कुछ अभ्यास न था।

खैर, मैंने इस बीच प्रकाश को कहा कि तुम दोनों पतंगवालों के पास जाओ। मालूम करना कि पाजेब किसने ली है। होशियारी से मालूम करना। मालूम होने पर सख्ती करना। मुरब्बत की जरूरत नहीं। समझे ?

प्रकाश गया पर लौटने पर बताया कि किसी के पास पाजेब नहीं है।

सुनकर मैं झल्ला आया, कहा कि तुमसे कुछ काम नहीं हो सकता। जरा-सी बात नहीं हुई, तुमसे क्या उम्मीद रखी जाए ?

वह अपनी सफाई देने लगा। मैंने कहा, ''बस तुम जाओ।''

प्रकाश मेरा बहुत लिहाज मानता था। वह मुँह डालकर चला गया। कोठरी खुलवाने पर आशुतोष को फर्श पर सोते पाया। उसके चेहरे पर अब भी आँसू नहीं थे। सच पूछो तो मुझे उस समय बालक पर करुणा हुई। लेकिन आदमी में एक ही साथ जाने क्या-क्या विरोधी भाव उठते हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मैंने उसे जगाया। वह हड़बड़ाकर उठा मैंने कहा, ''कहो, क्या हालत हैं ?''

थोड़ी देर तक वह समझा ही नहीं। फिर शायद पिछला सिलसिला याद आया। झट उसके चेहरे पर वही जिद, अकड़ और प्रतिरोध के भाव दिखाई देने लगे।

मैंने कहा कि या तो राजी-राजी चले जाओ, नहीं तो इस कोठरी में फिर बंद किए देते हैं।

आशुतोष पर इसका विशेष प्रभाव पड़ा हो ऐसा नहीं मालूम हुआ।

खैर, उसे पकड़कर लाया और समझाने लगा। मैंने निकालकर उसे एक रुपया दिया और कहा, ''बेटा, इसे पतंगवाले को देना और पाजेब माँग लेना। कोई घबराने की बात नहीं। तुम तो समझदार लड़के हो।''

उसने कहा कि जो पाजेब उसके पास नहीं हुई तो कहाँ से देगा ?

''इसका क्या मतलब, तुमने कहा न कि पाँच आने में पाजेब दी है। न हो छन्नू को भी साथ ले लेना। समझे!''

वह चुप हो गया। आखिर समझाने पर जाने को तैयार हुआ। मैंने प्रेमपूर्वक उसे प्रकाश के साथ जाने को कहा। उसका मुँह भारी देखकर डाँटने वाला ही था कि इतने में सामने उसकी बुआ दिखाई दी।

बुआ ने आशुतोष के सिर पर हाथ रखकर पूछा कि कहाँ जा रहे हो, मैं तो तुम्हारे लिए केले और मिठाई लाई हूँ।

आशुतोष का चेहरा रूठा ही रहा। मैंने बुआ से कहा कि उसे रोको मत, जाने दो। आशुतोष रुकने को उद्यत था। वह चलने में आनाकानी दिखाने लगा।

बुआ ने पूछा, ''क्या बात है ?''

मैंने कहा, ''कोई बात नहीं, जाने दो न उसे।''

पर आशुतोष मचलने पर आ गया था। मैंने डाँटकर कहा, ''प्रकाश, इसे ले क्यों नहीं जाते हो ?''

बुआ ने कहा कि बात क्या है ? क्या बात है ?

मैंने पुकारा, ''बंसी– तू भी साथ जा। बीच से लौटने न पावे।'' सो मेरे आदेश पर दोनों आशुतोष को जबरदस्ती उठाकर सामने से ले गए।

बुआ ने कहा, ''क्यों उसे सता रहे हो ?''

मैंने कहा कि कुछ नहीं, ज़रा यों ही......।

फिर मैं उनके साथ इधर-उधर की बातें ले बैठा। राजनीति राष्ट्र की ही नहीं होती, मुहल्ले में भी राजनीति होती है। यह भार स्त्रियों पर टिकता है। कहाँ क्या हुआ, क्या होना चाहिए, इत्यादि चर्चा स्त्रियों को लेकर रंग फैलाती है। इसी प्रकार की कुछ बातें हुई, फिर छोटा-सा बक्सा सरकाकर बोलीं, इसमें वे कागज हैं जो तुमने माँगे थे और यहाँ ....''

यह कहकर उन्होंने अपनी बास्कट की जेब से हाथ डालकर पाजेब निकालकर सामने की, जैसे सामने बिच्छू हो। मैं भयभीत भाव से कह उठा कि यह क्या ?

बोली कि उस रोज भूल से यह पाजेब मेरे साथ चली गई थी।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ–

घड़ी–भर – थोड़ा समय/ शहजोर – बलवान/ बरजते – मना करना/ शह – उकसाना, बढ़ावा देना/ इज़ाज़त – स्वीकृति/ आतंक – भय / अपराध वृत्ति – गलत कार्य करने की आदत/ सुघड़ – सुन्दर/ मनसूबा – इरादा/ उग्रता – तेज, भंयकरता/ भयावह – भयंकर/ आश्वासन – तसल्ली/ सांत्वना – तसल्ली/ क्षोभ – गुस्सा/ सहूलियत – सुविधा/ बखेड़ा – झगड़ा/ सरोकार – सम्बन्ध, वास्ता/ प्रतिकार – प्रतिशोध, बदला, विरोध/ मुरव्वत – शील, संकोच/ प्रतिरोध – विरोध, बाधा/ उद्यत – तैयार/ आदेश – आज्ञा/ सुबुक – सुन्दर, हल्का/ बलैयाँ लेना – किसी का संकट अपने ऊपर लेने की कामना करना/ इनाम – पुरस्कार/ वंचित – खोना/ इलज़ाम – दोष/ ताड़ना – समझना/ हर्ष – प्रसन्नता/ कबूल – स्वीकार करना।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. जैनेन्द्र किस प्रकार के कथाकार के रूप में प्रसिद्ध हैं–
   (क) मनोवैज्ञानिक कथाकार (ख) आँचलिक कथाकार
   (ग) प्रगतिवादी कथाकार (घ) ऐतिहासिक कथाकार ( )
2. 'पाजेब' कहानी किस पृष्ठभूमि पर लिखी गई है–
   (क) बाल-मनोविज्ञान (ख) पौराणिक
   (ग) हास्य व्यंजक (घ) मनोविश्लेषण ( )
3. आशुतोष को उसकी बुआ ने जन्मदिन पर क्या देने का वादा किया ?
   (क) पतंग (ख) बाइसिकल
   (ग) पाजेब (घ) मिठाई ( )
4. 'पाजेब' कहानी किस शैली में लिखी गई है –
   (क) डायरी शैली (ख) आत्मकथात्मक शैली
   (ग) व्यास शैली (घ) व्यंग्य शैली ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. श्रीमती जी 'पाजेब' चुराने का संदेह किस पर करती हैं ?
2. छुन्नू की माँ छुन्नू को क्यों पीटती है ?
3. मुन्नी को पाजेब किसने, किस दिन लाकर दी ?
4. पूछताछ में आशुतोष ने पाजेब किसको बेचने की बात कही ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. आशुतोष निरपराध होते हुए भी पाजेब चुराने की बात क्यों स्वीकार कर लेता है ?
2. लेखक ने आशुतोष को कोठरी में क्यों बन्द कर दिया ?
3. बातों-बातों में लेखक को क्या पता लगा ? जिससे वह आशुतोष पर पाजेब चुराने का

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

संदेह करने लगता है ?

4. पाजेब कैसे मिलती है ? पाजेब मिलने पर लेखक की प्रतिक्रिया को व्यक्त कीजिए।

निबन्धात्मक प्रश्न –

1. कहानी के संवाद स्वाभाविक, रोचक, सशक्त, नाटकीय और संक्षिप्त हैं। उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

2. 'पाजेब' कहानी कलात्मक दृष्टि से सफल है ? अपने शब्दों में लिखिए।

3. 'पाजेब' कहानी में बाल-मनोविज्ञान का सजीव परिचय मिलता है। इस कथन पर प्रकाश डालिए।

4. 'पाजेब' कहानी की मूल संवेदना पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

5. पाठ में आए निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

(क) ''मेरे मन में उस समय .... दबाना ठीक नहीं है।''

(ख) ''मुझे यह एक भारी .... भयावह हो सकती है।''

(ग) ''बच्चे में चोरी की .... नहीं हो सकते।''

(घ) ''राजनीति राष्ट्र .... रंग फैलाती है।''

•••

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

18. अलोपी

• महादेवी वर्मा

लेखिका परिचय –

महादेवी वर्मा का जन्म 1907 ई० में फर्रुखाबाद में एक प्रतिष्ठित घराने में हुआ। आपने 1933 में संस्कृत में एम०ए० उत्तीर्ण की और उसी वर्ष प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रिंसिपल नियुक्त हो गईं। आपकी माता हिंदी की विदुषी थीं। तुलसी, सूर और मीरा की रचनाओं का परिचय आपको सर्वप्रथम माता से ही प्राप्त हुआ। छायावादी काव्य धारा के चार स्तंभों प्रसाद, पंत, निराला और महादेवी वर्मा का हिंदी साहित्य में विशेष स्थान है।

आपने प्रारंभिक कविताएँ ब्रज भाषा में लिखीं किंतु शीघ्र ही श्री मैथिलीशरण गुप्त की खड़ी बोली की कविताओं से प्रभावित होकर, आपने भी खड़ी बोली को ही अपनी कविताओं का माध्यम बनाया। आधुनिक हिंदी कवियों में आपका प्रमुख स्थान है। यद्यपि आपकी साहित्यिक प्रसिद्धि का कारण आपकी कविता ही है किंतु आपका गद्य लेखन पर भी पूरा अधिकार है। 'अतीत के चलचित्र' और 'स्मृति की रेखाएँ' नाम से आपके संस्मरण और रेखाचित्र प्रकाशित हुए हैं। इनके अतिरिक्त नारी-समस्याओं पर 'शृंखला की कड़ियाँ' नामक निबंधों का संग्रह तथा अन्य अनेक कविता-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इनके कविता संग्रह हैं –'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'सांध्य गीत'।

महादेवी सामाजिक आदर्शों और लोक-मंगल के प्रति पूर्ण जागरूक रही हैं। उनका चिंतन भारतीय चिंतनधारा का महत्त्वपूर्ण विकास है। जीवन के साधारण प्रसंगों को शब्द चित्रों में अंकित कर देना उनकी विशेषता है। मानवीय सहानुभूति और संवेगों की गहनता का चित्र अंकित करने में उनका कोई सानी नहीं है।

पाठ परिचय –

यह पाठ अलोपीदेवी द्वारा प्रदत्त, नेत्रहीन किंतु स्वाभिमानी पुरुष अलोपी का संस्मरण है। यही नहीं – अभाव या दीन-हीन स्थिति, आर्थिक दृष्टि से भी दीन पिता काछी की मृत्यु ने अलोपी के पुरुषार्थ और मानवीय संवेदना को जगा दिया वह पूरी सजगता और ईमानदारी से कर्म-क्षेत्र में कूद पड़ा। अंधता की अवहेलना कर मनोयोगपूर्वक जीवन-कर्त्तव्य की राह पर बढ़ ही रहा था कि पत्नी की चतुराई और छलावे ने उसके स्वर्ग को ढहा दिया। विवश अलोपी असमय ही मृत्यु की खोह में समा गया। नियति के व्यंग्य से जीवन और संसार के छल से मृत्यु पाने वाले अलोपी की जीवन-यात्रा की सार्थकता पर एक बड़ा प्रश्नचिह्न अंकित करता हुआ यह संस्मरण आत्मा के सौंदर्य की व्याख्या अवश्य करता है।

मूल पाठ –

अंधे अलोपी के घटना-शून्य जीवन में उपयोगिता का एक भी परमाणु है या नहीं, इसकी खोज कोई तत्त्व-वैज्ञानिक ही कर सकेगा। मुझे तो उसकी कथा आँसू भरी दृष्टि की छाया में काँपते हुए दुःख गीत की एक कड़ी-सी लगती रही है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मैंने उसे कब देखा, यह कहानी भी उसी के समान अपनी विचित्रता में करुण है।

वैशाख नए गायक के समान अपनी अग्निवीणा पर एक से एक लम्बा आलाप लेकर संसार को विस्मित कर देना चाहता था। मेरा छोटा घर गर्मी की दृष्टि से कुम्हार का देहाती आवाँ बन रहा था और हवा से खुलते, बंद होते खिड़की-दरवाजों के कोलाहल के कारण आधुनिक कारखाने की भ्रांति उत्पन्न करता था। मैं इस मुखर ज्वाला के उपयुक्त ही काम कर रही थी अर्थात् उत्तर-पुस्तकों में अंधाधुंध भरे ज्ञान-अज्ञान की राशि को विवेक में तपा-तपाकर ज्ञान-कणों का मूल्य निश्चित कर रही थी। हम लोग भी कैसे विचित्र हैं। जब बर्फ, खस की टट्टी, बिजली के पंखे आदि अनेक कृत्रिम उपचारों से भी हम अपनी बुद्धि का पिघलना नहीं रोक सकते, तब दूसरों के ज्ञान की परीक्षा लेने बैठे हैं। यदि मस्तिष्क, ठीक स्थिति में हो, तो कदाचित् हम न्याय के लिए ऐसे अन्यान्यपरायण हो ही न सकें।

तीसरा पहर थके यात्री के समान मानो ठहर-ठहर कर बढ़ा चला आ रहा था और मेरे हाथ तथा दृष्टि में पृष्ठों पर दौड़ने की प्रतियोगिता चल रही थी। ऐसे अवसर पर किसी का भी आना हमारी अधीरता में झल्लाहट का पुट मिला देता है, उस पर यदि आगन्तुक के कंठस्वर में हमें उसके भिखारीपन का आभास मिल गया हो, तब तो कहना ही क्या। नौकर-चाकर सब अपनी–अपनी कोठरियों के अस्वाभाविक अंधकार को और भी सघन करके स्वेच्छा से उलूक होने का सुख भोग रहे हैं। सोचा, न उठूँ। पुकारने वाले को असमय आने का दंड सहना चाहिए, परंतु भिखारी के संबंध में मेरे संस्कार कुछ ऐसी ही तर्कहीनता तक पहुँच चुके हैं, जहाँ से अंधविश्वास की सीमा–रेखा दूर नहीं रह जाती। बचपन से बड़े होने तक माँ न जाने कितनी व्याख्या- उपव्याख्याओं के साथ इस व्यवहार-सूत्र को समझाती रही है कि हमारी शिष्टता की परीक्षा तब नहीं हो सकती, जब कोई बड़ा अतिथि हमें अपनी कृपा का दान देने घर में आता है, वरन् उस समय होती है, जब कोई भूला–भटका भिखारी द्वार पर खड़ा होकर हमारी दया के कण के लिए हाथ फैला देता है।

माँ के जीवन-काल में ऐसे अनेक अवसर आए होंगे, जब मुझे सीखा हुआ पाठ स्मरण नहीं रहा; पर जब से अप्रसन्न होने की सीमा के पार पहुँच चुकी हूँ, तब से मुझे भूला हुआ भी सारी सूक्ष्म व्याख्याओं के साथ याद आने लगा है।

भिखारी की आवश्यकता से अधिक मुझे अपनी शिष्टता की परीक्षा का ध्यान था। निरुपाय उठना पड़ा। कई बार पुकारने के उपरांत पुकारने वाली मूर्तियाँ पत्तों में दरिद्र नीम ही से छाया याचना करने चल पड़ी थी। ए, ओ आदि अपरिचय-बोधक संज्ञा में अपना आमंत्रण पहचान कर जब वे लौटीं, तब उनके प्रति पग पर मेरा कौतूहल पैर बढ़ाने लगा। चर्म के आवरण में से अपना विद्रोह प्रकट करने वाले अस्थि-पंजर के लिए फटे लंबे कुर्ते को दोहरा कारागार बनाए 6-7 वर्ष का बालक लाठी को एक ओर से थामे आगे-आगे आ रहा था और ऊँची धोती और मैली बंडी में अपने कंकाल को यथासंभव मुक्ति दिए एक अंधा लाठी के दूसरे छोर के सहारे टओल-टटोल कर बढ़ते हुए पैरों से उसका अनुसरण कर रहा था। खेत में लकड़ी पर औंधाई हुई मटकी जैसे सिर को हिलाते हुए प्रौढ़ बालक ने वृद्ध युवक को आगे कर न जाने क्या बताया, पर जब उसने ऊपर मुख उठाकर नमस्कार किया, तब ऐसा जान पड़ा मानो नमस्कार का लक्ष्य खजूर का पेड़ है।

जीवन में पहली बार मेरा मन प्रश्न के उपयुक्त शब्दों की खोज में भटक कर उस नेत्रहीन के सामने मूक-सा रह गया।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

धूल के रंग के कपड़े और धूल भरे पैर तो थे ही, उस पर उसके छोटे-छोटे बालों, चपटे-से माथे, शिथिल पलकों की विरल बरुनियों, बिखरी-सी भौंहों, सूखे, पतले ओठों और कुछ ऊपर उठी हुई ठुड्डी पर राह की गर्द की एक परत इस तरह जम गई थी कि वह आधे सूखे क्ले मॉडल के अतिरिक्त और कुछ लगता ही न था। दृष्टि के आलोक से शून्य छोटी–छोटी आँखें कच्चे काँच की मैली गोलियों के समान चमकहीन थीं; जिनसे उस शरीर की निर्जीव मूर्तिमत्ता की भ्रांति और भी गहरी हो जाती थी।

कदाचित् इसी कारण उसके कंठ-स्वर ने मुझे अज्ञात-भाव से चौंका दिया। इस वर्ष का जीवन खुली पुस्तक-जैसा रहता है, अतः महान् ही नहीं, तुच्छतम आवश्यकता के अवसर पर भी उसकी कथा आदि से अंत तक सुना देना सहज हो जाता है। इसके विपरीत हमारा जटिल-से-जटिलतम होता हुआ अन्तर्जगत् और कृत्रिम बनता हुआ जीवन ऐसी स्थिति उत्पन्न किए बिना नहीं रहता, जिसमें बाहर के बगुलेपन को भीतर की सड़ी-गली मछलियों से सफेदी मिलने लगती है। इसी से हमारी तारतम्यहीन कथा अधिकाधिक अकथनीय बनती जाती है और सुख-दुःख की सरल मार्मिकता निर्जीव होने लगती है। हम सहज-भाव से अपनी उलझी कहानी कह नहीं सकते। अतः जब कहने बैठते हैं, तब कल्पना का एक-एक तार सत्य हो अनेक झंकारों की भ्रांति उत्पन्न करके उसे और अधिक उलझाने लगता है।

अंधे अलोपी की कथा में न मनोवैज्ञानिक गुत्थियाँ हाथ लगीं और न समस्याओं की भूलभूलैया प्राप्त हुई। हाँ, उसकी दैन्य भरी वाचालता से पता चला कि चक्षु के अभाव की पूर्ति उसकी रसना ने कर ली है और इस प्रकार पंच ज्ञानेन्द्रियों में चाहे ज्ञान का उचित विभाजन न हो सका; पर उसके परिमाण का संतुलन नहीं बिगड़ा।

उसका पिता काछी कुलावतंस रहा, पर बहुत दिनों तक अपने भावी वंशधर की प्रतीक्षा करने के उपरांत उसे याचक के रूप में अलोपीदेवी के द्वार पर उपस्थित होना पड़ा। अलोपीदेवी कदाचित् उस उदार सूम के समान थीं जो अपने दानी होने की ख्याति के लिए दान करता है, याचक की आवश्यकता की पूर्ति के लिए नहीं। उनके मंदिर से एक अखंडित मनुष्य-मूर्ति भी न निकल सकी। एक पुत्र दिया, वह भी नेत्रहीन। माँ-बाप ने उसके दान को उन्हीं के चरणों पर फेंक आने की कृतघ्नता तो नहीं दिखाई; पर उसकी कृपणता की घोषणा कर अन्य याचकों को सावधान करने के लिए उसका नाम रख दिया अलोपीदीन।

वह अलोपीदीन अब 23 वर्ष का हो चुका है और काछी पिता अंधे पुत्र से पितृ-ऋण का ब्याज-मात्र चुका कर मूल को अपनी सेवा से चुकाने के लिए पितरों के दरबार में चला गया है। माँ तरकारियाँ लेकर फेरी लगाती हैं; पर पुत्र को अच्छा नहीं लगता कि जवान आदमी बैठा रहे और बुढ़िया मर-मर कर कमाए। इसी से शाक-तरकारियों के तत्त्ववेत्ता ताऊ से यहाँ की चर्चा सुन, वह काम की खोज में निकल पड़ा है। ऐसे आश्चर्य से मेरा कभी साक्षात् नहीं हुआ था। जीवन से अनजान किशोरों की संख्या कम नहीं, जो सुख के साधनों के लिए उस माँ से झगड़ते हैं, जिसकी उँगलियों के पोर सिलाई करते-करते छलनी हो चुके हैं। कुलवधुओं के समान आँसू पीने वाले युवकों का अभाव नहीं; जिनका पौरुष न दरिद्र पिता का सब कुछ छीन लेने में कुंठित हो जाता है और न भिक्षावृत्ति से मूर्च्छित। अपनी पराजय को विजय मानने वाले ऐसे पुरुषों से भी समाज शून्य नहीं, जो छोटे बच्चों को छोड़कर दिन-दिन भर परिश्रम करने वाली पत्नियों के उपार्जित पैसों से सिनेमा-घरों की शोभा बढ़ा आते हैं।

साधारणतः आज के पुरुष का पुरुषार्थ विलाप है। जितने प्रकार से, जितनी भाव-भंगिमा के साथ;

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

जितने स्वरों में वह अपने निराश जीवन का मर्सिया गा सके, अपनी असमर्थता का स्यापा कर सके उतना ही वह स्तुत्य है और उतना ही अधिक पुरुष नाम के उपयुक्त है।

अंधी आँखों को आकाश की ओर उठाकर अपने पुरुषार्थ की दोहाई देने वाले अलोपी को ऐसी परंपरा के न्यायालय में प्राण-दण्ड के अतिरिक्त और कुछ नहीं मिल सकता था।

कुछ प्रकृतिस्थ होकर मैंने प्रश्न किया –'तुम यहाँ कौन-सा काम कर सकते हो ? अलोपी पहले से ही सब सोच-समझकर आया था – यह देहात के खेतों से सस्ती और अच्छी तरकारियाँ लाएगा – मेरे लिए और छात्रावास की विद्यार्थिनियों के लिए।

अपने जीवनव्यापी अंधेरेपन में वह ऐसा व्यवसाय में उलझा हुआ कर्त्तव्य किस प्रकार सँभाल सकेगा, यह पूछने का अवकाश न देकर अलोपी ने अपने फुफेरे भाई रग्घू की ओर संकेतकर बताया कि उन दोनों के सम्मिलित पुरुषार्थ से कठिनतम कार्य भी संभव होते रहे हैं।

प्रस्ताव अभूतपूर्व था; पर मैं भी कुछ कम विचित्र नहीं, इसी से रग्घू और अलोपी अपने दुर्बल कंधों पर कर्त्तव्य का गुरु–भार लाद कर लौटे।

दूसरे दिन सवेरे ही एक हाथ से रग्घू को लाठी का छोर थामे और दूसरे से सिर पर रखी बड़ी-सी छाबड़ी सँभाले हुए अलोपी, 'मालिक हो! मालिक हो!' पुकारने लगा।

मुझे क्या-क्या पसंद है यह जानने के लिए जब वह अनुनय-विनय करने लगा तब मैं बड़ी कठिनाई में पड़ी। कुछ तरकारियाँ डॉक्टरों ने मेरे पथ्य की सूची में नहीं रखी हैं और शेष के लिए सदा से यही नियम रहा है कि जो भक्तिन के विवेक को रुचे, वह मुझे स्वीकृत हो। फिर जिसे वर्ष में, कुछ महीने दही पर, कुछ फल पर और कुछ खिचड़ी, दलिया आदि पथ्य पर बिताने पड़ते हों, वह रुचि के संबंध में वीतराग हो ही जाता है। पर अलोपी को निराश न करने के लिए मैंने वह सब ले लिया, जिसे वह मेरे लिए ही लाया था। पैसे देते समय अलोपी ने कहा– वह महीने पर लेगा। जब मैंने अपने भूल जाने की संभावना और हिसाब लिखने की विरक्ति की व्याख्या आरंभ की, तब उसने बहुत विश्वास के साथ समझाया कि वह दस तक पहाड़े और पहली किताब के विद्‌वान ताऊ की सहायता से मेरा हिसाब ठीक रखेगा। छात्रावास का वहाँ की मेट्रन रखेंगी ही। वहाँ इस युगल मूर्ति को लेकर जो विनोदात्मक कोलाहल मचा, उसके संबंध में 'गिरा अनयन नयन बिनु बानी' कहना ही ठीक होगा; पर दो-चार दिन में ही अलोपी सबकी ममता का पात्र बन गया उसे जो स्वच्छंदता प्राप्त थी, वह दूसरे नौकरों को मिल ही नहीं सकती थी। मेस के लिए आँगन के एक कोने में वह पैर फैलाकर बैठता और तौलकर लाई हुई तरकारी फिर वहाँ के बड़े तराजू पर तौलने लगता। उसका स्पर्श-ज्ञान इतना बढ़ गया था कि लौकी, कद्‌दू, कटहल आदि को हाथ में लेते ही वह उनका तौल बता देता था। तुलाते–तुलाते वह शाक-तरकारियों के प्रकार और खेतों संबंध में, महराजिन, बारी आदि को न जाने कितना ज्ञातव्य बताता चलता था। प्रायः छोटी बालिकाएँ उसे घेर कर चिड़ियों की तरह चहकती ही रहती थीं। उनके लिए वह अमरूद, बेर आदि भी लाने लगा, जिनके दाम के संबंध में कुछ निश्चित रूप से कहा नहीं जा सकता। एक दिन जब कॉलेज के फल वाले ने शिकायत की कि अंधा फल लाकर बच्चों को बाँटता है, जिससे उसके व्यापार को हानि पहुँचती है; तब मैंने अलोपी से पूछा उसने दाँत से जीभ की नोक दबाकर सिर हिलाते हुए जो उत्तर दिया, उसका भावार्थ था कि दाम उसे मिल जाता है। फिर वह स्कूल के समय तो आता नहीं, अतः फल वाले की उससे क्या हानि हो सकती है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

बालिकाएँ न अलोपी को झूठा ठहरा सकती थीं, न मेरे सामने झूठ बोल सकती थीं; अतः वे मौन रहीं। मेरे अनुचित-उचित संबंधी व्याख्यान के उत्तर में अलोपी ने मैली पिछौरी के छोर से धुँधली आँखें पोंछते–पोंछते बताया कि उसकी एक आठ-नौ-वर्ष की चचेरी बहिन मर चुकी है। इन बालिकाओं के स्वर में उसे बहिन की भ्रांति होने लगती है, इसी से अपनी दरिद्रता के अनुरूप दो-चार अमरूद, बेर, जामुन आदि ले आता है। उसके देहात में ऐसी चीजों का कोई दाम नहीं लेता, फिर वह कैसे जानता कि शहर में ऐसे देना बुरा माना जाता है। दाम देकर खरीदता, तो लेना किसी तरह उचित भी हो सकता था। पर वे फल उसे तरकारियों के साथ घलुए में मिल जाते हैं। इनसे पैसे बनाने की बात सोचकर उसका मन जाने कैसा-कैसा होने लगता है। उन्मुख अलोपी के मुख का भाव देखकर मैं अपने ढपोरशंखी न्याय का महत्त्व समझ गई और तब मेरा मन अपने ऊपर ही खीज उठा। कहना व्यर्थ है कि अलोपी को अपने सिद्धान्त में कोई परिवर्तन नहीं करना पड़ा। अलोपी के नेत्र नहीं थे, इसी से संभवतः वह न प्रकृति के रौद्र रूप से भयभीत होता था और न उसके सौंदर्य से बहकता था। मूसलाधार वृष्टि जब बर्फ के तूफान की भ्रांति उत्पन्न करती, बिजली जब लपटों के फव्वारे–जैसी लगती और बादलों के गर्जन में जब पर्वतों के बोलने का आभास मिलता, तब रग्घू तो चलते–चलते बाहर से आँखें छिपा लेता, पर भीगे चिथड़े के गुड्डे के समान अलोपी नाक की नोक से चूते हुए पानी की चिंता न कर, भीगी उँगलियों से फिसलती लाठी थामें और हरे खेत के खंड जैसी छाबड़ी सँभाले, इस तरह पाँव रखता, मानों उन्हें आज ही पृथ्वी का पूरा परिचय प्राप्त करना है। एक बार भी कीचड़ में पैर पड़ जाने पर रग्घू की खैर न थी, क्योंकि अलोपी आँख वाले के पथ-प्रदर्शन में ऐसी भूल अक्षम्य समझता था। जब शीत बर्फीले तारों का व्यूह-सा रच देती और पक्षाघात की साँस-जैसी हवा बहती, तब रग्घू पतले कुरते में मिर्गी के रोगी के समान हिलता और दाँत बजाता चलता; पर अलोपी सारी शक्ति से ठिठुरे ओठों के कपाट बंद किए और सर्दी से नीले नाखून और ऐंठी उँगलियों वाले पैरों को तोल-तोलकर रखता हुआ आता। ग्रीष्म में जब धूल ऐसी जान पड़ती, मानों कोई पृथ्वी को पीस-पीस कर उड़ाये दे रहा है और लू जलते हुए व्यक्ति की तरह चीत्कार करती हुई, इस कोने से उस कोने में दौड़ती फिरती, तब हाथ में आँखों पर ओट किए हुए रग्घू के जल्दी-जल्दी उठते हुए पैर मुझे भाड़ में नाचते हुए दानों का स्मरण दिलाते थे। पर अलोपी पलकें मूँदकर आँखों के अंधकार को भीतर ही बंदी बनाता हुआ अपने हर पग को इतनी धीरता से जलती धरती पर रखता था, मानो उसके हृदय का ताप नापता हो। बसंत हो या होली, दशहरा हो या दीवाली, अलोपी के नियम में कोई व्यतिक्रम कभी नहीं देखा गया।

एक बार जब अपनी लम्बी अकर्मण्यता पर लज्जित हमारे हिंदू-मुस्लिम भाई वीरता की प्रतियोगिता में सक्रिय भाग ले रहे थे, तब अलोपी पहले से दुगनी बड़ी डलिया में न जाने क्या-क्या भरे और एक बड़ी गठरी रग्घू की पीठ पर भी लादे, सुनसान रास्ते से आ पहुँचा। उसके दुस्साहस ने मुझे विस्मित न करके क्रोधित कर दिया। 'तुम हृदय के भी अंधे हो, ऐसी अँधेरी गलियों में प्राण देकर कुछ स्वर्ग नहीं पहुँच जाओगे' आदि-आदि स्वागत-वचनों के उत्तर में अलोपी बैंगन-लौकी टटोलने लगा। मेरे आँगन में तरकारियों का टीला निर्मित कर, वह वैसे ही मूक-भाव से छात्रावास की ओर चल दिया। वहाँ से लौटकर जब वह सूखी आँखें पोंछता और ठिठकता-सा सामने आ खड़ा हुआ, तब मेरा क्रोध बरस कर मिट चुका था और मन में ममता की सजलता व्याप्त थी।

मेरे कंठ में आश्वासन का स्वर पहचानकर उसने रुक-रुक कर बताया कि वह दो दिन के लिए

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तरकारियाँ ले आया है। मेट्रन से उसे ज्ञात हो गया था कि उनके भंडार-घर के अचार समाप्त हो चुके हैं और बड़ियों में फफूँदी लग गई है। केवल दाल से तो अलोपी जैसे व्यक्ति ही रोटी खा सकते हैं, अतः यह देहात से यह सब खरीद कर बेचता-बेचता यहाँ आ पहुँचा। उस बिना आँखों वाले आदमी को कौन सताएगा; पर जब मेरी आज्ञा नहीं है, तब वह घर से बाहर पैर नहीं रख सकता। अब दो दिन के लिए चिंता नहीं है, फिर तब तक यह झगड़ा समाप्त हो ही जाएगा। अलोपी को ऐसे समय भी रोक रखना संभव नहीं हो सका, क्योंकि बूढ़ी माँ की रक्षा का भार उस पर था।

मैं बरामदे में हूँ या नहीं, यह अलोपी देख न सकता था; पर ऐसा कभी नहीं हुआ कि उसने आते-जाते उस दिशा में नमस्कार न कर लिया हो।

अनेक बार मैंने खाली डलियों के साथ नीम के नीचे बैठे अलोपी को भक्ति से बहुत मनोयोगपूर्वक बातें करते देखा था। वार्तालाप का विषय भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं रहता था। मुझे करेला अच्छा लगता है या कटहल, कचनार की कली पसंद है या सहजन की फली, मेथी का साग रुचिकर होता है या पालक का, मीठा नींबू लाभदायक है या संतरा, आदि प्रश्नों पर गंभीरता से वाद-विवाद चलता।

एक बार की घटना अपनी क्षुद्रता में भी मेरे लिए बहुत गुरु है। मैं ज्वर से पीड़ित थी। कई दिनों तक बरामदे को नमस्कार कर अलोपी ने रग्घू से कहा—जान पड़ता है इस बार गुरुजी बहुत गुस्सा हो गई हैं। पहले की तरह कुछ पूछती ही नहीं; पर जब उसे ज्ञात हुआ कि मैं बीमारी के कारण बाहर आ ही नहीं सकती, तब वह बहुत चिंतित हो उठा। दूसरे दिन संदेश मिला कि अलोपी मुझे देखने की आज्ञा चाहता है। उतने कष्ट के समय भी मुझे हँसी आए बिना न रह सकी। अंधा अलोपी असंख्य बार आज्ञा पाकर भी मुझे देखने में समर्थ कैसे हो सकता था। पर अलोपी भीतर आया और नमस्कार कर टओलता-टटोलता देहली के पास बैठ गया। फिर अपनी धुँधली, शून्य आँखों की आर्द्रता बाँह से पोंछकर पिछौरी के एक छोर में लगी गाँठ खोलते हुए उसने अपराधी की मुद्रा से बताया कि वह स्वयं जाकर अलोपी देवी की विभूति लाया है। एक चुटकी जीभ पर रख ली जाय और एक माथे पर लगा ली जाय, तो सब रोग-दोष दूर हो जायगा। कहने की इच्छा हुई – जब देवी तुम्हारा ही पूरा न कर सकीं, तब मेरा क्या करेंगी; पर उनके वरदान की गंभीरता ने मुख से कुछ न निकलने दिया। अलोपीदेवी की दिव्यता प्रमाणित करने के लिए अलोपीदान का कर्त्तव्य में वज्र और ममता में मोम के समान हृदय ही पर्याप्त होना चाहिए। उसके निकट जिसका परिचय स्वर-समूह के अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकता; उस व्यक्ति के प्रति इतनी सहानुभूति भूलने की वस्तु नहीं।

अलोपी को हमारे यहाँ आए तीसरा वर्ष चल रहा था। उसका कुछ भरा हुआ-सा कंकाल कुरते से सज गया, सिर पर जब-तक साफा सुशोभित होने लगा और ऊँची धोती कुछ नीचे सरक आई। साधारणतः महीने में 70 रु. से कुछ अधिक की ही शाक-तरकारियाँ आती थीं। दाम चुकाकर और रग्घू को कुछ देकर भी अलोपी के पास इतना बच रहता था, जिससे वह सजलता व्याप्त थी। अपनी माँ के साथ सुख से रह सके। और एक दिन तो रग्घू ने हँसते-हँसते बताया कि दादा का रुपया उसकी माई गाड़कर रखने लगी है।

अलोपी के अँधेरे जीवन का उपसंहार भी कम अंधकारमय न हो, इसका समुचित प्रबंध विधाता कर चुका था। एक दिन मेरे निकट बैठकर अपने—आप से संसार—चर्चा करती हुई भक्तिन ने सुनाया अलोपी अपना घर बसा रहा है। मैं इतनी विस्मित हुई कि भक्तिन की कथाओं के प्रति सदा की उपेक्षा भूल कर 'क्या'

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कह उठी और तब भक्तिन ने उसी प्रसन्न मुद्रा में मेरी ओर देखा, जिससे भीष्म ने रथ का पहिया ले दौड़ने वाले कृष्ण को देखा होगा। पता चला, उसके कथन का प्रत्येक अक्षर बिना मिलावट का सत्य है।

एक काछिन, जो दो पतियों को मुक्ति दे आई है, अंधे के लिए स्वर्ग की रचना करना चाहती है; पर अलोपी की माँ अपने वरदान में मिले पुत्र को अब फिर दान में देना स्वीकार नहीं करती।

गर्मियों की छुट्टियों के बाद लौट कर सुना कि अलोपी की माँ अलग रहने लगी और नई पत्नी ने आकर घर सँभाल लिया। फिर एक बार उसे देखने का अवसर भी मिला। मझोले कद की सुगठित शरीर वाली प्रौढ़ा थी। देखने में साधारण-सी लगी; पर उसके कंठ में ऐसा लोच और स्वर में ऐसा आत्मीयता भरा निमंत्रण था, जो किसी को भी आकर्षित किए बिना नहीं रहता, और कुछ विशेष चमकदार आँखों में चालाकी के साथ-साथ ऐसी कठोरता झलक जाती थी, जो उस पर विश्वास करना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य कर देती थी। अलोपी उसे कंठ–स्वर से ही जानता था। इसी से कदाचित् वह विश्वास कर सका।

रग्घू घर का भेदिया था; इसी से सब जान गए कि उसकी नई भौजी को रुपये की चर्चा के अतिरिक्त और कोई चर्चा नहीं सुहाती। कभी वह जानना चाहती है कि अलोपी ने गाढ़े दिन के लिए कुछ बचा रखा है या नहीं, कभी पूछती है कि उसके पछेली और झुमके किस कोने में गाड़कर रख दिए जाएँ।

अलोपी इस ढहते हुए स्वर्ग में छह महीने रह सका। फिर सुना कि उसकी चतुर पत्नी सब कुछ लेकर उसे माया-पाश से सदा के लिए मुक्ति दे गई है।

वह बेचारा तो कई दिन तक विश्वास ही न कर सका। खुद गड्ढे को टओल-टटोल कर देखता और फिर द्वार पर बैठकर उसकी प्रतीक्षा करने लगता है। जब परोपकारी पड़ोसियों ने उसके विश्वास की शिला को युक्तियों की एक-से-एक मर्म भेदी सुरंगों से उड़ा दिया, तब वह बीमार पड़ गया। पर, निरंतर कर्मयोग से दीक्षित पुलिस को यह शुभ समाचार देने की चर्चा चलते ही वह प्रशांत निराशा–भरी दृढ़ता से कहने लगता –'अपनी स्त्री की हुलिया लिखवाकर पकड़ मँगाना नीच का काम है।' अलोपी कुछ अच्छा होने पर आने लगा; पर उसमें पहले जैसा जीवन नहीं रह गया था। पैर-घसीट कर चलता, हाथ से लाठी छूट-छूट पड़ती। एक बार मेरे बरामदे की दिशा में नमस्कार करते समय छाबड़ी नीचे आ रही। अलोपी के सब साहस, संपूर्ण उत्साह और समस्त आत्मविश्वास को संसार का एक विश्वासघात निगल गया है, यह सत्य होने पर भी कल्पना-जैसा जान पड़ता है।

अंधे का दुःख गूँगा होकर आया था, अतः सांत्वना देने वाले उसके हृदय तक पहुँचने का मार्ग ही न पा सकते थे। मेरे बोलते ही वह लज्जा से इस तरह सिकुड़ जाता, मानों उसके चारों ओर ओले बरस रहे हों, इसी से विशेष कुछ कह-सुनकर उसका संकोचजनित कष्ट बढ़ाना जैसे उचित न समझा। पर, अपने अपराध से अनजान और अकारण दंड की कठोरता से अवाक् बालक-जैसे अलोपी के चारों ओर जो अँधेरी छाया घिर रही थी, उसने मुझे चिंतित कर दिया था।

उसकी माँ बड़ी मानता से प्राप्त अंधे पुत्र का सब अपराध भूल गई थी, पर हठी पुत्र ने अपने-आपको क्षमा नहीं किया, अतः उन दोनों का वह करुण-मधुर अतीत फिर न लौट सका।

मैं दशहरे का अवकाश घर ही पर बिता रही थी। अलोपी एक दिन तरकारियाँ देकर सन्ध्या समय तक मेस ही में बैठा रहा। कभी बड़ी ममता से तराजू को छूकर देखता, कभी बड़े स्नेह से पूसी की धनुषाकार

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पीठ को सहलाता और कभी विनोद से छोटी बालिकाओं को चिढ़ाने लगता। फिर मेरी कुत्ती फ्लोरा को अपनी बिछौरी में बँधे मुरमुरे देकर, हिरणी सोना को मूली की पत्तियाँ खिलाकर और मेरे बरामदे को नमस्कार कर जो गया, तो कभी नहीं लौटा। तीसरे दिन रोने से सूजी आँखों वाले रग्घू ने समाचार दिया कि उसका अंधा दादा बिना उसे साथ लिए ही न जाने किस अज्ञात लोक की महायात्रा पर चल पड़ा।

ऐसे ही अचानक तो वह यहाँ भी आ पहुँचा इसी से विश्वास होता है कि वह बिना भटके ही अपने गन्तव्य तक पहुँच जाएगा।

बालक रग्घू के लिए दूसरे काम का प्रबंध कर मैंने अलोपी के शेष स्मारक पर विस्मृति की यवनिका डाल दी है; पर आज भी देहली की ओर देखते ही मेरी दृष्टि मानों एक छायामूर्ति में पूंजीभूत होने लगती है। फिर धीरे–धीरे उस छाया का मुख स्पष्ट हो चलता है। उसमें मुझे कच्चे काँच की गोलियाँ जैसी निष्प्रभ आँखें भी दिखाई पड़ती हैं और पिचके गालों पर सूखे आँसुओं की रेखा का आभास भी मिलने लगता है। तब मैं आँख मल-मल कर सोचती हूँ – नियति के व्यंग्य से जीवन और संसार के छल से मृत्यु पाने वाला अलोपी क्या मेरी ममता के लिए प्रेत होकर मँडराता रहेगा ?

•••

शब्दार्थ –

घटना–शून्य – बिना परिवर्तन के, घटनाओं रहित/ अग्निवीणा–सूर्यताप के बढ़ने का संकेत/ आवाँ–मिट्टी के बर्तन पकाने का भट्टा / कृत्रिम–बनावटी/ अन्यान्यपरायण–अन्य के प्रति निष्ठावान/ याचक–भिखारी/ कुलावतंस–कुल का आभूषण/ मर्सिया–शोकगीत/ पथ्य–स्वास्थ्य लाभ के लिए उपयोगी आहार/ काछी–सब्जी बेचने वाला/ पिछौरी–पीछे से (कंधों पर) ओढ़ने का वस्त्र/ यवनिका–परदा/ पूंजीभूत–एकत्र होकर एक विशेष अवस्था को प्राप्त/

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. किसी भिखारी के प्रति सामान्य प्रतिक्रिया होती है –

(क) क्रोध (ख) उपेक्षा

(ग) करुणा (घ) श्रद्धा ( )

2. 'अंधी आँखों को आकाश की ओर उठाकर अपने पुरुषार्थ की दोहाई देने वाले अलोपी को ऐसी परंपरा के न्यायालय में प्राण दण्ड के अतिरिक्त और कुछ नहीं मिल सकता था।' लेखिका ऐसा क्यों मानती हैं ?

(क) क्योंकि अलोपी के नेत्र नहीं थे और पुरुष होकर भी वह कुछ नहीं कर सकता था।

(ख) वह नेत्र न होने के बावजूद कार्य करना चाहता था।

(ग) उसने अंधी आँखों को आकाश की ओर उठा कर अपनी असमर्थता प्रकट की थी।

(घ) वह जीवन से निराश होकर उनके पास आया था। ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. अलोपी के चक्षु के अभाव की पूर्ति किसने की ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2. 'अलोपी देवी कदाचित् उस सूम के समान थीं, जो अपने दानी होने की ख्याति के लिए दान करता है।' इन पंक्तियों द्वारा दानदाता की किस मनोभावना पर व्यंग्य किया गया है ?

3. 'तुम कौन–सा काम कर सकते हो ?' पूछे जाने पर अलोपी ने अपने किस कार्य का प्रस्ताव रखा ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. भिखारी का स्वर सुनकर लेखिका की क्या प्रतिक्रिया थी ?

2. 'हम सहज भाव से अपनी उलझी कहानी नहीं कर सकते।' दीनहीन वर्ग और सम्पन्न वर्ग की जीवन कथा का अन्तर स्पष्ट करते हुए लेखिका के क्या विचार हैं ?

3. 'आज के पुरुष का पुरुषार्थ विलाप है।' लेखिका ने किस आशय से ऐसा कहा है ?

4. 'गिरा अनयन, नयन बिनुबानी' लेखिका इन शब्दों को किस संदर्भ में ठीक मानती है ?

5. लेखिका को यह विश्वास क्यों है कि अलोपी बिना भटके अपने गन्तव्य तक पहुँच जाएगा ?

निबंधात्मक प्रश्न –

1. नेत्रहीन अलोपी न प्रकृति के रौद्र रूप से भयभीत होता था न उसके सौंदर्य से बहकता था। प्रत्येक स्थिति में दृढ़ता एवं धैर्य से काम में संलग्न अलोपी का चरित्र-चित्रण कीजिए।

2. अलोपीदेवी की दिव्यता प्रमाणित करने के लिए अलोपी ने क्या किया ?

3. 'अंधे का दुःख गूंगा होकर आया था। अतः सांत्वना देने वाले उसके हृदय तक पहुँचने का मार्ग ही न पा सकते थे।' पंक्तियों का क्या आशय है ?

4. अपने अपराध से अनजान और अकारण दंड की कठोरता से अवाक् बालक-जैसे अलोपी के चारों ओर जो अंधेरी छाया घिर रही थी, उसने मुझे चिंतित कर दिया था।' अलोपी में आए इस परिवर्तन का क्या कारण था ?

5. संस्मरण में से चित्रमयी भाषा के प्रयोग के अंश संकलित कीजिए।

6. पाठ में आए निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

(क) इस वर्ष का जीवन खुली...............................उसे और अधिक उलझाने लगता है।

(ख) एक बार की घटना अपनी क्षुद्रता ....अलोपी देवी की विभूति लाया है।

•••

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

19. सेव और देव

स०ही०वा०अज्ञेय

लेखक परिचय–

आधुनिक हिन्दी साहित्य के बहुआयामी तथा विलक्षण व्यक्तित्व के धनी अज्ञेय (उपनाम) का पूरा नाम सच्चिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय है। अज्ञेय का जन्म सन् 1911 में कसिया जिला देवरिया (उ.प्र.) में हुआ। इनके पिता हीरानंद शास्त्री पुरातत्त्ववेत्ता थे। इनका बचपन लखनऊ, कश्मीर, बिहार और मद्रास में व्यतीत हुआ। शिक्षा मद्रास और लाहौर में हुई। बी.एस.सी. करने के बाद एम.ए. (अंग्रेजी) के पढ़ाई की तथा संस्कृत और हिंदी का गहन अध्ययन किया। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान वे क्रांतिकारी के रूप में जेल भी गए। अज्ञेय 'सैनिक', 'प्रतीक', 'नया प्रतीक', 'बिजली', 'विशाल भारत', वाक् (अंग्रेजी त्रैमासिक) और 'दिनमान' के सम्पादक रहे। कुछ वर्ष आकाशवाणी में नौकरी की तथा तीन वर्ष तक सेना में कैप्टन भी रहे। यायावरी स्वभाव के अज्ञेय ने यूरोप तथा एशिया का भ्रमण किया। सन् 1961 ई० में इनकी नियुक्ति कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय में भारतीय संस्कृति के आचार्य पद पर हुई। 'कितनी नावों में कितनी बार' पर ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित हुए। 4 अप्रैल, 1987 को इनका स्वर्गवास हुआ।

हिंदी साहित्य में अज्ञेय की प्रतिष्ठा नई परम्परा का सूत्रपात करने वाले कवि के रूप में है। सन् 1943 में इन्होंने तार सप्तक का प्रकाशन किया, जिससे प्रयोगवादी काव्यधारा का जन्म माना जाता है। इसके बाद अज्ञेय ने तीन और तार सप्तकों का सम्पादन किया। अज्ञेय ने उपन्यास, कहानी, यात्रावर्णन, कविता, निबन्ध आदि अनेक विधाओं में लिखा है। इनकी प्रमुख रचनाओं में 'भग्नदूत' 'चिन्ता', 'इत्यलम्', 'हरी घास पर क्षण भर', 'बावरा अहेरी', 'कितनी नावों में कितनी बार', इन्द्रधनु रौंदे हुए ये', 'आँगन के पार द्वार' (काव्य), शेखर एक जीवनी, 'नदी के द्वीप', 'अपने–अपने अजनबी' (उपन्यास) 'विपथगा', 'परम्परा', 'कोठरी की बात', शरणार्थी', 'जयदोल', ये तेरे प्रतिरूप (कहानी संग्रह) 'अरे यायावर रहेगा याद', 'एक बूँद सहसा उछली' (यात्रावृत्तान्त) 'आत्मनेपद', 'त्रिशंकु', 'नवरंग और कुछ राग', हिंदी साहित्य एक आधुनिक परिदृश्य' (निबंध संग्रह) आदि उल्लेखनीय हैं।

पाठ परिचय –

'सेव और देव' कहानी के माध्यम से अज्ञेय ने जहाँ एक ओर यह स्पष्ट संदेश दिया है कि नैतिक मूल्यों की स्थिति स्वतःस्फूर्त होती है, आरोपित नहीं, वहीं यह भी व्यक्त किया है कि मनुष्य की आस्था उसे और अधिक नैतिक बल देती है। देव मूर्तियों के प्रति विशेष रुचि एवं आस्था रखने वाले प्रोफेसर गजानन अपने व्यक्तित्व से यह सिद्ध कर देते हैं कि आस्था में बहुत बड़ी शक्ति होती है। प्रोफेसर गजानन एक भूखे बालक को 'सेव' के बाग से सेव चुराकर तोड़ने पर डाँटते हैं और स्वयं देव मन्दिर में उपेक्षित पड़ी अनुपम मूर्ति ये सोचकर उठा लेते हैं कि मंदिर में इसका रख-रखाव ठीक नहीं है। वे उसे अपने ओवर कोट में छिपा लेते हैं। लौटते समय वही सेव का बगीचा रास्ते में पड़ता है और वे देखते हैं, वही पहले वाला लड़का सेव की चोरी कर रहा है। यह देखकर वे क्रोधित होते हैं और बच्चे को मारते हैं; किन्तु अचानक उन्हें अनुभव होता है

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कि ''इस बच्चे ने तो केवल सेव ही चुराया है, वे तो देवस्थान लूट लाए हैं।'' यही अनुभूति उनके हृदय में मूल्य चेतना और नैतिकता जगा देती है और उलटे पाँव लौटकर देवस्थान जाते हैं। मूर्ति को वापस यथा स्थान रख आते हैं। उन्हें अपने पर ग्लानि होती है। वे यह सिद्ध कर देते हैं कि भारतीय देवी-देवता जिनमें हम आस्था रखते हैं; उनसे हमारे हृदय में छाया अज्ञानान्धकार नष्ट हो जाता है और नैतिक मूल्य तथा सत् की प्रतिष्ठा होती है।

मूल पाठ –

प्रोफेसर गजानन पंडित ने अपना चश्मा पोंछकर फिर आँखों पर लगाया और देखते रह गए। मोटर पर से उतरकर और सामान डाकबंगले में भिजवाकर उन्होंने सोचा था, अभी आराम करने की जरूरत तो है नहीं। ज़रा घूम-घाम कर पहाड़ी सौन्दर्य देख लें, और इसलिए मोटर के अड्डे के धक्कम–धक्के से अलग होकर वे इस पहाड़ी रास्ते पर हो लिए थे। छाया में जब चश्में का काँच ठण्डा हो गया और उस पर उनके गर्म बदन से उठी हुई भाप जमने लगी, तब उन्होंने चश्मा उतारकर रूमाल से मुँह पोंछा, फिर चश्मा साफ करके आँखों पर चढ़ाया और फिर देखते रह गए। पहाड़ी रास्ता आगे एकाएक खुल गया था। चीड़ के वृक्ष समाप्त हो गए। रास्ते को पार करता हुआ एक झरना बह रहा था। उसका जितना अंश समतल भूमि में था, उस पर तो छाया थी, लेकिन जहाँ वह मार्ग के एक ओर नीचे गिरता था, वहाँ प्रपात के फेन पर सूर्य की किरणें भी पड़ रही थीं। ऐसा जान पड़ता था कि अंधकार की कोख में चाँदी का प्रवाह फूट पड़ा है – या प्रकृति-नायिका की कजरारी आँखों से स्नेह गद्‌गद आँसुओं की झड़ी...... और उसके पार एक चट्टान के सहारे एक पहाड़ी राजपूत बाला खड़ी थी, उसकी चौंकी हुई भोली शक्ल से साफ दिखता था कि प्रोफेसर साहब का वहाँ अकस्मात् आ जाना उसे एकदम अनधिकार–प्रवेश मालूम हो रहा है। प्रोफ़ेसर साहब दिल्ली के एक कॉलेज में प्राचीन इतिहास और पुरातत्त्व के अध्यापक हैं। वे उन थोड़े से लोगों में से हैं, जिनका पेशा और मनोरंजन एक ही है – मनोरंजन के लिए भी वे पुरातत्त्व की ओर ही जाते हैं। यहाँ कुल्लू पहाड़ की सुरम्य उपत्यकाओं में भी वे सोचते हुए आए हैं कि यहाँ भारत की प्राचीनतम सभ्यता के अवशेष उन्हें मिलेंगे, और हिन्दू-काल की शिल्प-कला के नमूने और धातु या प्रस्तर या सुधा की मूर्तियाँ और न जाने क्या-क्या .... लेकिन इतना सब होते हुए भी सौन्दर्य के प्रति-जीते-जागते स्पन्दनयुक्त क्षण-भंगुर सौन्दर्य के प्रति - उनकी आँखें अंधी नहीं हैं। बाला को वहाँ खड़ी देखकर उसके पैरों के पास बहते झरने का स्वर सुनते हुए उन्हें पहले तो एक हंसिनी का ख्याल आया, फिर सरस्वती का (यद्यपि बाला के हाथ में वीणा नहीं एक छोटी–सी छड़ी थी) उन्होंने अपने स्वर को यथासम्भव कोमल बनाकर पूछा, ''तुम कहाँ रहती हो ?''

बाला ने उत्तर नहीं दिया, सम्भ्रम दृष्टि से उनकी ओर देखकर जल्दी-जल्दी पहाड़ पर चढ़ने लगी।

प्रोफेसर साहब मुस्करा कर आगे चल दिए। बालिका का भोलापन उन्हें अच्छा-अच्छा लगा। सोचने लगे, 'कितने सीधे-सादे सरल स्वभाव के होते हैं, यहाँ के लोग! प्रकृति की सुखद गोद में खेलते हुए इन्हें न फिक्र है, न खटका है, न लोभ-लालच है। अपने खाने-पीने, ढोर चराने, गाने-बजाने में दिन बिता देते हैं। तभी तो बाहर से आने वाले आदमी को देखकर संकोच होता है। अपने आप में लीन रहने वाले इन भोले प्राणियों को बाहर वालों से क्या सरोकार ?' आगे बढ़ते-बढ़ते प्रोफेसर साहब सोचने लगे, 'ऐसे भले लोग न होते तो प्राचीन सभ्यता के जो अवशेष बचे हैं, ये भी क्या रह जाते ?खुदा-न-खास्ता ये लोग यूरोपियन सभ्यता को सीखे हुए होते तो एक–दूसरे को नोचकर खा जाते, उसकी राख भी न बची रहने देते। लेकिन

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

यहाँ तो फाहियान के जमाने का ही आदर्श है, सबको अपने काम से मतलब है, दूसरे के काम में दखल देना, दूसरे के मुनाफे की ओर दृष्टि डालना यहाँ महापाप है। लोग ढोर चरने छोड़ देते हैं, शाम को ले जाते हैं। कभी चोरी नहीं, शिकायत नहीं। खेती खड़ी है, कोई पहरेदार नहीं। मजाल क्या कि एक भुट्टा भी चोरी हो जाए। मेरे ख्याल में तो अगर मैं एक चवन्नी यहाँ राह में फेंक दूँ, तो कोई उठाएगा भी नहीं कि न जाने किसकी है और कौन लेने आए ?' रास्ता अब फिर घिर गया था, लेकिन चीड़ के दीर्घकाय वृक्षों से नहीं, अब उसके दोनों ओर थे सेव के छोटे–छोटे लचीले गातवाले पेड़, डार-डार पर लदे हुए फलों के कारण मानो विनय से झुके हुए-क्योंकि जहाँ सार होता है, वहाँ विनय भी अवश्य होता है, क्षुद्र व्यक्ति ही अविनयी हो सकता है - और कभी–कभी हवा से झूम–से जाते हुए। कुल्लू के जगत्-प्रसिद्ध सेवों की प्रशंसा प्रोफेसर साहब ने सुन ही रखी थी, कई बार मँगाकर सेव खाए भी थे, लेकिन आज इस प्रकार पेड़ पर लगे हुए असंख्य फलों को देख कर उनकी तबीयत खुश हो गई। और इससे भी अधिक खुशी हुई इस बात की कि गंध और स्वाद और रस की उस विपुल राशि का न कोई रक्षक कहीं देखने में आता है, न बचाव के लिए बाड़ तक लगाई गई है। पहाड़ी सभ्यता के प्रति उनका आदर-भाव और भी बढ़ गया। क्या शहर में इस तरह बाग रह सकता है ? फलों के कभी पकने की नौबत न आती और न ही तो स्कूल-कॉलेजों के लड़के ही टिड्डी दल की तरह आकर सब साफ कर देते और जितना खाते नहीं, उतना बिगाड़ देते। वहाँ तो कोई बाग लगाए तो एक-एक भोजपुरिये लठैत पहरेदार रखे, और चारों ओर जेल की-सी दीवार खड़ी करके कि कोई लुक-छिप कर न ले भागे, तब कहीं जाकर चैन से रह सके। और यहाँ - बाग़ की सीमा बनाने के लिए एक तार का जंगला तक नहीं है। पेड़ों के नीचे जो लम्बी-लम्बी घास लग रही है, वही, रास्ते के पास आकर रुक जाती है, वहीं तक बाग की सीमा समझ लो। यहाँ तो.........

प्रोफेसर साहब के पास ही धम्म से कुछ गिरा। उन्होंने चौंककर देखा, उन्हें आते देख एक लड़का पेड़ पर से कूदा है और उसकी अपर्याप्त आड़ में छिपने की कोशिश कर रहा है। उसके हाथ में दो सेव हैं, जिन्हें वह अपने फटे हुए भूरे कोट में किसी तरह छिपा लेना चाहता है।

उसकी झेंपी हुई आँखें और चेहरा साफ कह रहा था कि वह चोरी कर रहा है।

साधारणतया ऐसी दशा में प्रोफेसर साहब किंचित् ग्लानि से उसकी ओर देखते और आगे चल देते, लेकिन इस समय वैसा नहीं कर सके। उन्हें जान पड़ा कि यह लड़का उस सारी प्राचीन आर्य सभ्यता को एकसाथ ही नष्ट-भ्रष्ट किए दे रहा है जो फाहियान के समय से सदियों पहले से अक्षुण्ण बनी चली आई है। वे लपककर उस लड़के के पास पहुँचे और बोले, 'क्यों बे बदमाश, चोरी कर रहा है ? शर्म नहीं आती दूसरे का माल खाते हुए ?'' लड़का घबराया-सा खड़ा रहा, बोल नहीं सका। प्रोफेसर साहब और भड़क उठे। एक तमाचा उसके मुँह पर जमाया, सेव छीनकर घास में फेंक दिए जहाँ वे ओझल हो गए और फिर गर्दन पकड़कर लड़के को धकेलते हुए रास्ते की ओर ले आए।

''पाजी कहीं का! चोरी करता है ?तेरे जैसों के कारण तो पहाड़ी लोग बदनाम हो गए हैं। क्यों चुराये थे सेव ? यहाँ तो पैसे के दो मिलते होंगे, एक पैसे के खरीद लेता। ईमान क्यों बिगाड़ता है ?''

रास्ते पर लड़के को उन्होंने छोड़ दिया। वह वहीं खड़ा आँसू भरी आँखों से उधर देखता रहा जहाँ घास में उसके तोड़े हुए सेव गिर कर आँखों से ओझल हो गए थे।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रोफेसर साहब आगे बढ़ते हुए सोच रहे थे, खड़ा देख रहा होगा कि चोरी भी की, तो फल नहीं मिला। बहुत अच्छा हुआ। सेवों का सड़ जाना अच्छा, चोर को मिलना अच्छा नहीं। सड़े, चोर को क्या हक है ?

प्रोफेसर साहब एक गाँव के पास आ रुके। अन्दाज से उन्होंने जाना कि यह मनाली गाँव होगा और उन्हें याद आया कि यहाँ पर एक दर्शनीय प्राचीन मन्दिर है। गाँव के लोगों से पता पूछते हुए वे मनु के मन्दिर पर पहुँच ही गए। मन्दिर छोटा था, सुन्दर भी नहीं था, लेकिन संसार-भर में मनु का एकमात्र मन्दिर होने के नाते वह अपना महत्त्व रखता था। प्रोफेसर साहब कितनी ही देर तक एकटक उसकी ओर देखते रहे, यहाँ तक कि देहरी पर बैठे हुए बूढ़े पुजारी का ध्यान भी उनकी ओर आकृष्ट हो गया, आने-जाने वाले तो खैर देखते ही थे।

प्रोफेसर साहब ने गद्‌गद स्वर में पूछा, ''आसपास और भी कोई मन्दिर है ?''

पास खड़े एक आदमी ने कहा,''नहीं बाबूजी, यहाँ कहाँ मन्दिर है ?'' ''यहाँ मन्दिर नहीं?'' अरे भले आदमी, यहाँ तो सैकड़ों मन्दिर होने चाहिए। यहाँ पर......

''बाबूजी, यहाँ तो लोग मन्दिर देखने आते नहीं। कभी-कभी कोई आता है तो यह मनूरिखि का मन्दिर देख जाता है, बस, और तो हम जानते नहीं।''

पुजारी ने खाँसते हुए पूछा, ''कौन-सा मन्दिर देखिएगा, बाबू ?''

''कोई और मन्दिर हो, आस-पास के सब मन्दिर–मूर्तियाँ मैं देखना चाहता हूँ।''

पुजारी ने थोड़ी देर सोचकर कहा, ''और तो कोई नहीं, उस चोटी के ऊपर जंगल में एक देवी का स्थान है। वहाँ पहले कभी एक किला भी था, जिसके अन्दर देवी के थान में पूजा होती थी, पर अब तो उसके कुछ पत्थर ही पड़े हैं। वहाँ कोई जाता नहीं, अब उसमें भूत बसते हैं।''

प्रोफेसर साहब कुछ मुस्कराए, लेकिन बोले, ''कैसे भूत ?''

''कहते है कि पुराने राजाओं के भूत रहते हैं। वे राजा बड़े -प्रतापी थे।''

''अरे, उन भूतों से मेरी दोस्ती है!'' कहकर प्रोफेसर साहब ने रास्ता पूछा और क्षण-भर सोचकर पहाड़ पर चढ़ने लगे। पुजारी ने 'पास ही' बताया था, तो मील-भर से अधिक नहीं होगा, और अभी तीन बजे हैं, शाम होने तक मजे में बंगले पर पहुँच जाऊँगा।

जंगल का रूप बदलने लगा। बड़े-बड़े पेड़ समाप्त हो गए, अब छोटी–छोटी झाड़ियाँ ही दीख पड़ने लगीं। यह पड़ाव का वह मुख था, जो हवा के थपेड़ों से सदा पिटता रहता था – जाड़ों में तो बर्फ की चोटें यहाँ लगे हुए पेड़-पौधे को कुचल डालतीं। प्रोफेसर साहब की समझ में आने लगा कि यह ऊँचा शिखर किले के लिए बहुत उपयुक्त जगह है और यह भी वे जान गए कि यहाँ बना हुआ किला उजड़ कर कितनी जल्दी निरवशेष हो जाएगा।

झाड़ियाँ भी छोटी होती चलीं। घास की बजाय अब पथरीली जमीन आई, जिसमें किसी तरफ कोई बनी हुई पगडंडी नहीं थी, जिधर चले जाओ वही मार्ग। कहीं-कहीं लाल पत्थर के भी कुछ टुकड़े दीख जाते थे, जो शायद क़िले की इमारत में कहीं लगे होंगे, नही तो उधर लाल पत्थर नहीं होता। कहीं-कहीं पत्थर और मिट्टी के स्तूपाकार टीले की आड़ में कोई गाढ़े रंग की पत्तों वाली झाड़ी लगी हुई दीख जाती, तो वह

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

आसपास के उजाड़ सूनेपन को और भी गहरा कर देती। साँझ के धुँधलके में ऐसी झाड़ी को देखकर स्तूप में धूम्रवत् निकलते हुए प्रेत की कल्पना होना कोई असम्भव बात नहीं थी।

एक ऐसे ही स्तूप की आड़ में प्रोफेसर साहब ने देखा, एक गड्ढे में कीच भरी है जिसकी नमी से पोसे जाते हुए दो वृक्ष खड़े हैं और उनके नीचे पत्थर का एक छोटा-सा मन्दिर है, जिसका द्वार बन्द पड़ा है।

प्रोफेसर साहब ने कुण्डे में अटकी हुई कील निकाली तो द्वार खुलने की बजाय आगे गिर पड़ा– उसके कब्जे उखड़ गए थे। उन्होंने किवाड़ को उठाकर एक ओर धर दिया, थोड़ी देर पीछे हटकर खड़े रहे कि बन्द और सील के कारण बदबूदार हवा बाहर निकल जाए, फिर भीतर झाँकने लगे।

मन्दिर की बुरी हालत थी। भीतर न जाने कब बलि-पशुओं के सींग - बकरे के और हिरन के - पड़े हुए थे, जो सूखकर धूल-रंग के हो गए थे - उन पर कीड़े भी चल रहे थे। फर्श के पत्थरों के जोड़ों में काई उग आई थी। उन सींगों के ढेर से परे देवी के काले पत्थर की मूर्ति एक ओर लुढ़क गई थी। पास में पड़ी गणेश की पीतल की मूर्ति जंग से विकृत हो रही थी। केवल दूसरी ओर खड़ा श्वेत पत्थर का शिवलिंग अब भी साफ़, चिकना और सधे हुए सिपाही की तरह शान्त खड़ा था। आस-पास की जर्जर अवस्था में उसके उस दर्पोन्नत भाव से ऐसा जान पड़ता था, मानों क्रुद्ध होकर कह रहा हो, ''मेरी इस निभृत अन्तःशाला में आकर मेरे कुटुम्ब की शांति भंग करने वाले तुम कौन ?''

दो-एक मिनट प्रोफेसर साहब देहरी पर खड़े-खड़े ही इस दृश्य को देखते रहे। फिर उन्होंने बाँह पर टंगा हुआ अपना ओवरकोट नीचे रखा। एक बार चारों ओर देखकर निर्जन पाकर भी जूते खोल देना ही उचित समझा और भीतर जाकर देवी की मूर्ति उठाकर देखने लगे।

मूर्ति अत्यन्त सुन्दर थी। पाँच सौ वर्ष से कम पुरानी नहीं थी। इस लम्बी अवधि का उस पर ज़रा भी प्रभाव नहीं पड़ा था - या पड़ा था तो पत्थर को और चिकना करके मूर्ति को सुन्दर ही बना गया था। मूर्ति कहीं बिकती तो तीन-चार हज़ार से कम की न होती- किसी अच्छे पारखी के पास हो तो दस हजार भी कुछ अधिक मूल्य न होता और यह यहाँ उपेक्षित हालत में पड़ी है। न जाने कब से कोई इस मन्दिर तक आया भी नहीं है।

प्रोफेसर साहब ने मूर्ति ठीक स्थान पर सीधी करके रख दी और फिर देहरी पर आकर उसका सौन्दर्य देखने लगे।

पाँच सौ वर्ष! पाँच सौ वर्ष से यह यहीं पड़ी होगी ? न जाने कितनी पूजा इस ने पाई होगी, कितनी बलियों के ताज़े, गर्म, पूत रक्त से स्नान करके अपना दैवी सौन्दर्य निखारा होगा, और अब कितने बरसों से इन रेंगते हुए कीड़ों की लम्बी-लम्बी जिज्ञासु मूँछों की ग्लानिजनक गुद्‌गुदाहट सह रही होगी .... उफ़, देवत्व की कितनी उपेक्षा! मानव नश्वर है, यह मर जाए और उसकी अस्थियों पर कीड़े रेंगें, यह समझ में आता है लेकिन देवता......... पत्थर जड़ है; उसका महत्त्व कुछ नहीं! लेकिन मूर्ति तो देवता की ही है, देवत्व की चिरन्तनता की निशानी तो है। एक भावना है, पर भावना आदरणीय है। क्या यह मूर्ति यहीं पड़े रहने के काबिल है ? इन कीड़ों के लिए जिनके पास श्रद्धा को दिल नहीं, पूजने को हाथ नहीं, देखने को आँखें नहीं, छूने को त्वचा नहीं, टटोलने को ये हिलती हुई गन्दी मूँछे हैं .... यह मूर्ति कहीं ठिकाने से होती।

न जाने क्यों प्रोफेसर साहब ने एकाएक मन्दिर-द्वार से हटकर चारों ओर घूम कर देखा, फिर

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

देखा। न जाने क्यों आस-पास निर्जन पाकर तसल्ली की स्वांस ली और फिर वहाँ आ खड़े हुए।

मूर्ति गणेश की भी बुरी नहीं, लेकिन वह उतनी नहीं, न इतनी सुन्दर शैली पर निर्मित है। पीतल की मूर्ति में कभी वह बात आ नहीं सकती जो पत्थर में होती है। देवी की मूर्ति को देखते-देखते प्रोफेसर साहब के हृदय की स्पन्दन-गति तीव्र होने लगी– इतनी सुन्दर जो थी वह। वे फिर आगे बढ़कर उसे उठाने को हुए, लेकिन फिर उन्होंने बाहर झाँककर देखा, पर वहाँ कोई नहीं था, कोई आता ही नहीं उस बिचारे उजड़े हुए मन्दिर के पास - किसे परवाह थी निर्जन को अपनी दीप्ति से जगमग करती हुई उस देवी की। देवी के प्रति दया और सहानुभूति से गद्‌गद होकर प्रोफेसर साहब फिर भीतर आए। लपककर मूर्ति को उठाया और अपने धड़कते हुए हृदय को शान्त करने की कोशिश करते हुए एकटक उसे देखने लगे।

दिल इतना धड़क क्यों रहा है! प्रोफेसर साहब को ऐसा लगा जैसे वे डर रहे हैं। फिर उन्हें इस विचार पर हँसी-सी आ गई। डर किससे रहा हूँ मैं ? प्रेतों से ? मैं भी क्या यहाँ के लोगों की तरह अंधविश्वासी हूँ जो प्रेतों को मानूँगा ? कविता के लिहाज से भले ही मुझे सोचना अच्छा लगे कि यहाँ प्रेत बसते हैं, और रात में जब अँधेरा हो जाता है तब इस मन्दिर में देवी के आस-पास नाचते हुए ..... देवी है, शिव है, इसके गण भी तो होने ही चाहिए। रात को मूर्तियों को घेर-घेर कर नाचते होंगे और इन न जाने कब के बलि-पशुओं के भस्मीभूत सींगों से प्रेतोचित प्रसाद पाते होंगे! और दिन में मन्दिर की कन्दराओं में, दरारों में छिपकर अपनी उपास्य मूर्तियों की रक्षा करते होंगे, देखते होंगे कि कौन आता है, क्या करता है......

उन्होंने फिर मूर्ति को रख दिया और लौटकर देखा। उन्हें एकाएक लगा जैसे उस अखण्ड नीरवता में कोई छाया-सी आकर उनके पीछे भागकर कहीं छिप गई है– प्रेत! वे फिर रुकती–सी हँसी–हँसकर बाहर निकल आए। इस घोर निर्जन ने मेरे शहर के शोर से उलझे स्नायुओं को और उलझा दिया है। इसी नतीजे पर वे पहुँचे और फिर मन्दिर की ओर देखने लगे।

दिन ढल रहा था। मन्दिर की लम्बी पड़ती हुई छाया को देखकर प्रोफेसर साहब को ऐसा लगा, मानो वह दूर हटती-हटती भी मन्दिर से अलग होना नहीं चाहती, उससे चिपटी हुई है, मानो उसकी रक्षा करना चाहती हो, मानो यह मन्दिर और उसकी मूर्तियाँ उस छाया की गोद के शिशु हों, प्रोफेसर साहब का मन भटकने लगा।

इजिप्ट के पिरामिड भी इतने ही उपेक्षित पड़े थे। यह मन्दिर आकार में बहुत छोटा है, वे विराट थे, लेकिन उपेक्षा तो यही थी। उनमें भी न जाने क्या-क्या बातें फैला रखी थीं, भूत प्रेतों की। अंत में यूरोप के पुरातत्त्वविद् साहस करके वहाँ गए, उन्होंने उनमें प्रवेश किया, और अब संसार के बड़े संग्रहालयों में वे खज़ाने पड़े हैं और महत्त्व के अनुरूप सम्मान पाते हैं। फिलोडेल्फिया के अजायब–घर में तूतां खामेन की वह स्वर्णमूर्ति – उस नौ सेर खरे सोने का मूल्य तीस हज़ार रुपये होगा – फिर प्राचीनता का मूल्य अलग, और उसमें जड़े हुए हीरे-जवाहरात का अलग- कुल मिलाकर लाखों रुपये की चीज़ वह....

वे फिर भीतर गए। मूर्ति उठाई और रखकर बाहर आ गए। उन्होंने फिर सब ओर देखा। कोई नहीं था। सूर्य भी एक छोटे-से बादल के पीछे छिप गया था।

एकाएक उनकी घबराहट का कारण स्पष्ट हो गया। कुछ ठंडी-सी जानकर उन्होंने जल्दी से ओवरकोट पहना और फिर भीतर चले गए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मूर्ति के उपयुक्त यह स्थान कदापि नहीं है। मन्दिर है, पर जहाँ पूजा ही नहीं होती वह कैसा मन्दिर ? और गाँव वाले परवाह कब करते हैं। यहाँ मन्दिर भी गिर जाए तो शायद महीनों उन्हें पता ही न लगे– कभी किसी भटकी हुई भेड़-बकरी की खोज में आया हुआ गड़रिया आकर देखे तो देखे। यहाँ मूर्ति को पड़ा रहने देना पाप है।

इस निश्चय पर आकर भी उन्होंने एक बार बाहर आकर तसल्ली की कि कहीं कोई देख तो नहीं रहा है, तब लौटकर मूर्ति उठाकर जल्दी से कोट के भीतर छिपाई, किवाड़ को यथास्थान खड़ा किया, बूट एक हाथ में उठाए और बिना लौट कर देखे भागते हुए उतरने लगे।

जब देवी का स्थान और उसके ऊपर खड़े दोनों पेड़ों की फुनगी तक आँखों की ओट हो गई, तब उन्होंने रुककर बूट पहने और फिर धीरे–धीरे उतरते हुए ऐसा मार्ग खोजने लगे जिससे गाँव में से होकर न जाना पड़े। शिखर के दूसरे मुख से ही वे उतर सके।

गाँव मील-भर पीछे छूट गया था। सेवों के बगीचे फिर शुरू हो गए थे। कभी कोई मधु पीकर अघाया हुआ मोटा-सा काला भौंरा प्रोफेसर साहब के कोट से टकरा जाता था, कभी कोई तितली आकर रास्ता काट जाती थी। सूर्य की धूप लाल हो गई थी– ये सब अपना-अपना ठिकाना खोज रहे थे। प्रोफेसर साहब भी अपने ठिकाने की ओर जा रहे थे। उनका हृदय आह्लाद से भर रहा था। उनका पहला ही दिन कितना सफल हुआ था! कितना सौन्दर्य उन्होंने देखा था– और कितना सौन्दर्य, बहुमूल्य सौन्दर्य, उन्होंने पाया था! कुल्लू का अनिर्वचनीय सौन्दर्य! वास्तव में वह देवताओं का अंचल है .....

उस समय प्रोफेसर साहब के भीतर जो कुल्लू-प्रेम का ही नहीं, मानव-प्रेम का, संसार-भर की शुभेच्छा का रस उमड़ रहा था, उसकी बराबरी कुल्लू के रस-भरे सेव भी क्या करते! प्रोफेसर साहब की स्नेह उंड़ेलती हुई दृष्टि के नीचे वे मानो और पककर रस से भर जाते थे, उनका रंग कुछ और लाल हो जाता था। कितने रस-गद्‌गद हो रहे थे प्रोफेसर साहब!

सेव के बाग में फिर कहीं धमाका हुआ। प्रोफेसर साहब ने देखा, एक लड़का उन्हें देखकर शाख से कूदा है, उसके कूदने के धक्के से फलों की लदी हुई शाखा भी टूटकर आ गिरी है।

प्रोफेसर साहब ने रौब के स्वर से कहा, ''क्या कर रहा है ?''

लड़के ने सहम कर उनकी तरफ़ देखा– वही लड़का था! हाथ का थोड़ा-सा खाया हुआ सेब वह कोट के गुलूबन्द के भीतर छिपा रहा था।

प्रोफेसर साहब के तन में आग लग गई। लपककर बालक के कोट का गला उन्होंने पकड़ा, झटका देकर सेव बाहर गिराया, दो तमाचे उसके मुँह पर लगाते हुए कहा, ''बदमाश, फिर चोरी करता है! अभी मैं डाँट के गया था, बेशर्म को शर्म भी नहीं आई।''

उन्होंने लड़के को छाती में धक्का दिया। वह लड़खड़ा कर कुछ दूर जा पड़ा। गिरने को हुआ, संभल गया, फिर एक हाथ से कोट को वहीं से थामकर जहाँ प्रोफेसर ने धक्का दिया था, एक दर्द–भरी चीख मारकर रो उठा।

चीख सुनकर प्रोफेसर साहब को कुछ शान्ति हुई। कुछ आनन्द–सा हुआ। विद्रूप से उन्होंने कहा, ''क्यों, दुखती है छाती ? और छिपाओं सेव वहाँ पर!''

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

बात में भरे हुए तिरस्कार को और तीखा बनने के लिए उनके हाथ ने उनका अनुकरण किया, उठकर तेज़ी से प्रोफेसर साहब के ओवरकोट के कॉलर में घुसा।

एकाएक प्रोफेसर साहब पर मानो गाज गिरी। एक चौंधिया देने वाला आलोक क्षण-भर उनके आगे जलकर एक वाक्य लिख गया, 'इसने तो सेव चुराया है, तुम देवस्थान लूट लाए!'

सहमें हुए, स्तम्भित-से प्रोफेसर साहब क्षण–भर खड़े रहे, फिर धीरे-धीरे उलटे–पाँव गाँव की ओर चल पड़े।

तर्क उन्हें सुझाने लगा कि बेवकूफी है, उनकी दलील बिलकुल गलत है, तुलना आधारहीन है,' लेकिन वे न जाने कैसे इस सब बुद्धि की प्रेरणा के प्रति बहरे हो गए थे। जैसे कोलाहल बढ़ने लगा, उसे रोक रखने के लिए उनकी गति भी तीव्रतर होती गई। जब वे आँधी की तरह गाँव में से गुजऱे, तब घर जाता हुआ प्रत्येक व्यक्ति कुछ विस्मय से उनकी ओर देखता और उन्हें लगता कि वे उनकी छाती की ओर ही देख रहे हैं, जैसे उस काले ओवरकोट में छिपी हुई देवमूर्ति की ओर उसके पीछे प्रोफेसर साहब के दिल में बसे हुए पाप को, वे खूब अच्छी तरह जानते हैं।

अँधेरा होते-होते वे मन्दिर पर पहुँचे। किवाड़ एक ओर पटककर उन्होंने मूर्ति को यथास्थान रखा। लौटकर चलने लगे, तो आस–पास के वृक्ष अँधेरे में भयानक हो गये थे। सुनसान ने उन्हें फिर सुझाया कि वे एक निधि को नष्ट कर रहे हैं, लेकिन जाने क्यों उनके मन में शान्ति उमड़ आई। उन्हें लगा कि दुनिया बहुत ठीक है, बहुत अच्छी है।

शब्दार्थ–

सुरम्य – रमणीय/ उपत्यकाओं – घाटियों/ निरवशेश – नश्ट प्रायः/ संभ्रम – आश्चर्य मिश्रित – कौतुहल भाव सहित / स्तूपाकार – मिट्टी, ईंट आदि से बना ढूह के समान/ चिरन्तनता – शाश्वतता/ स्पन्दन गति – धड़कन/ फाह्यान – एक चीनी यात्री/ अक्षुण्ण – जो नष्ट न हो/ निभृत – एकान्त निर्जन/ अनिर्वचनीय – अवर्णनीय/ पूत रक्त – पवित्र रक्त/ प्रपात – झरना/ अकस्मात – अचानक/ क्षण–भंगुर – शीघ्र नष्ट होने वाला/ दीर्घकाय – विशाल वृक्ष/ ढोर – पशु/ विपुल राशि – अत्यधिक संख्या (ढेर)/ किंचित ग्लानि – कुछ घृणा से/ जर्जर – नष्ट प्रायः/ कुटुम्ब – परिवार/ देवत्व – ईश्वरत्व/ निर्जन – एकान्त/ दीप्ति – प्रकाश/ कन्दराओं – गुफाओं/ उपास्य – उपासना करने योग्य/ नीरवता – शान्ति/ अनुरूप – रूप के अनुसार/ अघाया – तृप्त/ आह्लाद – प्रसन्नता/ शाखा – डाल/ आलोक – प्रकाश/ स्तम्भित – जड़वत्/ निधि – खजाना।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. लेखक के अनुसार कौन लोग अविनयी हो सकते हैं ?

(क) क्षुद्र व्यक्ति (ख) दुष्ट व्यक्ति

(ग) शिक्षित व्यक्ति (घ) अशिक्षित व्यक्ति। ( )

2. प्रोफेसर गजानन किस विशय के प्रोफसर हैं ?

(क) इतिहास (ख) प्राचीन इतिहास और पुरातत्व

(ग) भूगोल (घ) प्राचीनतम सभ्यता। ( )

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3. अज्ञेय ने कितने तार सप्तकों का सम्पादन किया ?
   (क) एक (ख) दो
   (ग) चार (घ) तीन ( )
4. लेखक किस की उपेक्षा पर दुःख व्यक्त करता है ?
   (क) मानवत्व (ख)देवत्व
   (ग) दानवत्व (घ) राक्षसत्व ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. प्रोफसर गजानन कहाँ घूमने जाते हैं और क्यों ?
2. मंदिर में उपेक्षित देवी की मूर्ति देखकर वे क्या सोचते हैं ?
3. अज्ञेय पहाड़ी बालक को चाँटे क्यों लगाते हैं ?
4. अज्ञेय का पूरा नाम बताते हुए उनके प्रसिद्ध उपन्यासों का नाम बताइए।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. प्रोफसर गजानन देवी की मूर्ति उठाकर ओवर कोट में रखकर चलते समय क्या सोचते हैं ?
2. सेब तोडने वाले लड़के को पीटने के बाद उनके मन में क्या विचार आते हैं? अपने शब्दों में लिखिए।
3. राजपूती बाला को देखकर अज्ञेय के मन में पहाड़ी ग्रामवासियों के विशय में क्या विचार उत्पन्न हुए ?
4. लोभ–लालच कुछ समय के लिए मन को विचलित कर सकते हैं, परन्तु अन्त में नैतिक भाव ही विजयी होते हैं। संकलित कहानी के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

निबंधात्मक प्रश्न–

1. अज्ञेय की कहानी कला की विशेशताओं पर प्रकाश डालिए।
2. 'सेव और देव' कहानी की मूल संवेदना अपने शब्दों में लिखिए।
3. प्रोफेसर गजानन की चारित्रिक विशेषताओं को रेखांकित कीजिए।
4. ''इसने तो सेब ही चुराया है, तुम देवस्थान लूट आये।'' इस कथन में लेखक की मनःस्थिति पर अपने विचार प्रकट कीजिए।
5. पाठ में आए निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रंसग व्याख्या कीजिए –
   (क) ''ऐसा जान पड़ता था................................ मालूम हो रहा हैं।''
   (ख)''वे उन थोड़े से लोगों................................अंधी नहीं हैं।''
   (ग)''रास्ता अब फिर घिर..झूम से जाते हुए।''
   (घ)''तर्क उन्हें सुझाने लगा..................................तीव्रतर होती गयी।''
   (ङ)''देवत्व की कितनी उपेक्षा!...................................... कहीं ठिकाने से होती।''

•••

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

20. भक्ति आंदोलन और तुलसीदास

• राम विलास शर्मा

लेखक परिचय –

अंग्रेजी के प्रोफेसर होकर भी हिंदी के प्रकांड विद्वान डॉ० रामविलास शर्मा का जन्म उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले में स्थित उचगाँव सानी में 10 अक्टूबर 1912 को हुआ। आपका निधन 30 मई 2000 को हुआ।

ऋग्वेद और मार्क्स के अध्येता डॉ० रामविलास शर्मा आलोचक, इतिहासवेत्ता और भाषाविद् होने के साथ–साथ एक अच्छे कवि भी थे। इन्होंने 100 से अधिक पुस्तकें लिखीं, जिनमें 'हिंदी जाति का साहित्य', 'भारतीय संस्कृति और हिंदी प्रदेश', 'निराला की साहित्य साधना', 'पश्चिमी एशिया और ऋग्वेद', 'भारत में अंग्रेजीराज और मार्क्सवाद', 'परंपरा का मूल्यांकन', 'भारतीय साहित्य की भूमिका', 'आस्था और सौंदर्य', 'भाषा, साहित्य और संस्कृति' आदि प्रमुख हैं। अज्ञेय द्वारा संपादित 'तार सप्तक (1943 ई०)' में एक कवि के रूप में आपकी रचनाएँ बहुत चर्चित हुईं।

पाठ परिचय –

भक्ति आंदोलन भारतीय सांस्कृतिक इतिहास की एक अनोखी घटना है, जो वैश्विक इतिहास में दुर्लभ है। यह भक्ति आंदोलन ही था, जिसने भारतीयों को भावात्मक एवं राष्ट्रीय एकता के सूत्र में बाँधा।

रामविलास शर्मा की दृष्टि में तुलसीदास भारत के श्रेश्ठ भक्त कवि हैं क्योंकि तुलसी ने भक्ति के आधार पर जन-साधारण के लिए धर्म को सरल और सुलभ बनाकर पुरोहितों के धार्मिक अधिकार की जड़ें हिला दीं। तुलसी मानवीय करुणा के कवि हैं जिन्होंने कोल, किरात, आभीर, जवन, खस, श्वपच आदि सभी अन्त्यजों और अछूतों को भक्ति का उत्तराधिकारी माना। तुलसी का साहित्य निष्क्रियता का साहित्य नहीं है, और यह जीवन की अस्वीकृति का साहित्य भी नहीं है।

भारत के नए जागरण का कोई महान् कवि भक्ति आंदोलन और तुलसीदास से पराङ्मुख होकर नहीं रह सकता।

डॉ० रामविलास शर्मा जैसे प्रगतिवादी समालोचकों द्वारा गोस्वामी तुलसीदास की प्रशंसा और स्वीकार्यता तुलसी के लोकनायक, कालजयी और शाश्वत कवि होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

मूल पाठ –

तुलसीदास भारत के श्रेष्ठ भक्त कवि, भक्ति-आंदोलन के निर्माता, उसी भक्ति-आंदोलन की महान् उपलब्धि हैं। उनके साहित्य का सामाजिक महत्त्व भक्ति-आंदोलन के सामाजिक महत्त्व पर निर्भर है, उससे पूरी तरह संबद्ध है।

भक्ति-आंदोलन अखिल भारतीय है। देश और काल की दृष्टि से ऐसा व्यापक सांस्कृतिक आंदोलन संसार में दूसरा नहीं है। ईसा की दूसरी शताब्दी में ही आंध्रप्रदेश में कृष्णोपासना के चिह्न पाए जाते हैं। गुप्त सम्राटों के युग में विष्णुनारायण-वासुदेव की उपासना ने अखिल भारतीय रूप ले लिया।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाँचवीं शताब्दी से लेकर नवीं शताब्दी तक तमिलनाडु भक्ति-आंदोलन का प्रमुख स्रोत रहा। आलवार संतों की कीर्ति सारे भारत में फैल गई। कश्मीर में लल देव, तमिलनाडु में आंदाल, बंगाल में चंडीदास, गुजरात में नरसी मेहता – भारत के विभिन्न प्रदेशों में भक्त कवि लगभग डेढ़ हजार वर्ष तक जनता के हृदय को अपनी अमृतवाणी से सींचते रहे।

यह भक्ति–आंदोलन ब्रह्मदेश, अफगानिस्तान और ईरान की सीमाओं पर जाकर रुक जाता है; सिन्ध, कश्मीर, पंजाब, बंगाल, महाराष्ट्र, आंध्र, तमिलनाडु आदि प्रदेशों पर भक्ति-आंदोलन की धारा पूरे वेग से बहती है। भक्त-कवियों ने विभिन्न प्रदेशों को राष्ट्रीय एकता के सूत्र में बाँधने में कितना बड़ा काम किया, उसका मूल्य आँकना सहज नहीं है। उनके पास राजनीतिशास्त्र के कोई ऐसे परिचित सूत्र नहीं थे, जिन्हें वे आये दिन दोहराते हुए जनता को एकताबद्ध करते। उन्होंने भावात्मक रूप से जनता को एक किया। इस भावात्मक एकता में मुख्य भाव था भक्ति का।

उस समय दैनिक-समाचार पत्र नहीं थे, साप्ताहिक और मासिक पत्र नहीं थे। प्रचार की सुविधाओं के लिए रेडियो नहीं था। आज ये सब साधन सुलभ हैं। किंतु क्या आज भारतीय जनता में – विशेष रूप से जनता के नेताओं में, उनकी पार्टियों में – वह भावात्मक एकता है, जो तुलसी के युग में थी ?यह प्रश्न करने से ही भक्ति-आंदोलन के राष्ट्रीय महत्त्व का ज्ञान हो जाएगा।

सम्भवतः तुलसीदास के युग में विभिन्न प्रदेशों के साहित्यकार एक-दूसरे की विचारधाराओं से जितना परिचित थे, उतना आज नहीं हैं। इधर विभिन्न भाषाओं के साहित्यिक आंदोलनों को लेकर अनेक शोध ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं। इनसे यह स्पश्ट होता जा रहा है कि हिंदी तथा अन्य भाषाओं के भक्ति साहित्य में जो समानताएँ दिखायी देती हैं, वे आकस्मिक नहीं हैं। वे इतर प्रदेशों के साहित्य से परिचित होने का फल है।

भक्ति-आंदोलन से जो भावात्मक एकता स्थापित हुई, उसमें जितना फैलाव था, उतनी गहराई भी थी। यह एकता समाज के थोड़े से शिक्षितजनों तक सीमित नहीं थी। संस्कृत के द्वारा जो राष्ट्रीय एकता कायम हुई थी, उससे यह भिन्न थी। यह एकता प्रादेशिक भाषाओं के माध्यम से कायम हो रही थी। भक्ति-आंदोलन एक ओर अखिल भारतीय आंदोलन था, दूसरी ओर वह प्रदेशगत, जातीय आंदोलन भी था। देश और प्रदेश एक साथ; राष्ट्र और जाति दोनों की सांस्कृतिक धाराएँ एक साथ। भक्ति-आंदोलन की व्यापकता और सामर्थ्य का यही रहस्य है।

जो लोग समझते हैं कि अंग्रेजों के आने से पहले यहाँ राष्ट्रीय एकता का अभाव था, उन्हें भक्ति–आंदोलन के इस अखिल भारतीय स्वरूप पर विचार करना चाहिए।

भलि भारत भूमि, भले कुल जन्म, समाज सरीर भलो लहि कै।
जो भजै भगवान सयान सोई तुलसी हठ चातक ज्यों गहि कै।।

यह उक्ति तुलसीदास की है।

अनेक विद्वान मानते हैं कि राश्ट्रीय एकता का ही नहीं, जनतंत्र का पाठ भी अंग्रेजों ने ही हमें पढ़ाया। अंग्रेज न आते, तो यहाँ के लोग संकीर्ण जातिवाद में फँसे रहते। इन विद्वानों को विचार करना चाहिए कि भक्ति–आंदोलन में इतने जुलाहे, दर्जी, नाई आदि इतर वर्णों के लोग कैसे सिमट आए ? आज

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कल विश्वविद्यालयों में और साहित्य में कितने अध्यापक और लेखक हैं जो द्विजेतर वर्णों के हैं।

संभवतः जातिप्रथा जितनी दृढ़ आज है, उतनी नामदेव दर्जी, सेना नाई, चोखा महार, रैदास और कबीर जुलाहे के समय में न थी। और जातिवाद संकीर्णता जितनी शिक्षितजनों में है, सम्भवतः उतनी सूर और कबीर के पद गाने-वाले अपढ़ जनों में नहीं है। वर्णाश्रम धर्म और जातिप्रथा की जितनी तीव्र आलोचना भक्ति–साहित्य में है, उतनी आधुनिक साहित्य में नहीं है।

यहाँ पर आपत्ति की जा सकती है कि मैं भक्ति-आंदोलन को बहुत व्यापक अर्थ दे रहा हूँ। भक्त और संत अलग थे; इन दोनों से भिन्न प्रेममार्गी कवि थे। इन सबको एक आंदोलन में शामिल करना अनुचित है।

इसका उत्तर यह है कि स्वयं भक्त और संत कवि भक्तों और संतों में वैसा भेद न करते थे जैसा आलोचक करते हैं। 'संत सभा चहुँ दिसि अँबराई। श्रद्धा रितु बसन्त सम आई।' सन्तसभा अनुपम अवध, सकल सुमंगल मूल।' 'बन्दउ सन्त समान चित, हित अनहित नहिं कोइ।' तुलसीदास की इन उक्तियों से देखा जा सकता है कि सन्त और भक्त शब्द उनके लिए पर्यायवाची है। उधर कबीर की उक्ति है :

सहजै सहजै मेला होयगा, जागी भक्ति उतंगा।
कहै कबीर सुनो हो गोरख चलौ गीत के संगा।।

कबीर भी सन्त और भक्त में भेद नहीं करते।

मलिक मुहम्मद जायसी वेद-पुराण और कुरान सभी का आदर करते थे।

'वेद-पन्थ जे नहिं चलहिं, ते भूलहिं बन माँझ।' यह उक्ति जायसी की है। पुराणों के बारे में लिखा था, 'एहि बिधि चीन्हहु करहु गियानू। जस पुरान महँ लिखा बयानू।' प्रेम-ज्ञान–वैराग्य निर्गुण-सगुण आदि के भेदभाव उस समय अवश्य थे, किन्तु वे सब एक व्यापक आंदोलन के अन्तर्गत थे। ये भेद उतने महत्त्वपूर्ण न थे, जितने कुछ आलोचकों को आज वे लगते हैं।

निराला जी ने अपने अनेक निबंधों में प्रतिपादित किया है कि गोस्वामी तुलसीदास मूलतः रहस्यवादी थे। उनकी इस स्थापना के पीछे यह बोध था कि कबीर, जायसी, सूर और तुलसी की चेतना का एक सामान्य स्तर है। यह 'रहस्यवाद' का सामाजिक महत्त्व असाधारण है। यह रहस्यवाद अद्वैत ब्रह्म के साक्षात्कार का दावा करके अनेक धर्मों और मतों के परस्पर विद्वेश का खण्डन करता था। वह उच्च वर्णों के कर्मकाण्डी धर्म के स्थान पर लोकधर्म की स्थापना करता था। इस लोकधर्म का आधार था प्रेम। कबीर, तुलसी, जायसी आदि कवि रहस्यवादियों के समान ज्ञान-नेत्र खुलने, आनन्द से विह्वल होने की बातें करते हैं और इस आनन्द को वे मानव-प्रेम से जोड़ देते थे।

जायसी ने लिखा था :

सैयद असरफ पीर पियारा। जेहि मोहिं पन्थ दीन्ह उजियारा।
लेसा हिये प्रेम कर दिया। उठी जोति भा निरमल हिया।।

जायसी के ज्ञान-नेत्र खुले; उन्हें जो प्रकाश दिखायी दिया, वह प्रेम का प्रकाश था। तुलसी ने लिखा

अस मानस मानस चख चाही। भइ बिबुद्धि विमल अवगाही।
भयउ हृदय आनन्द उछाहू। उमगेउ प्रेम प्रमोद प्रबाहू।।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

यहाँ भी ज्ञान-नेत्र खुलने की बात है। जो प्रकाश दिखायी देता है, उसमें प्रेम प्रवाह ही उमगता है। यही प्रेम की भावात्मक एकता कबीर, सूर, जायसी और तुलसी को एक सामान्य भावभूमि पर ला खड़ा करती है। तुलसी के उपास्य देव को कर्मकाण्ड नहीं, प्रेम ही प्रिय है :

रामहिं केवल प्रेम पियारा। जानि लेउ जो जाननिहारा।।

यही प्रेम तत्त्व मानव-समाज को एक सूत्र में बाँधने वाला है।

आधुनिक काल में जड़ और चेतन, सगुण और निर्गुण, ज्ञान और भक्ति का भेद आलोचकों के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण हो गया है। तुलसी के युग में भी इस तरह के भेद थे, किंतु तुलसीदास तथा अन्य कवियों का प्रयत्न इन भेदों को दूर करने की ओर था, उन्हें दृढ़ करने के लिए नहीं।

जायसी ने लिखा था :

परगट गुपुत सो सरब बिआपी। धरमी चीन्ह, न चीन्है पापी।।

गोस्वामीजी ने इसीके के समकक्ष लिखा था :

अगुन सगुन दुइ ब्रह्म सरूपा। अकथ अगाध अनादि अनूपा।
एक दारुगत देखिय एकू। पावक सम जुग ब्रह्म विवेकू।।

निर्गुण और सगुण परस्पर विरोधी नहीं है। एक ही सत्ता, व्यक्त और अव्यक्त, दोनों है। कबीर की उक्ति है :

तहं चेत–अचेत खम्भ दोउ मन रच्या है हिण्डोर।
तहँ झूलैं जीव जहान जहँ कतहूँ नहिं थिर ठौर।।

कबीर-जायसी-तुलसी की एक सामान्य दार्शनिक भूमि है, उसी के अनुरूप उनके साहित्य की सामाजिक विषयवस्तु में बहुत बड़ी समानता है।

भक्ति-आंदोलन अखिल भारतीय सांस्कृतिक आंदोलन था। इस आंदोलन की श्रेश्ठ देन थे, तुलसीदास। उन्होंने निर्गुण-पंथियों और सगुण-मतावलम्बियों को एक किया, उन्होंने वैश्णवों और शाक्तों को मिलाया। उन्होंने भक्ति के आधार पर जनसाधारण के लिए धर्म को सरल और सुलभ बनाकर पुरोहितों के धार्मिक अधिकार की जड़ें हिला दीं। तुलसीदास मानवीय करुणा के अन्यतम कवि हैं। उनके राम दीनबन्धु हैं। 'सबरी गीध सुसेवकनि, सुगति कीन्ह रघुनाथ।' वनवासी कोलकिरात राम के दर्शन से प्रसन्न होते हैं। 'आभीर जवन किरात खस श्वपचादि' सभी राम के स्मरण से मोक्ष–लाभ करते हैं।

गोस्वामी तुलसीदास ने राम को उपास्य मानकर आस्था का भवन निर्मित किया था। किन्तु कष्ट सहते-सहते एक बार तुलसीदास की आस्था भी डिग गयी थी। उन्होंने क्षुब्ध होकर लिखा था :

कियो न कछू, करिबो न कछू, कहिबो न कछू, मरिबो ही रह्यो है।

इससे उनके मर्मान्तक कष्ट की कल्पना की जा सकती है।

भक्ति-साहित्य निराशाजन्य साहित्य नहीं है, यद्यपि उसमें निराशा भी है। यह स्थापना कि मुसलमानों के शासनकाल में पराधीनता के कारण लोग भक्ति और निराशा के गीत गाने लगे, अवैज्ञानिक है। भक्ति-आंदोलन तुर्क आक्रमणों से पहले का है। गुप्त सम्राटों के युग में ही वैष्णव मत का प्रसार होता है,

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तमिलनाडु भक्ति-आंदोलन का केन्द्र रहा, जहाँ मुसलमानों का शासन न था। स्वयं अनेक मुस्लिम संतों ने इस आंदोलन में योग दिया।

भक्ति-आंदोलन विशुद्ध देशज आंदोलन है। वह सामन्ती समाज की परिस्थितियों से उत्पन्न हुआ था; वह मूलतः इस सामन्ती समाज–व्यवस्था से विद्रोह का साहित्य है।

तुलसी-साहित्य एक ओर आत्मनिवेदन और विनय का साहित्य है, दूसरी ओर वह प्रतिरोध का साहित्य भी है। हमारे समाज पर गोस्वामी तुलसीदास का इतना गहरा प्रभाव है कि आज यह कल्पना करना कठिन है कि तुलसीदास ने अनेक प्रचलित मान्यताएँ अस्वीकार करके यह साहित्य रचा था। वे राम के सम्मुख ही विनम्र और करुण स्वर में बोलने वाले कवि हैं, औरों के आगे सर हमेशा ऊँचा रखते थे। वे आत्मत्याग करने वाले को सर्वश्रेश्ठ व्यक्ति मानते हैं। भक्त के पास अपना कुछ नहीं होता, इसलिए – 'राम ते अधिक राम कर दासा।'

सामन्ती समाज के साहित्य की सबसे बड़ी कमजोरी होती है – निष्क्रियता। तुलसी का साहित्य निष्क्रियता का साहित्य नहीं है। धनुर्धर राम रावण का वध करने वाले पुरुषोत्तम हैं। तुलसी का साहित्य जीवन की अस्वीकृति का साहित्य नहीं है। वे उन लोगों का मज़ाक उड़ाते हैं जो काम, क्रोध के भय के मारे रात को सो नहीं पाते – 'जागैं जोगी जंगम जती जमाती ध्यान धरैं उर भारी लोभ मोह कोह काम के।' केवल राम का भक्त चैन से सोता है – 'सोवै सुख तुलसी भरोसे एक राम के।' काम, क्रोध, मद लोभ, बुरे हैं, किन्तु आवश्यक भी। भेद है मर्यादा का। यूरुप के सन्तों की तरह तुलसी को स्वर्ग का मोह नहीं है, न उन्हें नरक का भय है। उनके राम अपनी जन्मभूमि को स्वर्ग से भी अधिक प्यार करते हैं।

जद्यपि सब बैकुण्ठ बखाना। वेद पुरान विदित जग जाना।
अवध सरिस प्रिय मोहिं न सोऊ। यह प्रसंग जानै कोउ कोऊ।।

तुलसीदास ने जो राम में जो जन्मभूमि का प्रेम, निर्धन और परित्यक्त जनों के प्रति प्रेम चित्रित किया है, वह आकस्मिक नहीं है। स्वयं उनके हृदय में जो प्रेम-प्रमोद-प्रवाह उमगा था, वही राम में साकार हो गया है। उन्होंने कहा भी था – 'जाकी रही भावना जैसी। प्रभु मूरति देखी तिन तैसी।' तुलसीदास ने भी अपनी भावना के अनुसार राम को प्रेममय, अपार करुणामय देखा है। 'रामचरितमानस' के राम वाल्मीकि, कालिदास, भवभूति अन्य सभी कवियों के रामों से भिन्न हैं। वे तुलसी के राम हैं। उनमें हमें स्वयं तुलसीदास की मानवीय छवि दिखायी देती है। इन करुणामय राम में कहीं तुलसी का चुनौती वाला स्वर सुनायी देता है :

देव दनुज भूपति भट नाना। समबल अधिक होई बलवाना।
जौं रन हमहिं प्रचारै कोऊ। लरहिं सुखेन काल किन होऊ।।

कहीं इनमें तुलसी की परिहासप्रियता दिखायी देती है :

'राम मात्र लघु नाम हमारा। परसु सहित बड़ नाम तोहारा।।'

लक्ष्मण में यही परिहासप्रियता कुछ अधिक मात्रा में चित्रित की गई है। उसी प्रकार उनमें क्रोध की मात्रा अधिक है। 'विनयपत्रिका' के तुलसी की छाप भरत के चरित्र पर है। तुलसी ने जैसे समस्त संसार को सियाराममय देखा था, वैसे ही 'रामचरितमानस' के हर पात्र में तुलसी के मानस का कुछ-न-कुछ अंश

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

विद्यमान है।

तुलसी का काव्य लोक-संस्कृति का अभिन्न अंग बन गया है। उनके नाम के साथ कोई पन्थ नहीं जुड़ा है। 'रामचरितमानस' को लोकप्रिय बनाने के लिए कोई संघबद्ध प्रयास नहीं किया गया। अपने आप मिथिला के गाँवों से लेकर मालवे की भूमि तक जनता ने इस ग्रंथ को अपनाया। करोड़ों हिन्दी भाषियों के लिए धर्मग्रंथ, नीतिग्रन्थ, काव्यग्रन्थ यदि कोई है तो 'रामचरितमानस' है। इसका एक अप्रत्यक्ष सामाजिक फल यह हुआ है कि हिंदी भाषी जनता को संगठित करने में, उसमें जातीय एकता का भाव उत्पन्न करने में 'रामचरितमानस' की अपूर्व भूमिका रही है। आश्चर्य की बात है कि जिन जनपदों में गाँवों में तुलसी और सूर की रचनाओं का पाठ शताब्दियों से होता रहा है, उनके कुछ अभिनव नेता और बुद्धिजीवी अपने को हिन्दी भाषी क्षेत्र से अलग मानते हैं।

भक्ति-आंदोलन और तुलसी–काव्य का राष्ट्रीय महत्त्व यह है कि उनसे भारतीय जनता की भावात्मक एकता दृढ़ हुई।

भक्ति-आंदोलन और तुलसी-काव्य का अन्यतम सामाजिक महत्त्व यह है कि इनमें देश की कोटि-कोटि जनता की व्यथा, प्रतिरोध भावना और सुखी जीवन की आकांक्षा व्यक्त हुई है। भारत के नए जागरण का कोई महान् कवि भक्ति–आंदोलन और तुलसीदास से पराङ्मुख नहीं रह सकता। वह सांस्कृतिक धारा रवीन्द्रनाथ और निराला के साहित्य में अविच्छिन्न रूप से प्रवाहित है। इस तथ्य की पुष्टि के लिए यहाँ रवीन्द्रनाथ की 'सूरदासेर प्रार्थना' और निराला की 'तुलसीदास' कविताओं का उल्लेख करना ही यथेष्ट होगा।

•••

शब्दार्थ –

द्विजेतर – गैर ब्राह्मण / अद्वैत – परम ब्रह्म और जीव के कोई अंतर नहीं देखने वाला सिद्धांत / जवन – यवन / देशज – स्थानीय / अविच्छिन्न – निरंतर।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. स्वतंत्रता आंदोलन से अलग भारत का सर्वाधिक प्रसिद्ध आंदोलन है ?

   (क) मुस्लिम आंदोलन (ख) खिलाफत आंदोलन

   (ग) भक्ति आंदोलन (घ) अंग्रेजी आंदोलन ( )

2. तुलसी के आराध्य देव कौन थे ?

   (क) श्री राम (ख) महादेव

   (ग) श्रीकृष्ण (घ) विष्णु ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. डॉ० रामविलास शर्मा के अनुसार भारत का श्रेश्ठ भक्त कवि कौन है ?
2. भारतीयों को भावात्मक और राष्ट्रीय एकता में बाँधने वाला प्रमुख आंदोलन कौन–सा था?
3. तुलसी साहित्य को कोई एक अन्य नाम दीजिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. भक्ति आंदोलन के प्रमुख कवियों के नाम लिखिए।
2. भक्ति आंदोलन से भारत की भावात्मक एकता कैसे मजबूत हुई ?
3. तुलसी की कोई चार रचनाओं के नाम लिखिए।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. भक्ति आंदोलन में तुलसी का योगदान विषयक विवेचना कीजिए।
2. भक्ति आंदोलन ने भारत में जातिवाद को छिन्न–भिन्न कर दिया, समझाइए।
3. भक्ति आंदोलन की वर्तमान प्रासंगिकता बताइए।
4. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

   (क) भक्ति आंदोलन ....अमृतवाणी से सींचते रहे।

   (ख) सम्भवतः जाति प्रथा ....साहित्य में नहीं है।

   (ग) भक्ति आंदोलन अखिल ....मोक्ष–लाभ करते हैं।

   (घ) तुलसी का काव्य ....अलग मानते हैं।

•••

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

21. संस्कारों और शास्त्रों की लड़ाई

हरिशंकर परसाई

लेखक परिचय –

हरिशंकर परसाई का जन्म 22 अगस्त, 1924 को जमानी, होशंगाबाद, मध्य प्रदेश में हुआ। 18 वर्ष की अवस्था में जंगल विभाग में नौकरी की। खण्डवा में 6 महीने तक अध्यापक रहे। 1941 से 1943 के मध्य शिक्षण कार्य का अध्ययन कर 1943 में वहीं मॉडल हाई स्कूल में अध्यापक हो गए। 1952 में यह सरकारी नौकरी छोड़ दी। इसके बाद चार साल तक प्राइवेट स्कूलों में नौकरी की। नागपुर विश्वविद्यालय से हिन्दी विषय में एम.ए. किया। फिर नौकरी छोड़कर स्वतंत्र लेखन की शुरुआत 1957 से की। जबलपुर से 'वसुधा' नाम की साहित्यिक मासिक पत्रिका निकाली। कहानियाँ, उपन्यास, निबन्ध एवं अन्य बहुत-सी विधाओं में लेखन के बावजूद भी आप मूलतः व्यंग्यकार के रूप में विख्यात रहे। 10 अगस्त, 1995 को जबलपुर, मध्यप्रदेश में इनका निधन हो गया।

हरिशंकर परसाई हिन्दी के पहले ऐसे रचनाकार थे, जिन्होंने व्यंग्य को विधा का दर्जा दिलवाया और उसे हल्के-फुल्के मनोरंजन की परम्परागत परिधि से निकाल कर समाज के व्यापक प्रश्नों से जोड़ा। हरिशंकर परसाई की पहली रचना 'स्वर्ग से नरक जहाँ तक' मानी जाती है, जो कि मई 1948 में 'प्रहरी' में प्रकाशित हुई। इसमें इन्होंने धार्मिक पाखण्ड और अंधविश्वास पर कड़ा प्रहार किया। इन्होंने सैंकड़ों रचनाओं का लेखन किया जो कि विविध संग्रहों में संकलित है। 'तब की बात और थी', 'भूत के पाँव पीछे', 'बेईमानी की परत', 'पगडण्डियों का जमाना', 'शिकायत मुझे भी है', 'सदाचार का ताबीज', ' और अंत में', 'प्रेमचन्द के फटे जूते', 'माटी कहे कुम्हार से' एवं 'काग भगोड़ा' इनके व्यंग्य निबंध हैं। इन्होंने कहानियाँ भी लिखीं। इनके कहानियों के प्रमुख संकलन हैं – 'हँसते हैं रोते हैं', 'जैसे उनके दिन फिरे', 'भोलाराम का जीव' व 'दो नाक वाले लोग' आदि। **उपन्यास** – 'रानी नागफनी की कहानी', 'तट की खोज', ज्वाला और जल' आदि। **व्यंग्य संग्रह** – 'वैष्णव की फिसलन', 'ठिठुरता हुआ गणतन्त्र', एवं 'विकलांग श्रद्धा का दौर। **संस्मरण** – 'तिरछी रेखाएँ', 'मरना कोई हार नहीं होती', 'सीधे–सादे और जटिल मुक्तिबोध'। **बाल कहानी** – चूहा और मैं। **लघु कथाएँ** – 'चंदे का डर', 'अपना–पराया', 'दानी', 'रसोई घर और पाखाना', 'सुधार', 'समझौता', 'यस सर', 'अश्लील' आदि।

परसाईजी ने पाखण्ड, बेईमानी, भ्रष्टाचार आदि पर व्यंग्यों की गहरी चोट की है। जहाँ तक भाषा का सवाल है, इनकी भाषा में व्यंग्य की प्रधानता है। भाषा सामान्य होते हुए भी विशेष क्षमता रखती है। एक-एक शब्द तीखापन लिए होता है। हिंदी के अलावा उर्दू एवं अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग भी खुलकर किया है। इनकी रचनाओं में भाषा, भाव और भंगिमा के अनुरूप स्वरूप बदलती है। भाषा शैली में भी सहज परिवर्तन होता है और वह अपने उद्देश्यों की पूर्ति करने में सफल रहती है। आपको 'विकलांग श्रद्धा का दौर' कृति हेतु साहित्य अकादमी पुरस्कार भी प्रदान किया गया।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ-परिचय –

प्रस्तुत पाठ 'संस्कारों और शास्त्रों की लड़ाई' एक व्यंग्यात्मक निबन्ध है। यह परसाई के निबन्ध संग्रह 'शिकायत मुझे भी है' से लिया गया है। इस निबन्ध के माध्यम से व्यंग्यकार विचारों और आचरण में विरोध का उद्‌घाटन सशक्त तरीके से करता है। इस निबन्ध में घटनाओं के कई ऐसे उदाहरण प्रस्तुत करते हैं जिनमें थोड़ी-सी विपरीत परिस्थितियों के दबाव में सिद्धांतवादियों के सिद्धान्त टूट जाते हैं। आचरण और विचार के विरोध, व्यवहार में दोगलेपन को प्रस्तुत करना ही यहाँ व्यंग्यकार परसाई जी का प्रमुख उद्देश्य है।

मूल पाठ –

मेरे एक दोस्त हैं। वैज्ञानिक दृष्टि वाले आधुनिक बुद्धिवादी। परिवार से नाता तोड़कर बीसेक सालों से राजनैतिक कार्यों में लगे हैं। उनका कोई है, मुझे पता नहीं था। पर उनका भी कोई था। पिछले हफ्ते प्रयाग की गाड़ी में मुँडे सिर मिल गए।

पूछा, कहाँ जा रहे हो ?

बोले – प्रयाग।

लोग चोरी करने जाते हैं, तब इस शहर को इलाहाबाद कहते हैं, पिंडदान करने जाते हैं, तब प्रयाग कहते हैं।

पूछा – मुण्डन किसलिए ?

बोले – फादर की मृत्यु हो गई।

मैंने कहा – मुझे पहली बार मालूम हुआ कि आप भी फादर रखते थे। यों कोई बुरी बात नहीं जिनकी हैसियत है, वे एक से ज्यादा भी बाप रखते हैं– एक घर में, एक दफ्तर में, एक दो बाजार में, एक-एक हर राजनीतिक दल में। इधर एक आदमी है जिसके परसों तक 35 बाप थे। कल संविद सरकार टूट रही है तो 15 रह गए। आज वह सरकार थम गई तो 38 बाप हो गए हैं।

मुझे उनके पिता की मृत्यु का कतई दुःख नहीं था। उन्हें मैं जानता नहीं था। फिर वे 80 के थे और उनके मरने से कोई अनाथ नहीं हुआ था। दोस्त को भी दुःख नहीं था, कुछ पछतावा जरूर था।

मुझे उसकी चिन्ता थी, जिसे उन्होंने बीस साल से सच्चा पिता मान रखा था– याने मार्क्सवाद को। उन्होंने खुद अपने हाथों मार्क्सवाद का मुण्डन कर दिया था।

उनके हाथ में एक छोटी-सी थैली थी। मैंने पूछा– इसमें क्या है?

बोले– उनकी राख है। तुम्हें इतना भी नहीं मालूम?

मैंने कहा– मैं समझा, इसमें द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद है, जिसका संगम में विसर्जन होगा।

पहले वे चिढ़े। फिर कहने लगे– यार, यह बड़ा विकट संघर्ष है। एक तो संस्कार और फिर परिवार की भावना।

इस संघर्ष से मैं अनजान नहीं। चाचा की मृत्यु के बाद मैंने श्राद्ध नहीं करने का ऐलान कर दिया। मेरी जो फजीहत हुई, मैं ही जानता हूँ। उनके करने वाले और भी थे। चाचा मेरे भरोसे तो परलोक गए नहीं थे। मुझ जैसे के भरोसे कोई परलोक क्या, यह लोक भी नहीं बनाएगा।

मेरे मन में एक ही सवाल था– अगर किसी सामाजिक क्रान्ति में बौद्धिक विश्वास के साथ कोई लगा हो और तभी चाची कह दे कि बेटा, तुम्हारे चाचा की आत्मा को दुःख होगा, परलोक में उनकी दुर्गति

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हो जाएगी तब क्रांतिकारी क्या करेगा? परिवार की भावना की रक्षा भी तो करनी पड़ती है। तब क्या वह यह कहेगा कि चाची, अगर तुम्हारी यह भावना है तो मैं क्रान्ति छोड़ देता हूँ।

मेरे एक दोस्त हैं। मुझसे ज्यादा ज्यादा वैज्ञानिक दृष्टि सम्पन्न, विचार और कर्म दोनों से क्रान्तिकारी। मैं ही उनसे ज्ञान और प्रेरणा लेता रहा हूँ। एक दिन मैंने उन्हें धोती पहने, पालथी मारे सत्यनारायण की कथा पर बैठे रंगे हाथों पकड़ लिया।

मुझे लगा जैसे एंबुलेंस की गाड़ी ने ही मुझे कुचल दिया हो।

मैंने दूसरे दिन उनसे पूछा– झूठ नारायण यह तुम्हारी क्या हरकत है? उसने कहा– यार, 'मदर इन ला' (सास) ने बहुत जोर डाला था।

मेरा खयाल था 'मदर इन ला' सास से अलग किस्म की होती होगी। नहीं, सिर्फ तजुर्बे का फर्क है।

यह जो 'मदर इन ला' कहलाती है, क्रांति की दुश्मन होती है। क्रांतिकारी का पहला और सबसे बड़ा संघर्ष 'मदर इन ला' से निपटना है। बात यह है कि वह बीवी दे देती है। बीबी कर्त्तव्यों को आगे बढ़ाते हुए बच्चे दे देती है। तब 'मदर इन ला' आकर कहती है – लाला, अपना नहीं तो बच्चों का तो खयाल करो।

लाला की क्रांतिकारिता भ्रांतिकारिता में बदल जाती है।

'मदर इन ला' के शिकार 20–25 क्रांतिदर्शियों की हड्डियाँ तो इधर मेरे पास ही रखी हुई हैं, और लोगों के पास भी होंगी।

संस्कार और शास्त्र की लड़ाई बड़ी दिलचस्प होती है। संस्कार और अर्थशास्त्र की एक लड़ाई मैंने साफ देखी।

एक शहर में दो साल पहले किसी सांस्कृतिक आयोजन में गया था। एक साहित्यिक रुचि के सज्जन बहुत पीछे पड़े कि मेरे घर चाय पीने चलिए। हर बार आग्रह के साथ वे यह जरूर जोड़ते – सरिता ने भी कहा है। समझा सरिता जी इनकी पत्नी होंगी। साहित्य पढ़ती होंगी। कुछ कविता वगैरह भी लिखती होंगी। चाय पीने पहुँचा, तो बैठक से उन्होंने पर्दे की तरफ मुँह करके मेरे आने की घोषणा कर दी। दुविधाग्रस्त अर्द्ध आधुनिक परिवारों में इसके बाद क्या होता है, इसका मुझे बहुत अनुभव है। पत्नी आती है। नमस्ते के बाद बने-बनाए वाक्य बोलती है– हम आपकी कहानियाँ पढ़ते रहे हैं। इतनी हँसी आती है, इतनी हँसी आती है कि बस कुछ मत पूछिए– इसी वक्त उसे याद आता है कि 'दाम्पत्य संहिता का नियम 73 कहता है– पत्नी अपना स्वतन्त्र मत व्यक्त न करे। व्यक्त करना जरूरी हो, तो उसमें पति को शामिल करे।' वह पति को शामिल कर लेती है– क्यों वह कौनसी कहानी पढ़ी थी हम लोगों ने पिछले हफ्ते?

अगर बच्चा भी हुआ, तो 'अंकलजी' को उससे नमस्ते कराया जाता है। कहा जाता है– अंकल तुम्हें बहुत मजेदार कहानी सुनाएँगे। कभी मुझसे वहीं बच्चे को कहानी सुना देने का आग्रह भी किया जाता है। नुस्खे मेरे पास सब तरह के रहते हैं। प्रौढ़ों के लिए डायबटीज का नुस्खा भी रखता हूँ और बच्चों के लिए कुकुर-खाँसी का भी। मैं बच्चे को राक्षस की कहानी फौरन सुना देता हूँ। आग्रह हो तो उनके ससुर को भी कृष्ण सुदामा की कहानी सुना दूँ।

बैठक में मैंने सोचा कि अब सरिता जी बाहर आएँगी और वही यांत्रिक चर्चा चलेगी। बड़ी देर हो गई। सरिता जी तो क्या, नाली जी भी नहीं निकलीं। सोचा चाय लेकर आएँगी। पर थोड़ी देर बाद साँकल बजी। पति महोदय भीतर गए और चाय की ट्रे लेकर आ गए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

भीतर से एक बिल्ली निकली। उस घर में बिल्ली एकमात्र मादा थी, जो पर्दा नहीं करती थी।

साँकल धातु युग से चली आती घरेलू 'कॉलबेल' है। सरिताजी कुछ संस्कार अपने घर से लेकर आई होंगी, कुछ यहाँ मिले होंगे। वह पाँव दरवाजे की तरफ बढ़ाती है, तो हाथ साँकल पर चला जाता है।

मगर जब यह स्थिति है, तो इस आदमी ने बार-बार क्यों कहा था– सरिता ने भी आने को कहा है। इस दृश्य में सरिता का कुल इतना 'रोल' है कि वह नेपथ्य में साँकल बजाती है। अगर इस आदमी को सरिता को भी मंच पर लाना है तो साँकल को निकाल फेंकना चाहिए। मगर तब वह थाली बजाने लगेगी।

दो साल बाद फिर उस शहर में गया। वे फिर मुझे चाय के लिए ले गए। इस बार उन्होंने नहीं कहा कि सरिता ने भी आग्रह किया है। उसने नेपथ्य वाला हिस्सा नाटक से काट दिया होगा। मैं बैठक में पहुँचा। उसने पर्दे की तरफ मुँह करके मेरे आने की घोषणा नहीं की। पर जरा देर बाद ही सरिताजी ट्रे लेकर बाहर आईं। एकाध औपचारिक बात की, फिर घड़ी देखी। बोलीं– आप लोग चाय पिएँ। मेरा स्कूल का वक्त हो गया। वे चप्पल फटकारती सीढ़ी से उतर गईं।

श्रीयुत सरिता पति बोले– स्कूल में नौकरी कर ली है। आजकल एक की कमाई से पूरा नहीं पड़ता है।

समझ गया, अर्थशास्त्र ने संस्कार को धोबी-पछाड़ दे दी।

हमारे जमाने में नारी को जो भी मुक्ति मिली है, क्यों मिली है? आंदोलन से? आधुनिक दृष्टि से? उसके व्यक्तित्व की स्वीकृति से? नहीं उसकी मुक्ति का कारण महँगाई है। नारी-मुक्ति के इतिहास में यह वाक्य अमर रहेगा – "एक की कमाई से पूरा नहीं पड़ता।"

अर्थशास्त्र संस्कारों के सीने पर चढ़कर गला दबा रहा है। इधर एक लड़के ने लड़की को उसी की इच्छा से भगाकर 'सरकारी शादी' कर ली। लड़का योग्य, सुन्दर और अच्छी नौकरी वाला। पहले लड़की की माँ के संस्कारों ने जोर मारा और उसने हाय-तोबा मचाया। अर्थशास्त्र से यह बरदाश्त नहीं हुआ। उसने संस्कारों को एक पटकनी दी। माँ ने सोचा, यह जो 15 हजार दहेज के लिए रखे थे, साफ बचे। फिर 15 हजार में भी इतना अच्छा लड़का नहीं मिलता। उन्होंने कार्ड बाँट कर दावत दे दी।

शब्दार्थ –

बुद्धिवादी – बुद्धिवाद को मानने वाला/ पिंडदान – मरने के पश्चात् परिवार के लोगों द्वारा पिंड देना, मरने के बाद का एक कर्मकाण्ड/ संविद सरकार – वह सरकार जिसमें अनेक दलों के विधायक शामिल हों। /द्वन्द्वात्मक – दो के मध्य अनिश्चय होने का भाव/ श्राद्ध – श्रद्धायुक्त, शास्त्र विहित पितृ–कर्म / फजीहत– अपमान, बेइज्जती तजुर्बे – अनुभव/ संहिता – संयोग, संग्रह, संकलन, वेदों का मंत्र भाग / प्रौढ़ों – परिपक्वों, 20 से 50 के बीच उम्र की अवस्था के लोगों/ कॉलबेल – दरवाजे पर लगी घण्टी, बुलाने के लिए घण्टी/ श्रीयुत – लक्ष्मीवान्, पुरुषों के नाम के आगे लगाया जाने वाला विशेषण/ बरदाश्त – सहन, सहन करना, सहना / दावत – भोजन, भोजन का निमंत्रण/ मुँडे सिर – जिस सिर के बाल पूरी तरह कटे हुए हों/ हैसियत – योग्यता, सामर्थ्य, मान–प्रतिष्ठा/ अनाथ – निराश्रय, दीन, बिना माँ–बाप का बच्चा/ विसर्जन – प्रतिमा का धारा में बहाया जाना, त्याग, फेंकना/ ऐलान – सार्वजनिक घोषणा, मुनादी/ मदर इन ला – सास/ दाम्पत्य – पति–पत्नी सम्बन्धी/ नुस्खे – प्रयोग की विधि, तरीका/ डायबटीज – मधुमेह/ नेपथ्य – पर्दे के पीछे का स्थान/ हाय–तोबा – कष्ट में मचाया गया शोर/ पटकनी – पछाड़, कड़ा आघात।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. इस निबन्ध के अनुसार क्रान्तिकारियों की क्रान्ति का सबसे बड़ी दुश्मन कौन है?
   (क) माँ (ख) फादर इन ला
   (ग) पिता (घ) मदर इन ला ( )
2. निबन्ध में लेखक नारी मुक्ति का कारण किसको मानता है–
   (क) संस्कारों को (ख) महँगाई को
   (ग) सरकार को (घ) विज्ञान को ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. पिण्डदान करने जाते समय इलाहाबाद को किस नाम से पुकारते हैं ?
2. 'मदर इन ला' और सास में क्या फर्क है ?
3. लेखक के मित्र जो कि उन्हें घर ले जाते हैं, उनके यहाँ बिना पर्दे के एकमात्र मादा कौन थी ?
4. संस्कारों के सीने पर चढ़कर गला कौन दबा रहा है ?
5. 'संस्कारों और शास्त्रों की लड़ाई' नामक निबन्ध परसाई जी के किस निबन्ध संग्रह से लिया गया है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. लेखक को दोस्त के पिता की मृत्यु की अपेक्षा किसकी चिन्ता अधिक थी ?
2. लेखक के अनुसार प्रयाग और इलाहाबाद में क्या अन्तर है?
3. लेखक 'मदर इन ला' को क्रान्ति का दुश्मन क्यों मानता है?
4. लेखक के पास सुनाने का आग्रह करने पर किस–किस तरह के नुस्खे हैं?
5.. लड़की की माता की किस तरह की सोच से पता लगा कि अर्थशास्त्र ने संस्कारों को पटकनी दे दी?

निबंधात्मक प्रश्न –

1. 'संस्कार और शास्त्रों की लड़ाई' निबन्ध के आधार पर परसाईजी की लेखन शैली की विशेषताएँ बताइए।
2. पाठ का सार लिखते हुए इसके मूल उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।
3. **पाठ में आए निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए** –
   (क) यों कोई बुरी बात नहीं .... उसके 38 बाप हो गए हैं।
   (ख) अर्थशास्त्र संस्कारों के सीने .... तो हम एक भोज दे दें।

•••

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

22. भारत भी महाशक्ति बन सकता है

• श्रीधर पराड़कर

लेखक परिचय –

मध्यप्रदेश के ग्वालियर निवासी श्रीधर पराड़कर का जन्म 15 मार्च, 1954 को हुआ। इनके पिताजी का नाम गोविन्द भाई पराड़कर और माता का नाम श्रीमती इंद्रा बाई पराड़कर है। वाणिज्य निष्णात की शिक्षा प्राप्त कर श्रीधर पराड़कर ने एकाउंटेंट जनरल कार्यालय में ऑडिटर के रूप में शासकीय सेवा प्रारंभ की, किंतु राष्ट्रप्रेम के वशीभूत होकर श्रीधर ने 1986 में शासकीय सेवानिवृत्ति लेकर अपना जीवन राष्ट्रोत्थान को समर्पित कर दिया।

साहित्य के माध्यम से भारतीय संस्कृति और राश्ट्र की अलख जगा रहे श्रीधर ने इंग्लैण्ड, श्रीलंका आदि देशों की यात्रा के साथ-साथ भारत में भी साहित्य संवर्धन यात्राएँ कीं, ताकि लेखक अनुभूत साहित्य का सृजन कर सके।

श्रीधर ने '1857 के प्रतिसाद', 'अद्भुत संत स्वामी रामतीर्थ', 'अप्रतिम क्रांतिद्रष्टा भगत सिंह', 'राष्ट्रसंत तुकड़ो जी', 'राष्ट्रनिश्ठ खण्डोबल्लाल', 'सिद्धयोगी उत्तम स्वामी', तथा अन्य महापुरुशों के जीवन चरित्र पर पुस्तकें लिखीं। श्रीधर ने दत्तोपंत ठेगड़े की पुस्तक 'सामाजिक क्रांति की यात्रा और डॉ० अम्बेडकर का मराठी से हिंदी में अनुवाद किया।

पाठ-परिचय –

'भारत भी महाशक्ति बन सकता है' नामक निबंध में लेखक ने भारतीयों में राष्ट्र के प्रति निराशा और भ्रम की स्थिति को दूर कर भारतीय जन-मानस में आशा और उत्साह के साथ राष्ट्रीयता का ज्वार पैदा करने का प्रयास किया है।

देशवासियों का भारत के बारे में अक्सर यह कहना कि ''अब कुछ नहीं हो सकता,..........इस देश का भगवान ही मालिक है'' लेखक को झकझोर देता है। 'सोने की चिड़िया' भारत का इतिहास हमारा गौरवमयी अतीत है जिसे भुला कर हमने अपने आत्मसम्मान और स्वाभिमान को विस्मृत कर दिया। आज भी विदेशों में सर्वाधिक माँग भारतीयों की ही है तथा भारतीय उद्योगपति विदेशों में भारत का डंका बजा रहे हैं। हमने युद्ध भी जीते हैं और वैश्विक प्रतिबंधों का हँस कर सामना भी किया है। भारत को पुनः महाशक्ति और विश्व गुरु बनाने के लिए विदेशों की ओर ताकना बंद करके हमें भारतीयों में आत्मविश्वास और आत्मगौरव का भाव पैदा करके उनकी सोच में सुधार करना होगा और सही नेतृत्व चुनना होगा।

•••

मूल पाठ –

देश की परिस्थिति के बारे में सामान्य आदमी से पूछे जाने पर केवल एक ही उत्तर मिलता है कि 'अब कुछ नहीं हो सकता, सब गड़बड़ हो रहा है, इस देश का भगवान ही मालिक है।' उसकी चिंता स्वाभाविक भी है। ऐसा कहते समय उसके सामने देश में चहुँओर फैला भ्रश्टाचार होता है; जिनके जिम्मे

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

व्यवस्था संभालने का दायित्व है, अव्यवस्था बढ़ाने में उन्हीं की सक्रियता होती है। जिन पर देश के नीति-निर्धारण का दायित्व है, उनमें नैतिकता का अभाव दिखाई देता है। सभ्य कहे जाने वाले उच्च वर्ग में भी स्वार्थ साधना का प्रयत्न देखा जाता है। इन्हीं सब कारणों से चिंतित होकर हताशा एवं निराशा भरे उद्गार व्यक्ति प्रकट करता है। ऊपरी तौर पर देखने से उसकी चिंता ठीक प्रतीत होती है।

क्या यह वास्ताविकता है ? क्या उसके सोच की दिशा सही है ?गंभीरता से विचार करने पर ध्यान में आएगा कि सामान्य आदमी परिस्थितियों के केवल नकारात्मक पक्ष को लेकर अपने विचार प्रकट करता है। भविष्य की बात करते समय जिन बातों पर विचार किया जाना चाहिए, उस ओर उसका ध्यान ही नहीं होता। क्या-क्या हो चुका है, क्या–क्या हो रहा है, क्या-क्या किया जा सकता है, इसका न तो वह विचार करता है और न ही उसे वास्तविकता का भान ही होता है ?

यदि हम अपने इतिहास पर दृश्टि डालें तो पता चलता है कि हमारा देश वही 'हिंदुस्तान' है जो पहले 'सोने की चिड़िया' कहा जाता था। हमारे सारे प्राचीन ग्रंथों में सुख-शांति, अकूत वैभव व ऐश्वर्य का वर्णन मिलता है। यह हमारा वैभव ही तो था जो विदेशी आक्रमणकारियों को हिंदुस्तान की ओर आकर्षित करता था। पहले-पहल आए सारे आक्रमणकारियों का एकमात्र उद्देश्य हिंदुस्तान को लूटना ही था। हर बार प्रत्येक आक्रमणकारी अपने साथ बेहिसाब सोना-चाँदी, हीरे-मोती लूट कर ले गया। यह सत्य है कि मुहम्मद गजनवी सोमनाथ मंदिर को लूट कर उसकी बेहिसाब संपदा को ले गया। भारत की चमक से चकित होकर अंग्रेज भारत में आए यहाँ की अपार संपदा को इंग्लैंड ले गए। विश्वास ही नहीं होता आज बात-बात में विदेशों की ओर देखने वाला भारत, कभी विदेशियों के आकर्षण का केंद्र हुआ करता था।

विश्व के किसी भी देश के पास ऐसी भूमि और संसाधन नहीं हैं, जो उसे सब प्रकार से संपन्न बना सके। प्रत्येक देश को किसी न किसी आवश्यकता के लिए दूसरे पर निर्भर रहना पड़ता है। परिणामस्वरूप उसे दूसरे से दबना पड़ता है और अनिवार्य रूप से अवांछित समझौते करने पड़ते हैं। हमारी तो ऐसी कोई मजबूरी नहीं है। पिछले दिनों हम इसका प्रत्यक्ष अनुभव कर चुके हैं। परमाणु परीक्षण करने के पश्चात् विश्व ने हम पर कई प्रकार के प्रतिबंध लगाए थे। परिणाम क्या हुआ ? क्या हमारे देश का कोई काम रुका ? क्या देशवासियों को किसी विशेष कष्ट का सामना करना पड़ा ?कभी नहीं। इराक का क्या हुआ ?प्रतिबंध लगने के बाद उसे दाने-दाने के लिए तरसना पड़ा था।

हमारी जिस संपन्नता का वर्णन इतिहास में मिलता है, वह कहीं से लूट कर तो नहीं लाए थे। सब कुछ अपने ही देश में उत्पन्न किया था। वह भूमि, वे संसाधन आज भी हमारे पास हैं, जिनके बल पर हम फिर से उसी संपन्नता को अर्जित कर सकते हैं। केवल संसाधनों के उचित दोहन व अपनी आवश्यकता के अनुसार उपयोग करने की है। जैसे ही हम आवश्यक संतुलन बना लेंगे, हम अपना पुराना वैभव फिर से प्राप्त कर लेंगे।

आज विज्ञान का बोलबाला है। इसे विज्ञान का युग भी कहते हैं। विज्ञान के बारे में कहा जाता है कि यह पश्चिम जगत की देन है। सामान्य तौर पर देखने से दिखाई भी यही देता है कि आज के ज्ञात सारे के सारे आविष्कार पश्चिम से ही हुए हैं। परंतु यह एक मिथक है। योजनापूर्वक इस भ्रम का निर्माण किया गया है। जिस समय ये आविष्कार हो रहे थे, हमारा देश पराधीन था। अँगरेजों ने सोची-समझी साजिश के तहत हमारी प्राचीन शिक्षा पद्धति को तहस-नहस किया। जिस नई शिक्षा पद्धति को हम पर लादा गया,

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उसके द्वारा हमें वही पढ़ाया गया जो अँगरेज चाहते थे। उन्होंने विज्ञान के नाम पर मात्र 19 वीं शताब्दी में हुए आविष्कार ही पढ़ाए। इतिहास के नाम पर विकृत इतिहास पढ़ा कर भारतीय समाज के आत्मसम्मान को नश्ट करने का प्रयास किया तथा उसे आत्मविस्मृति की गहरी खाई में ढकेल दिया। हमें पढ़ाया गया कि यहाँ पहले कुछ था ही नहीं। उसे अंधकार युग का नाम दिया और बाद में किए सारे कार्यों को अपना बताया।

उन्हें जो करना था उन्होंने किया किंतु विडंबना यह है कि स्वतंत्रता के लगभग 60 वर्ष के बाद भी हम उसी राग को अलाप रहे हैं। उसी को प्रमाण मान कर चल रहे हैं। कभी अपने गौरवपूर्ण वास्तविक इतिहास को जानने का प्रयास नहीं किया। जीवन के सभी क्षेत्रों में भारत के मनीषियों ने अद्भुत आविष्कार किए थे। बात अंतरिक्ष विज्ञान की हो, रसायन विज्ञान की हो, भौतिक विज्ञान की हो, चिकित्सा विज्ञान की हो अथवा निर्माण विज्ञान की। आधुनिक भारतीय वैज्ञानिकों में सर जे.सी.बोस, सी.वी. रमन, डॉ. होमी जहाँगीर भाभा, ए.पी.जे. अब्दुल कलाम आदि की वैज्ञानिक उपलब्धियों को हम कैसे विस्मृत कर सकते हैं ? भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा न्यूनतम खर्च में अपना स्वदेशी उपग्रह मंगलग्रह पर भेजना आज भी संपूर्ण विश्व को आश्चर्यचकित कर रहा है। अमेरिका हमारी बौद्धिक क्षमता से भयभीत है। जिन लोगों ने हिंदुस्तान के गौरवपूर्ण अतीत को सामने लाने का प्रयास किया भी, उन्हें संकुचित मस्तिष्क का एवं प्रतिगामी बताकर उपेक्षित किया। आवश्यकता तो इस बात की है कि अपने ज्ञान-विज्ञान के उस भंडार को एक बार खंगालें। इससे हमारा अपना उद्धार तो होगा ही विश्व का कल्याण भी होगा।

सामान्यतः कहा जाता है कि हिंदुस्तान का आदमी कायर है, मूढ़ है, निकम्मा है; किंतु यह भी भ्रामक है। दूसरे विश्वयुद्ध की संभावित पराजय को टालने के लिए अँगरेजों को इसी देश के वीर पुत्रों की साहस-पराक्रम की आवश्यकता पड़ी थी। 1962 में हिमालय की दुर्गम परिस्थिति में बिना शस्त्रों के डट कर चीनियों का सामने करने वाले जवान इसी देश के थे। 1947, 1965 व 1971 में पाकिस्तानी फौजों को धूल चटाने वाले हिंदुस्तानी ही थे। नब्बे हजार की विशाल सेना को आत्मसमर्पण के लिए विवश करने वाली सेना हिंदुस्तान की ही थी। विश्व के इतिहास में ढूँढने पर ऐसा उदाहरण नहीं मिलेगा।

हिंदुस्तानी मूढ़ भी नहीं है। यदि ऐसा होता तो विश्व में भारतीय विद्वानों की मांग क्यों होती ? आज ऐसा कौन-सा विकसित देश है जहाँ महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ हिंदुस्तानी न संभाले हुए हों ? विश्व के सभी जाने-माने विश्वविद्यालयों में अध्यापन का कार्य करने वालों में हिंदुस्तानी अध्यापकों की संख्या कम नहीं है। विश्व की अधिकांश प्रयोगशालाओं में भारतीय वैज्ञानिक कार्य कर रहे हैं। कई देशों के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मंत्री, प्रशासनिक अधिकारी भारतीय अथवा भारतीय मूल के हैं। कई देशों की संसद में भारतीयों ने जनप्रतिनिधि बन कर वहाँ के समाज-जीवन में अपने महत्त्व को प्रतिपादित किया है। यह सब क्या मूढ़ कही जाने वाली जाति के लोग कर सकते हैं ? यदि भारतीय मूढ़ हैं तो देश के प्रमुख औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों के बाहर बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ डेरा क्यों लगाती हैं ?

तब लोग पूछ सकते हैं कि इतना सब कुछ होते हुए भी हमारी दुर्गति क्यों है ? पाठक के मन में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक भी है। उपर्युक्त वर्णन करने का मेरा उद्देश्य भी यही बताना है कि हमारी समस्या संसाधन की कमी, मूढ़ता, आलस्य, अकर्मण्यता नहीं है। हमारी मूल समस्या आत्मविश्वास की कमी व आत्मप्रत्यय के अभाव की है। हमारी समस्या गलत दिशा के चुनाव की है। हमने स्वतंत्रता के इन 60 वर्षों में कभी भी भारत को भारत बनाने का प्रयत्न नहीं किया। हमने अपनी प्राथमिकताएँ तय नहीं कीं। पहले हम

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

भारत को रूस बनाना चाहते थे, अब इसे अमेरिका बनाना चाह रहे हैं। विदेशों के विकास के प्रारूप वहाँ के लिए ठीक हो सकते हैं। वहाँ की परिस्थिति भिन्न है, वहाँ के समाज की गढ़न भिन्न है, उनकी आवश्यकताएँ भिन्न हैं। उन्होंने अपने देश की परिस्थितियों को ध्यान में रखकर अपने देश के विकास का प्रारूप तैयार किया है। हमें अपने देश की परिस्थिति, भौगोलिक स्थिति व समाज की मानसिकता तथा आवश्यकता के अनुरूप विकास का प्रारूप तैयार करने का प्रयत्न करना होगा। चीन का उदाहरण हमारे सामने है। अचार, पापड़, साबुन, मंजन जैसी वस्तुओं का उत्पादन बहुराष्ट्रीय कंपनियों को सौंप कर उसने अपने हाथ नहीं काट लिए। बहुराष्ट्रीय कंपनियों को खुली लूट करने की छूट उसने नहीं दी। आज अपने दम पर वह महाशक्ति बन बैठा है। पर हम चीन से कुछ सीखने की कोशिश नहीं करते। हमारे राजनेता व प्रशासनिक अधिकारियों की आँखों पर अंग्रेज परस्ती का चश्मा बाकी कुछ देखने ही नहीं देता।

हमारी एक कठिनाई यह भी है कि हमने सत्ता को सब कुछ समझ लिया है। हमारे लिए सत्ता सर्वोपरि हो चुकी है। योग्यता अब सत्ता की कसौटी नहीं रह गई। अच्छे व बुरे का अंतर हमने भुला दिया। नैतिकता को लगभग तिलांजलि दे कर सत्ता प्राप्ति ही मुख्य ध्येय हो गया। इसके लिए अन्य कोई नहीं हम स्वयं ही दोषी हैं। अतः कहना होगा कि एक समय भारत महाशक्ति था और अब भी महाशक्ति बनने की पूरी क्षमता, योग्यता व जरूरी संसाधनों से परिपूर्ण है। कमी केवल महाशक्ति बनने के लिए आवश्यक दृढ़ इच्छाशक्ति की है।

•••

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. सोने की चिड़िया किस देश को कहा जाता था ?
   (क)चीन (ख) जापान
   (ग) अमेरिका (द) भारत ( )
2. 'राष्ट्रनिष्ठ खण्डोबल्लाल' पुस्तक के लेखक हैं –
   (क) तुलसीदास (ख) श्रीधर पराड़कर
   (ग) अमृता प्रीतम (घ) नंदकिशोर पाण्डेय ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. भारत को सोने की चिड़िया क्यों कहा जाता था ?
2. परमाणु परीक्षण करने पर भारत पर लगाए गए वैश्विक प्रतिबंधों का भारत पर क्या प्रभाव पड़ा?
3. भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति को किसने तहस-नहस किया ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. भारत की प्राकृतिक संपदा का वर्णन कीजिए।
2. विश्व के लोग भारतीयों पर क्या-क्या आरोप लगाते हैं ?
3. भारत की दुर्गति होने का क्या कारण है ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

निबंधात्मक प्रश्न –

1. भारत अब भी महाशक्ति बन सकता है। समझाइए।
2. भारत को महाशक्ति बनने से रोकने में बाधक तत्त्वों का वर्णन कीजिए।
3. भारत के गौरवमयी अतीत का वर्णन कीजिए ।
4. आपकी दृष्टि में क्या भारत विश्वशक्ति बनने की ओर अग्रसर है, विचार प्रस्तुत कीजिए।
5. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

   (क) यदि हम अपने इतिहास पर.........................केंद्र हुआ करता था।

   (ख) हिंदुस्तानी मूढ़ भी नहीं..........बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ डेरा क्यों लगाती हैं ?

•••

Downloaded from https:// www.studiestoday.com